

वार्षिक प्रतिवेदन Annual Report

2019



भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र
राणी, गुवाहाटी-७८१ १३१, असम
ICAR-NATIONAL RESEARCH CENTRE ON PIG
Rani, Guwahati-781 131, Assam





वार्षिक प्रतिवेदन ANNUAL REPORT 2019



भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र
राणी, गुवाहाटी-781 131, असम

ICAR-NATIONAL RESEARCH CENTRE ON PIG
Rani, Guwahati-781 131, Assam

प्रशस्ति

भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, वार्षिक रिपोर्ट 2019

संकलित और संपादित

मुख्य संपादक	: डॉ. स्वराज राजखोवा, निदेशक (कार्यकारी)
संपादक	: डॉ. आर. थॉमस, वरिष्ठ वैज्ञानिक
सहायक संपादक	: डॉ. सुनील कुमार, वैज्ञानिक डॉ. मिशा माधवन एम., वैज्ञानिक
संपादकीय बोर्ड	: डॉ. बीसी दास, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. शान्तनु बनिक, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. केशव बर्मन, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. मोहन एन.एच., प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रफीकुल इस्लाम, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी. जे. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सीमा आर. पेगू, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सौविक पॉल, वैज्ञानिक डॉ. जुवार डोले, वैज्ञानिक डॉ. राजीव देब, वैज्ञानिक डॉ. कल्याण डे, वैज्ञानिक डॉ. सतीश कुमार, वैज्ञानिक डॉ. जया, वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार यादव, वैज्ञानिक डॉ. हितू चौधरी, पीसी (आई / सी), केवीके, गोलपारा श्री पी.के. नायक, एएफ और एओ श्री उत्तम प्रकाश, सहायक प्रशासनिक अधिकारी

प्रकाशक

डॉ. स्वराज राजखोवा

निदेशक (ए)

भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र

कवर पेज थीम : ग्राफिक में संस्थान के अनुसंधान प्रयास को दर्शाया गया है जैसे वैज्ञानिक शूकर पालन, स्वच्छ पोर्क का उत्पादन और मूल्यवर्धन। स्थायी आजीविका और पोषण प्रदान करने में शूकर पालन का महत्व भी दर्शाया गया है।

कवर पेज डिज़ाइन : जिष्णु जयकुमार

भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र

रानी, गुवाहाटी- 781131, असम, भारत

टेलीफोन नं : 0361-2847195

फैक्स : + 0361-2847195

ईमेल : nrconpig@rediffmail.com

वेबसाइट ://www.nrcp.in

द्वारा मुद्रित

रूमी जुमी एंटरप्राइज़

छ:माइल, गुवाहाटी -22

© भा.कृ. अनु. प. राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, 2019

इस पुस्तक का कोई भी हिस्सा बिना अनुमति के किसी भी रूप में प्रजनन योग्य नहीं है

विषय सूची

विषय	पृष्ठा संख्या
प्रस्तावना	v-vi
कार्यकारी सारांश	vii-xii
मुख्य उपलब्धियाँ	xiii-xiv
परिचय	1-2
प्राथमिकता सेटिंग और प्रबंधन	3-7
संगठनात्मक संरचना	8
भौतिक प्रगति	9-12
अनुसंधान परियोजनाएँ	13-28
राष्ट्रीय कृषि नवाचार निधि	29-37
जनजातीय उप-योजना के तहत संस्थान ग्राम संपर्क कार्यक्रम	39-48
कृषि विज्ञान केंद्र गतिविधियाँ	49-54
एआईसीआरपी और मेगा सीड परियोजना	55-60
संकलन	61
बैठकें और अन्य गतिविधियाँ	63-70
समारोह	71-78
राजभाषा प्रकोष्ठ	79-82
प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित	83-88
पुरस्कार और मान्यताएँ	89-92
मानव संसाधन विकास	93-104
कार्मिक	105-108
प्रकाशन	109-114



प्रस्तावना

शूकरों का मानव जाति के लिए भोजन और वसा प्रदान करने का एक लंबा इतिहास है। इसके अलावा, शूकर एक तेजी से बढ़ती प्रजातियों में शूकर, छोटे और शुरुआती किसानों के लिए आकर्षक हो सकता है। पिछले 15 वर्षों के दौरान रुझान स्पष्ट रूप से इंगित करता है भारतीय शूकर पालन लगातार पिछड़ी प्रणाली से संगठित वाणिज्यिक उत्पादन प्रणाली करने के लिए आगे बढ़ रहा है। शूकर उत्पादन एक महत्वपूर्ण है खासकर ग्रामीण लोगों की आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए। उत्तर पूर्वी भारत में लगभग 80% आदिवासी आबादी है एक छोटे पैमाने पर शूकरों को बढ़ाने में शामिल है जो ज्यादातर अर्ध-गहन प्रणाली के तहत पाले जाते हैं। शूकर प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को रोजगार दे सकते हैं। वैज्ञानिक शूकर पालन केवल गुणवत्ता वाले पशु प्रोटीन में योगदान कर सकती है साथ ही त्वरित मौद्रिक रिटर्न के लिए भी बड़ी संभावनाएं हैं। इस प्रकार उनके आर्थिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वैज्ञानिक शूकर पालन कम समय में किसानों की आय को बढ़ाने में सहायक है। उद्यमिता बिंदु में शूकर पालन को देखते हुए छोटे निवेश की आवश्यकता होती है और यह त्वरित और उच्च रिटर्न भी देता है। भारतीय क्षेत्र में विकास की धीमी गति से संबंधित प्रमुख मुद्दे हैं गुणवत्ता वाले प्रजनन जर्मप्लाज्म की उपलब्धता, देशी नस्लों की कम विकास दर, बीमारियों की वृद्धि, बुनियादी ढांचे की कमी, संरचित विपणन चैनल आदि की कमी। इस प्रकार, शूकर पालन विकास कार्यक्रमों के साथ-साथ हितधारकों के साथ पोषण और आजीविका सुनिश्चित करने के लिए समन्वित कार्य करना बहुत आवश्यक है। पिछले 17 वर्षों के दौरान, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र लगातार शूकर उत्पादन, स्वास्थ्य और उत्पाद प्रसंस्करण में उत्कृष्टता गुणवत्ता जर्मप्लाज्म के लिए प्रौद्योगिकी बैकस्टॉपिंग नवीन अनुसंधान, पोर्क उत्पादन व रोजगार सृजन संस्थान देश के विभिन्न भागों में 15 अखिल भारतीय शूकर समन्वित अनुसंधान परियोजना और सात मेगासीड केंद्र का समन्वय कर रहा। संस्थान का कृषि विज्ञान केंद्र पशु विज्ञान, फसल विज्ञान, कृषि मशीनीकरण, मत्स्य पालन गृह विज्ञान, बागवानी, पौधों की सुरक्षा, और प्रशिक्षण के माध्यम सक्रिय रूप से लगा हुआ है। मानव संसाधन विकास के मोर्चे पर, संस्थान के वैज्ञानिकों को विभिन्न प्लेटफार्मों में सम्मानित किया गया।

मैं निरंतर समर्थन के लिए अपनी ईमानदारी से डॉ. त्रिलोचन महापात्र, माननीय सचिव, डेयर व महा निदेशक आईसीएआर, डॉ. बी.एन. त्रिपाठी, उप महानिदेशक (पशु विज्ञान), डॉ. जे.के. जेना, पूर्व उपमहानिदेशक (मत्स्य और पशु विज्ञान) और डॉ. के. एम. बुजारबुरुआ, कुलपति, असम कृषि विश्वविद्यालय का धन्यवाद और आभार व्यक्त करना चाहता हूं। मैं सहायक महानिदेशक डॉ. वी. के. सक्सेना (पशु उत्पादन और प्रजनन), डॉ. आर.एस. गांधी, पूर्व सहायक महानिदेशक (पशु) उत्पादन और प्रजनन), डॉ. अशोक कुमार, सहायक महानिदेशक (पशु स्वास्थ्य), डॉ. वी. भसीन, प्रधान वैज्ञानिक (एजीएंडबी), डॉ. राजन गुप्ता, वैज्ञानिक (एएन) और पशु विज्ञान प्रभाग के अन्य कर्मचारी, आईसीएआर, कृषि भवन, नई दिल्ली को उनके सतत समर्थन के लिए हेड क्वार्टर में गतिविधियाँ का शुक्रगुजार हूं। संस्थान के वैज्ञानिकों और अन्य कर्मचारियों के अथक प्रयास को रिकॉर्ड में नहीं रखना अनुचित होगा। इस रिपोर्ट में उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण को प्रतिबिंबित किया गया है। मैं बधाई देता हूं संपादकीय बोर्ड की पूरी टीम को अनुसूची के अनुसार इस रिपोर्ट को लाने के लिए। संस्थान के प्रमुख उपलब्धियों को प्रस्तुत करना मेरा सौभाग्य है। वैज्ञानिक शूकर उत्पादन और पोर्क प्रसंस्करण के क्षेत्र में रिपोर्ट एक संदर्भ के रूप में काम करेगी।

स्वराज

डॉ स्वराज राजखोवा
निदेशक (कार्यकारी)

कार्यकारी सारांश

पशु आनुवंशिकी और प्रजनन

रानी क्रॉस के जेनेरेशन-वाइज जेनेटिक इवैल्यूएशन का अध्ययन किया गया और पाया गया कि रानी क्रॉसब्रेड की नस्ल के पात्रों को कई पीढ़ियों के लगातार क्रॉसब्रेडिंग के लिए स्थिर किया गया। इसके अलावा, असम के डूम शूकर का संरक्षण रखरखाव के अधीन है। शूकर वाई गुणसूत्र के कार्यात्मक और प्रतिलेखीय रूपरेखा को स्पष्ट करने के लिए शूकर वाई गुणसूत्र के नर-विशिष्ट क्षेत्र की एक व्यापक कार्यात्मक रूपरेखा पीढ़ी के अधीन है। पूर्वोत्तर भारत के शूकरों की उत्पत्ति और विकास की जांच और विदेशी शूकरों और जंगली शूकरों से माइटोकॉन्ड्रियल जीनोमिक अनुक्रम (mtDNA) का उपयोग जारी है। शूकरों की स्वास्थ्य स्थिति की जांच के लिए आईआरटी छवि-आधारित प्रणालियों का अध्ययन किया गया। विभिन्न केंडिडेट के जीनों में आनुवंशिक परिवर्तनशीलता की खोज और शूकरों में फिर से (उत्पादन) लक्षणों के साथ अध्ययन चल रहा है।

पशु पोषण

सब्जियों के अपशिष्टों पर आधारित सब्जी का उपयोग करके स्थानीय रूप से उपलब्ध गोभी, फूलगोभी, गाजर, टमाटर आदि की साइलेज तैयार की जाती है और शूकरों द्वारा इसकी स्वीकार्यता और शूकरों में शरीर के विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। बड़े व्हाइट यॉर्कशायर, रानी क्रॉसबर्ड उत्पादक शूकरों में उत्पादन प्रदर्शन पर QPM मक्का के चारे के पूरक के प्रभाव, का अध्ययन किया गया था। यह पाया गया कि प्रति किग्रा फीड कॉस्ट में 2.98रु. की कमी हुई, QPM मक्का साइलेज के 5% सप्लीमेंट में क्रॉसब्रेड ग्रोअर शूकरों में मक्का के अनाज की जगह, जबकि फीड प्रति किग्रा गेन में 7.17रु. और 5.59 रु. पर 5% की दर से कमी आई। हिमालयन इकोसिस्टम को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन के तहत, विभिन्न व्यक्तिगत शूकर फार्म से नैदानिक और फीड नमूने एकत्र किए गए थे और उनके पोषण मूल्य और रोग निदान के लिए एक ही विश्लेषण किया था।

पशु प्रजनन

किसानों की क्षेत्र स्थितियों के तहत गिल्ट और साओ में सिंक्रोनाइजेशन और एस्ट्रस इंडक्शन किया गया। इसके अलावा एडवांस स्पर्म फंक्शन टेस्ट को मानकीकृत किया गया। प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के लिए एक कार्यप्रणाली विकसित की गई। पोस्ट पिघलना वीर्य विशेषताओं के संदर्भ में योज्य की श्रेष्ठता एसडीएस> विट- ई> मिफेप्रिस्टोन> ट्राइथेनॉलमाइन थी। अन्य प्रयोग

में, वीर्य को सिमन के प्लाज्मा के साथ मिलाया गया था। स्वीकार्य प्रजनन क्षमता हासिल नहीं हुई है, आगे के प्रयोग प्रगति पर हैं। तरल वीर्य संरक्षण के लिए एक लंबी अवधि के विस्तारक को मानकीकृत किया गया है। शूकर के जेल के जैव रासायनिक लक्षण वर्णन पर काम चल रहा है। शूकर सिमन जेल का संरक्षण मानकीकरण किया गया है। वीर्य संग्रह के लिए प्रशिक्षण के लिए और गिल्ट और साओ के लिए युवा पुरुषों में शूकर के जेल और लार के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

पशु शारीरिक क्रिया विज्ञान

विवो और इन विट्रो प्रयोगों दोनों के माध्यम से थर्मल तनाव से संबंधित मार्गों की पहचान करने के लिए प्रयोगों का आयोजन किया गया था। इसके अलावा, शूकरों में गर्मी के तनाव के दौरान शारीरिक प्रतिक्रियाओं की माइक्रोआरएनए मध्यस्थता विनियमन का अध्ययन किया गया था। फाइब्रोब्लास्ट कोशिकाओं को तीव्र गर्मी के झटके (41 डिग्री सेल्सियस), (37 डिग्री सेल्सियस पर नियंत्रण) के अधीन किया गया और आरएनए के अलगाव के लिए संसाधित किया गया और बाद में सीडीएनए पुस्तकालय और विश्लेषण के संश्लेषण के लिए संसाधित किया गया। उच्च गुणवत्ता वाले आरएनए कोशिकाओं से शुद्ध पूरे ट्रांसक्रिप्ट के साथ विश्लेषण किया गया। और माइक्रो आरएनए विशिष्ट अनुक्रमण अध्ययन फाइब्रोब्लास्ट सेल लाइन में मौजूद सभी माइक्रोआरएनए / टेप की पहचान करने के लिए। कुल 24997 लिपियों को स्यूस्कोफेजेनोम में मैप किया गया था, जिसमें से 651 जीनों को अलग-अलग व्यक्त किया गया था (पी < 0.05)। 255 और 396 अलग-अलग व्यक्त किए गए जीन (डीईजी) थे जो क्रमशः ऊपर और नीचे विनियमित थे (पी < 0.05)। RNA-seq का उपयोग करके प्रजनन में भिन्न होने वाले शूकरों के शुक्राणुजाल प्रतिलेख की तुलना की गई और दूढ़ में उपयोग किए जाने वाले शूकरों की प्रजनन स्थिति की जांच की गई। दृश्य मूल्यांकन के आधार पर अलग-अलग शारीरिक चरणों में पोरियन अंडाशय की सूची बनाना और उनके ट्रांसक्रिप्टोम प्रोफाइलिंग को डिम्बग्रंथि-प्रेरित और एंजियोजेनिक वृद्धि कारकों की भूमिका को उजागर करने के लिए डिम्बग्रंथि चक्रियता के साथ लिया गया है, जो कि स्वाइन में ओव्यूलेशन-प्रेरित आणविक परिवर्तनों में होते हैं।

पशु स्वास्थ्य

साल्मोनेला और कैम्पिलोबैक्टर प्रजातियों के लिए तेजी से और संवेदनशील न्यूक्लिक एसिड आधारित नैदानिक परख का विकास चल रहा है। शूकर से एमआरएसए के तेजी से पता लगाने के लिए एक लूप-मध्यस्थ इजोटर्मल प्रवर्धन (एलएएमपी) परख विकसित किया गया था। सूचित अवधि के दौरान दो लूप मध्यस्थ इजोटर्मल प्रवर्धन परख मेथिसिलिन प्रतिरोधी स्टैफिलोकोकस ऑरियस और शिगा विष पोर्क से ई. कोलाई का तेजी से पता लगाने के लिए विकसित किया गया है। टाइफोनियम ट्रिलोबाटम पौधे के अर्क की रोगाणुरोधी गतिविधि को मैक्रोडिल्यूशन विधि का उपयोग करके इन विट्रो में अध्ययन किया गया था। संयंत्र निकालने के एमआईसी और एमबीसी का निर्धारण प्रगति पर है। रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान शूकरों में जेई सीरो सकारात्मकता के मौसमी वितरण का मूल्यांकन किया गया था। 428 विभिन्न नमूनों की संख्या। नवजात मृत्यु दर का पता लगाने के लिए असम के विभिन्न संगठित और असंगठित शूकर फार्मों से मल (205), नाक स्वाब (103) और ऊतक का नमूना (120) एकत्र किया गया। पोर्सिन प्रजनन और श्वसन सिंड्रोम वायरस के लिए, एक ही शॉट पीसीआर प्रतिक्रिया में सभी तीन जीनों (एन, एम और ओआरएफ 5) का एक साथ पता लगाने के लिए एक पीसीआर विधि विकसित की है।

पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी

विकसित मूल्य ने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए और विकसित उत्पादों के पोषण, भौतिक, रासायनिक, सूक्ष्मजीवविज्ञानी और संवेदी विशेषताओं का मूल्यांकन करने के लिए महत्वपूर्ण सामग्री के अलावा कार्यात्मक पोर्क उत्पादों को जोड़ा। गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला में, खाद्य गुणवत्ता प्रबंधन डेटाबेस का पता लगाने और विकसित करने के लिए विकसित किया गया है। गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए यूनिट में बायोमेट्री और सीसीटीवी सिस्टम लगाए गए थे। APART परियोजना के तहत, असम के विभिन्न जिलों में JEV की व्यापकता से संबंधित पृष्ठभूमि का अध्ययन फीड विश्लेषण और क्षमता निर्माण के अलावा किया गया था। आणविक साधनों द्वारा मांस और मांस उत्पादों में खाद्य जनित रोगजनकों का पता लगाया गया। इसके अलावा, माइटोकोण्ड्रियल मूल के प्रजाति-विशिष्ट मार्करों द्वारा विभिन्न मीट की पहचान का भी अध्ययन किया गया था। एमेलोजिन और सेक्स-निर्धारण क्षेत्र वाई (एसआरवाई) जीन की पॉलिमरेज़ चेन रिएक्शन प्रवर्धन का उपयोग करके शूकर और मवेशी में लिंग पहचान की भी जांच की गई। परमाणु अवशोषण स्पेक्ट्रम द्वारा मांस, फीड और पानी में भारी धातु प्रोफाइल निर्धारित किया गया था। प्रौद्योगिकी आधारित व्यावसायिक परियोजनाओं के संचालन के लिए एक अत्याधुनिक कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन केंद्र बनाया गया था।

विस्तार शिक्षा

रिपोर्ट की अवधि के दौरान, तीन भाषाओं में सभी वैज्ञानिक शूकर उत्पादन प्रथाओं में अंग्रेजी, हिंदी और असमिया सहित तकनीकी बुलेटिन व वीडियो स्क्रिप्ट तैयार की गई। इस वीडियो का उपयोग किसानों के ज्ञान को समृद्ध करने के लिए एक शैक्षिक उपकरण के रूप में किया जाएगा। किसानों के लिए ज्ञान टेष्ट विकसित किया गया। कामरूप, गोलपारा, बक्सा में साक्षात्कर परिशिक्षण शुरू किया गया।

कृषि क्रिया विज्ञान (के.वी.के.)

वर्ष के दौरान 2191 प्रतिभागियों को शामिल करते हुए कुल 110 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कृषि विज्ञान केंद्र गोलपारा ने नव निर्मित कृषि प्रौद्योगिकियों पर 12 कृषि परीक्षण का संचालन किया है। किसानों के खेत में दलहनी फसलों पर दो नंबर एफएलडी का आयोजन 2019-20 के दौरान किया गया। हरे चने की किस्म स्त्रष्ट 16 और काले चने की किस्म PU 31 ने प्रत्येक 20 हेक्टर भूमि में प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में कुल 83 किसान दलहन किसान शामिल हुए। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का जश्न, जल शक्ति अभियान पर जागरूकता शिविर, उर्वरक अनुप्रयोग जागरूकता कार्यक्रम, सामूहिक वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता हाथ सेवा और राष्ट्रीय एकता दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अखिल भारतीय शूकर समन्वयन और मेगा सीड परियोजनाएं

संस्थान ने पिग परियोजना (15 केंद्र) पर एआईसीआरपी की प्रगति और शूकर पालन पर मेगा बीज परियोजना (07 केंद्र) की नियमित निगरानी जारी रखी, परिषद के परामर्श और समीक्षा बैठक के संचालन के साथ तकनीकी और वित्तीय निगरानी के माध्यम से। 27-28 सितंबर, 2019 को गुवाहाटी के शूकर, आईसीएआर-राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र में अंतिम एआईसीआरपी समीक्षा बैठक आयोजित की गई थी। विभिन्न कृषि-जलवायु स्थिति में शूकरों के प्रदर्शन का अध्ययन करने के लिए देश भर के विभिन्न केंद्रों में एआईसीआरपी परियोजना जारी है, गुणवत्ता जर्मप्लाज्म सहित प्रथाओं के क्षेत्र-विशिष्ट पैकेज को विकसित करना और स्वदेशी जर्मप्लाज्म का संरक्षण करना। शूकर पर मेगा सीड प्रोजेक्ट के तहत, बेहतर किस्म के कुल 18027 पिगलेट का उत्पादन XII वीं योजना अवधि के दौरान वितरण के लिए किया गया था। कुल 4403। 2018-19 में वितरण के लिए विभिन्न प्रकार के पिगलेट का उत्पादन क्रमशः किया गया था।

क्षमता निर्माण

संस्थान ने शूकर पालन, कृत्रिम गर्भाधान, पोर्क उत्पादन पर 18 प्रशिक्षण आयोजित किए।

अन्य

संस्थान ने गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, हिंदी पखवाड़ा, संस्थान स्थापना दिवस और विश्व पर्यावरण दिवस जैसे विभिन्न आधिकारिक कार्यों का भी अवलोकन किया। मनोरंजन क्लब द्वारा कर्मचारियों के लिए विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। महात्मा गांधी के 'स्वच्छ भारत' के सपने को साकार करने की दिशा में काम करने के संकल्प के साथ संस्थान नियमित रूप से 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत गतिविधियों का संचालन कर रहा है। कार्यालय और परिसर के परिसर को स्वच्छ और पर्यावरण के अनुकूल बनाए रखने के लिए कई पहल की गई। इसके अतिरिक्त, किसानों के लाभ के लिए वैज्ञानिक विशेषज्ञता का विस्तार करने के लिए, संस्थान ने मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम लागू किया है।

Executive summary

ICAR-National Research Centre on Pig has successfully completed 17 years since inception and continued its excellence in catering the needs/ requirements of farmers, extension workers, policy makers and industries associated with pig farming and pork processing. During the year 2019-20, the Institute functioned with 18 scientists, 06 technical staff and 06 administrative and accounts personnel. The total plan and non-plan budget allocations were 2072.21 lakh during the financial year. The institute has generated Rs 118.66 lakhs as revenue during the period. The scientists of the Institute relentlessly worked for achieving various targets related to research and extension, defined under the six major programmes as per the mandate.

Animal Genetics and Breeding

Generation-wise genetic evaluation of Rani crosses was studied and it was found that breed characters of Rani Crossbred was stabilized for consistent crossbreeding of several generations. Further, the conservation of Doom pig of Assam is in progress. The work on comprehensive functional profiling of the male-specific region of the pig Y chromosome in order to elucidate the functional and transcriptomic profiling of the pig Y chromosome is in progress. Investigation of the origin and evolution of pigs of Northeast India using mitochondrial genomic sequences (mtDNA) from indigenous pigs and wild pigs is in progress. IRT image-based systems for examining the health status of pigs were studied. Studies on exploring genetic variability in different candidate genes and their association with reproduction traits in pigs is under progress.

Animal Nutrition

Vegetable waste based silage was prepared using locally available vegetable waste namely cabbage, cauliflower, carrot, tomato etc. and its acceptability by pigs and effect on body growth in pigs was studied. Effect of supplementation of QPM maize fodder on production performance in Large White Yorkshire, Rani crossbred grower pigs was studied. It was found that feed cost per kg gain was reduced by Rs.2.98 at 5 % supplementation of QPM maize silage by replacing maize grains in crossbred grower pigs while feed cost per kg gain was reduced by Rs.7.17 and Rs.11.59 at 5 % and 10 % supplementation of QPM maize fodder by replacing maize grains in LWY finisher pigs. Under National Mission for Sustaining the Himalayan Ecosystem, clinical and feed samples were collected from different individual pig farms and analyzed the same for their nutritive value & disease diagnosis.

Animal Reproduction

A methodology was developed for optimizing reproductive efficiency/combate anestrus in gilts and sows. Synchronization and estrus induction in gilts and sows under farmers' field conditions was undertaken. Further, advance sperm function tests were standardized. Superiority of additive in terms of post thaw semen characteristics was SDS> Vit- E>Mifepristone>Triethanolamine. In other experiment, boar semen was frozen with seminal plasma. A long term extender for liquid semen preservation has been standardized. Biochemical characterization of boar seminal gel is under progress. Preservation of boar seminal gel has been standardization. The effect of boar seminal gel and saliva has been studied in young males for training purpose for semen collection and in gilts and sows for estrus induction purpose.

Animal Physiology

Experiments were conducted to identify the pathways related to thermal stress through both *in vivo* and *in vitro* experiments. Further, MicroRNA mediated regulation of physiological responses during heat stress in pigs was studied. The fibroblast cells were subjected to acute heat shock (41°C), (control at 37° C) and processed for isolation of RNA and subsequently processed for synthesis of cDNA library and analysis. High quality RNA purified from cells were analysed with whole transcriptome and micro RNA specific sequencing study to identify all the microRNAs/ transcripts present in the fibroblast cell line. A total of 24997 transcripts were mapped to *Sus scrofa* genome, out of which 651 genes were differentially expressed ($P<0.05$). There were 255 and 396 differentially expressed genes that were up- and down-regulated, respectively ($P<0.05$). The spermatozoal transcriptome of boars differing in fertility using RNA-seq and compared with the fertility status of boars used in the AI was examined. Cataloguing of porcine ovary into different physiological stages based on visual appraisal and their transcriptome profiling have been undertaken with ovarian cyclicity to uncover the role of immunogenic and angiogenic growth factors in ovulation-induced molecular changes in swine.

Animal Health

Development of rapid and sensitive nucleic acid based diagnostic assay is under progress for *Salmonella* and *Campylobacter* species. During the reported period two loop mediated isothermal amplification assay have been developed for rapid detection of Methicillin Resistant *Staphylococcus aureus* and Shiga toxin producing *E. coli* from pork. The antimicrobial activity of *Typhonium trilobatum* plant extract was studied in vitro using the macrodilution method. Determination of MIC and MBC of the plant extract is under progress. Seasonal distributions of Japanese Encephalitis Virus (JEV) sero positivity in pigs were evaluated during the reported period. Four hundred twenty eight numbers of various samples viz. faecal (205), Nasal swab (103) and tissue sample (120) from different organized and unorganized pig farms of Assam were collected for detection of neonatal mortality. For simultaneous detection of all the three genes (N, M and ORF5) of porcine reproductive and respiratory syndrome virus, a PCR based method was developed.

Livestock Products Technology

Value added functional pork products through the addition of critical ingredients were developed to cater the needs of the health-conscious consumers and evaluate the nutritional, physicochemical, microbiological and sensory attributes of developed products. Standardization of procedure for detection of FSSAI listed food borne pathogens in meat and meat products by molecular means was carried out. Further, Identification of different meats by species-specific markers of mitochondrial origin was standardized. Sex Identification in Pig and Cattle using Polymerase Chain Reaction Amplification of the Amelogenin and Sex-determining Region Y (SRY) Genes was also carried out. Profiling of selected heavy metals present in meat, feed and water

was performed using Atomic Absorption Spectroscopy. Food Quality Management Database has been designed and developed for handling the analytical samples with traceability in the QC Lab. Biometry and CCTV systems were installed in the unit to ensure confidentiality.

Extension

During the reported period, production of educational tools like video and technical bulletin have been initiated under the institute project on fostering the adoption of scientific pig production practices. A video script was prepared including all the scientific pig production practices in three languages i.e, English, Hindi and Assamese. The shooting, dubbing and editing activities were undertaken as a part of video production. A knowledge test was also developed to measure the knowledge of the farmers. A detailed interview schedule was prepared and base line data collection was also started in three districts Kamrup, Goalpara and Baksa.

KVK

A total of 110 training programmes covering 2191 participants were conducted during the year. The Krishi Vigyan Kendra Goalpara has conducted 12 'On Farm Trials' on newly generated agricultural technologies. Two numbers of FLD on pulse crops were conducted during 2019-20 at farmers' field. The green gram variety SGC 16 and black gram variety PU 31 were demonstrated in 20 hectare of land each. A total of 83 numbers of pulse farmers were involved in this programme. Celebration of International day of Yoga, awareness camp on Jal Shakti Abhiyan, fertilizer application awareness programme, mass plantation drive, awareness programme on Swachhata hi Sewa and National unity day were organized.

AICRP and Mega Seed Projects

The Institute continued regular monitoring of the progress of AICRP on Pig project (15 centres) and Mega seed project on pig (07 centres) through technical and financial monitoring in consultation with the council and conduction of review meet. The last AICRP review meet was conducted at ICAR-RCNEH, Umiam, Barapani during 27-28th September, 2019. The AICRP project is continuing in different centers across the country to study the performance of pigs in different agro-climatic condition, to develop region-specific package of practices including quality germplasm and to conserve the indigenous germplasm. A total of 4403 piglets of improved varieties were produced in these centers for distribution to the farmers during the year 2019.

Capacity Building

The institute has conducted 18 numbers of training programmes in different aspects of pig production, artificial insemination, pork processing and value addition.

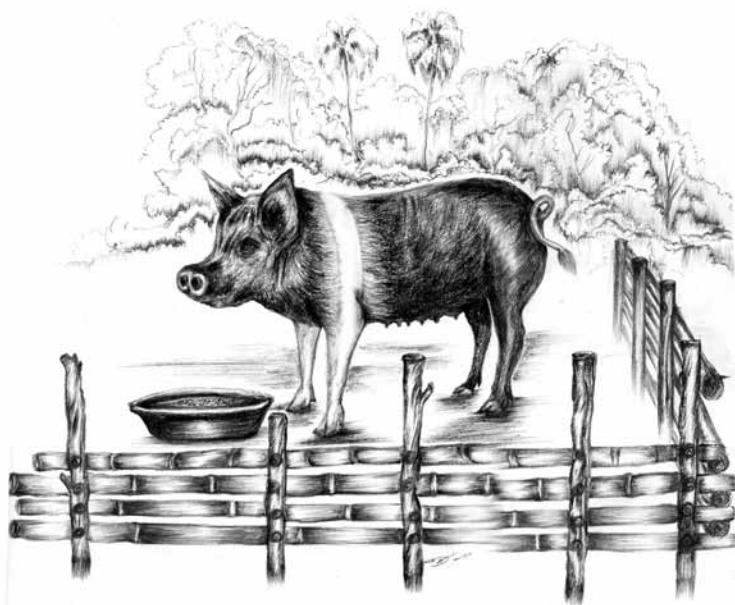
Others

The Institute also observed various official functions such as Republic Day, Independence Day, Hindi Pakhwada, Institute Foundation Day and World Environment Day. Various social events were also organized by the Recreation Club for the staffs. The Institute is regularly conducting activities under "Swachh Bharat Abhiyan" with the resolution to work towards realizing Mahatma Gandhi's dream of "Swachh Bharat". Various initiatives were taken to maintain the office and campus premises clean and environment friendly. Additionally, to extend the scientific expertise for the benefit of farmers, the Institute has implemented Mera Gaon-Mera Gaurav programme.

मुख्य उपलब्धियाँ 2019 के दौरान

1. रानी क्रॉस के पीढ़ी-दर-पीढ़ी आनुवंशिक मूल्यांकन का अध्ययन किया गया। रानी क्रॉसब्रेड की नस्ल विशेषताओं को लगातार क्रॉसब्रिडिंग के माध्यम से स्थिर किया गया। इसके अलावा, असम के डूम शूकर का संरक्षण किया जा रहा है।
2. शूकर वाई गुणसूत्र के विशिष्ट क्षेत्र की एक व्यापक कार्यात्मक रूपरेखा और प्रतिलेखीय रूपरेखा को स्पष्ट करने के लिए प्रयासरत है। पूर्वोत्तर भारत के शूकरों की उत्पत्ति और विकास की जांच स्वदेशी शूकरों और जंगली शूकरों से माइटोकॉण्ड्रियल जीनोमिक सीक्वेंस (mtDNA) से प्रगति पर है।
3. स्थानीय रूप से उपलब्ध सब्जी कचरे का उपयोग करके सब्जी आधारित सिलेज तैयार किया गया। गोभी, फूलगोभी, गाजर, टमाटर आदि को शूकरों द्वारा इसकी स्वीकार्यता और शरीर पर प्रभाव का शूकरों में विकास का अध्ययन किया गया।
4. संस्थान ने टी एस पी परियोजना में शूकर, फीड, कृत्रिम प्रजनन-दवाईयाँ किसानों को प्रदान की।
5. शूकर के वीर्य जेल और जास के प्रभाव का अध्ययन किया गया। किसानों के क्षेत्र में कृत्रिम गर्भाधान का उपयोग करके देश भर में एक कार्यप्रणाली विकसित की गई।
6. संस्थान ने उत्तर पूर्वी परिषद, शिलांग की वित्तीय के साथ एक आधुनिक शूकर वीर्य प्रसंस्करण प्रयोगशाला की स्थापना की सहायता प्राप्त हुई।
7. शूकरों में गर्मी के तनाव के दौरान शारीरिक प्रतिक्रियाओं का माइक्रोआरएनए मध्यस्थता विनियमन अध्ययन किया। कुल 24997 लिपियों को सूस स्कोफो जीनोम में मैप किया गया, जिसमें से 651 जीन अलग-अलग व्यक्त किए गए।
8. एमआरएसए के तेजी से पता लगाने के लिए एक लूप-मध्यस्थता इज़ोटेर्मल प्रवर्धन (एलएएमपी) परख विकसित किया गया। सूचित अवधि के दौरान दो अन्य लूप मध्यस्थ इज़ोटेर्मल प्रवर्धन परख विकसित किया गया।
9. जड़ी बूटी टायफोनियम ट्रिलोबाटम अर्क की रोगाणुरोधी गतिविधि का उपयोग इन विट्रो में किया गया। जेईवी का पता लगाना के लिए एक वास्तविक समय पीसीआर आधारित रैपिड डायग्नोस्टिक परख विकसित किया। महत्वपूर्ण पोर्सिन पैथोलोजेन जैसे पेस्टेरेला मल्टोसिडा, ई. कोली और मेथिसिलिन प्रतिरोधी स्टैफिलोकोकस ऑरियस के एक साथ डायनेक्सिस के लिए मल्टीप्लेक्स पीसीआर विकसित किया गया।

10. स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने और पोषण का मूल्यांकन करने के लिए, भौतिक-रासायनिक, सूक्ष्मजीवविज्ञानी और विकसित उत्पादों की संवेदी विशेषताएं के साथ पोर्क बनाए। पोर्क में प्रोटोकॉल एफएसएसएआई सूचीबद्ध रोगजनक जीवों के पीसीआर आधारित पहचान के लिए मानकीकृत किया गया। विभिन्न प्रजातियों के मांस से पीसीआर आधारित प्रमाणीकरण के लिए प्रक्रिया को मानकीकृत किया।
11. AICRP को अध्ययन करने के लिए देश भर के विभिन्न केंद्रों में मजबूत किया जाता है क्षेत्र-विशिष्ट पैकेज विकसित करने के लिए विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों में शूकरों का प्रदर्शन गुणवत्ता जर्मप्लाज्म सहित अभ्यास और स्वदेशी जर्मप्लाज्म का संरक्षण किया। शूकर पर मेगा सीड प्रोजेक्ट से पिगलेट की उन्नत किस्म का उत्पादन और वितरण किया गया।
12. संस्थान ने पेटेंट, ट्रेड मार्क एप्लिकेशन कॉपीराइट एप्लिकेशन भरा है।
13. संस्थान ने एबीआई केंद्र की स्थापना की है।
14. महात्मा गांधी के 'स्वच्छ भारत' के सपने को साकार करने की दिशा में संस्थान ने संकल्प के साथ 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत नियमित रूप से गतिविधियों का संचालन किया है।
15. कृषि विज्ञान केंद्र ने 12 नग संचालित किए हैं। फार्म परीक्षणों पर को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न विषयों के तहत फ्रंट लाइन डिमॉन्स्ट्रेशन (FLD) तकनीकी हस्तांतरण किया।



परिचय

परिचय

शूकर पालन, स्वास्थ्य और उत्पाद प्रसंस्करण में उत्कृष्टता लाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के तत्वावधान में 2002 में भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई थी ताकि प्रौद्योगिकी प्रदान करने के लिए नवीन अनुसंधान के माध्यम से स्वास्थ्य और उत्पाद प्रसंस्करण में उत्कृष्टता प्राप्त की जा सके। शूकर पालन के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों में उन्नत पोर्क उत्पादन, रोजगार सृजन और गरीबी में कमी करना प्रमुख उद्देश्य है। यह संस्थान देश में वैज्ञानिक शूकर उत्पादन और कटाई के बाद के प्रबंधन को लोकप्रिय बनाने के लिए अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहा है, साथ ही साथ इसकी संबद्ध इकाइयों, जैसे कि कृषि विज्ञान केंद्र, शूकर पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, और शूकर पर मेगा बीज परियोजना के साथ केंद्र, देश के विभिन्न हिस्सों में फैले हुए हैं। शूकर पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना और शूकर पर मेगा बीज परियोजना प्रमुख कार्यक्रम हैं जिसके लिए संस्थान एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। क्षेत्र-विशिष्ट शूकर उत्पादन प्रौद्योगिकियों का विकास और बेहतर शूकर आनुवंशिकी के लिए मांग के महत्वपूर्ण अंतर को भरना क्रमशः दो कार्यक्रमों का फोकस है।

स्थान

संस्थान रानी, गुवाहाटी में असम राज्य में स्थित है। यह संस्थान गुवाहाटी सिटी रेलवे स्टेशन से लगभग 35 किलोमीटर और माननीय लोकप्रिया गोपनथ बोरदोलोई अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे से 12 किलोमीटर दूर है।

संकाय एवं कर्मचारी

संस्थान में निदेशक, 18 वैज्ञानिक, 05 प्रशासनिक, 06 तकनीकी और 01 कुशल सहायक कर्मचारी पद पर हैं। कृषि विज्ञान केंद्र संस्थान के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत, कार्यक्रम समन्वयक की अध्यक्षता में है और वर्तमान में 10 तकनीकी, 01 प्रशासनिक और 02 कुशल सहायक कर्मचारी हैं।

31.12.2019 को स्टाफ की स्थिति

वैज्ञानिकों

विवरण	स्वीकृत संख्या	स्थिति में	रिक्त
वैज्ञानिक	18	13	05
वरिष्ठ वैज्ञानिक	04	04	0
प्रधान वैज्ञानिक	02	01	01
आरएमपी निदेशक	01	0	01
संपूर्ण	25	18	7

प्रशासनिक

विवरण	स्वीकृत शक्ति	स्थिति में	रिक्त
ए.ओ.	01	00	01
ए.ए.ओ	01	01	0
ए. एफ और ए.ओ.	01	01	0
सहायक	04	0	4
निर्देशक को पी.ए.	01	0	1
जूनियर स्टेनोग्राफर	01	01	0
यूडीसी	01	01	0
एलडीसी	01	01	0
संपूर्ण	11	05	06

कुशल

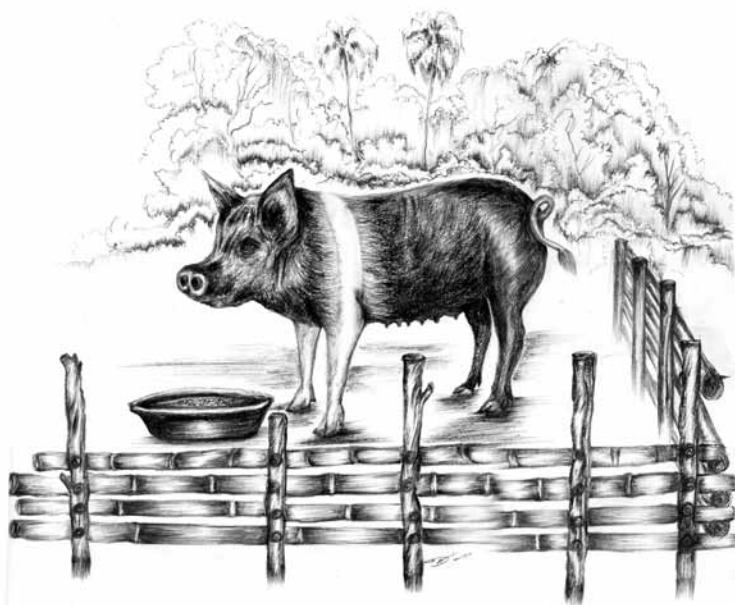
विवरण	स्वीकृत शक्ति	स्थिति में	रिक्त
एसएसएस	04	01	03
संपूर्ण	04	01	03

तकनीकी

विवरण	स्वीकृत शक्ति	स्थिति में	रिक्त
टी3/ टी4	04	03	01
टी1	03	03	0
संपूर्ण	07	06	01

31.12.2019 को के.वी.के. कैडर स्ट्रेंथ

विवरण	स्वीकृत शक्ति	स्थिति में	रिक्त
कार्यक्रम समन्वयक	01	00	01
एसएमएस	06	05	01
टी3/टी4	03	03	00
सहायक	01	00	01
जूनियर स्टेनोग्राफर	01	01	00
एसएसएस	02	02	00
टी1/टी-2 ड्राइवर	02	02	00
संपूर्ण	16	13	03



प्राथमिकता सेटिंग
और प्रबंधन

प्राथमिकता सेटिंग और प्रबंधन

संस्थान में एक उच्चस्तरीय अनुसंधान सलाहकार समिति (RAC) है, जिसमें प्रख्यात वैज्ञानिक और प्रोफेसर शामिल हैं, जो संस्थान के अनुसंधान एजेंडे का मार्गदर्शन करते हैं और अनुसंधान प्राथमिकताएँ निर्धारित करते हैं। डॉ. एन. बलरामन, पूर्व कुलपति, तमिलनाडु पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, चेन्नई समिति के अध्यक्ष हैं। अन्य सदस्यों में एनिमल जेनेटिक्स एंड ब्रीडिंग, एनिमल न्यूट्रिशन, एनिमल हेल्थ, एनिमल फिजियोलॉजी, एक्सटेंशन एंड लाइवस्टॉक प्रोडक्ट्स टेक्नोलॉजी के क्षेत्र के वैज्ञानिक और प्रोफेसर शामिल हैं। संस्थान के कामकाज की देखरेख संस्थान प्रबंधन समिति (IMC) द्वारा की जाती है, जिसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक करते हैं, जो राज्य सरकार, विश्वविद्यालय और सार्वजनिक कर्मियों से निकाले गए अध्यक्ष और सदस्यों के रूप में होता है। खरीद, पुस्तकालय, निर्माण, राजभाषा कार्यान्वयन, आईएसओ 9001- 2015 कार्यान्वयन, शिकायत, प्रकाशन, प्राथमिकता निर्धारण निगरानी और मूल्यांकन सेल, कर्मचारी कल्याण क्लब, आईपीआर सेल, संस्थान प्रबंधन इकाई, कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन जैसे कई आंतरिक समितियाँ और आईसीसी (महिला समिति) का गठन संस्थान के सुचारू संचालन के लिए विकसित जिम्मेदारियों के साथ प्रबंधन को विकेंद्रीकृत करने के लिए किया गया है। स्वस्थ और जन्मजात कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए संस्थान संयुक्त कर्मचारी परिषद का गठन किया गया है। संस्थान अनुसंधान परिषद (आईआरसी) विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा और कार्यान्वयन के संबंध में प्रभावी पेशेवर बातचीत के लिए एक मंच प्रदान करता है।

विजन

शूकर पालन के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बीच उन्नत पोर्क उत्पादन, रोजगार सृजन और गरीबी में कमी के लिए प्रौद्योगिकी प्रदान करने के लिए नवीन अनुसंधान के माध्यम से शूकर उत्पादन, स्वास्थ्य और उत्पाद प्रसंस्करण में उत्कृष्टता लाना।

मिशन

स्वदेशी शूकरों का प्रदर्शन मूल्यांकन और आनुवंशिक कैटलॉगिंग, उत्पादन, स्वास्थ्य, उत्पाद प्रसंस्करण और शूकर आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली प्रौद्योगिकियों के साथ-साथ घरेलू भोजन, पोषण और आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करने के लिए देश के शूकर पालनकर्ताओं की सुविधा के लिए उन्नत शूकर विविधता का विकास।

शासनादेश

संस्थान का अधिदेश है:

- शूकर उत्पादन को बढ़ाने के लिए बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान शुरू करना
- शूकर उत्पादन पर जानकारी के भंडार के रूप में कार्य करना
- क्षमता निर्माण

अनुसंधान कार्यक्रम

कार्यक्रम-1:	देशी शूकरों का संरक्षण और आनुवंशिक सुधार
कार्यक्रम-2:	शूकरों में शारीरिक और प्रजनन क्षमता में सुधार
कार्यक्रम-3:	शूकर पालन के लिए अच्छे प्रबंधन अभ्यासों (GMP) का मानकीकरण और सुधार
कार्यक्रम-4:	निरंतर निगरानी, शूकर रोगों की रिकॉर्डिंग और रोग प्रबंधन प्रोटोकॉल का विकास
कार्यक्रम-5:	शूकर उत्पादों के बाद फसल की हैंडलिंग, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन की प्रौद्योगिकी उन्नयन
कार्यक्रम-6:	संस्थान-हितधारक लिंकेज और कौशल विकास

व्यय विवरण

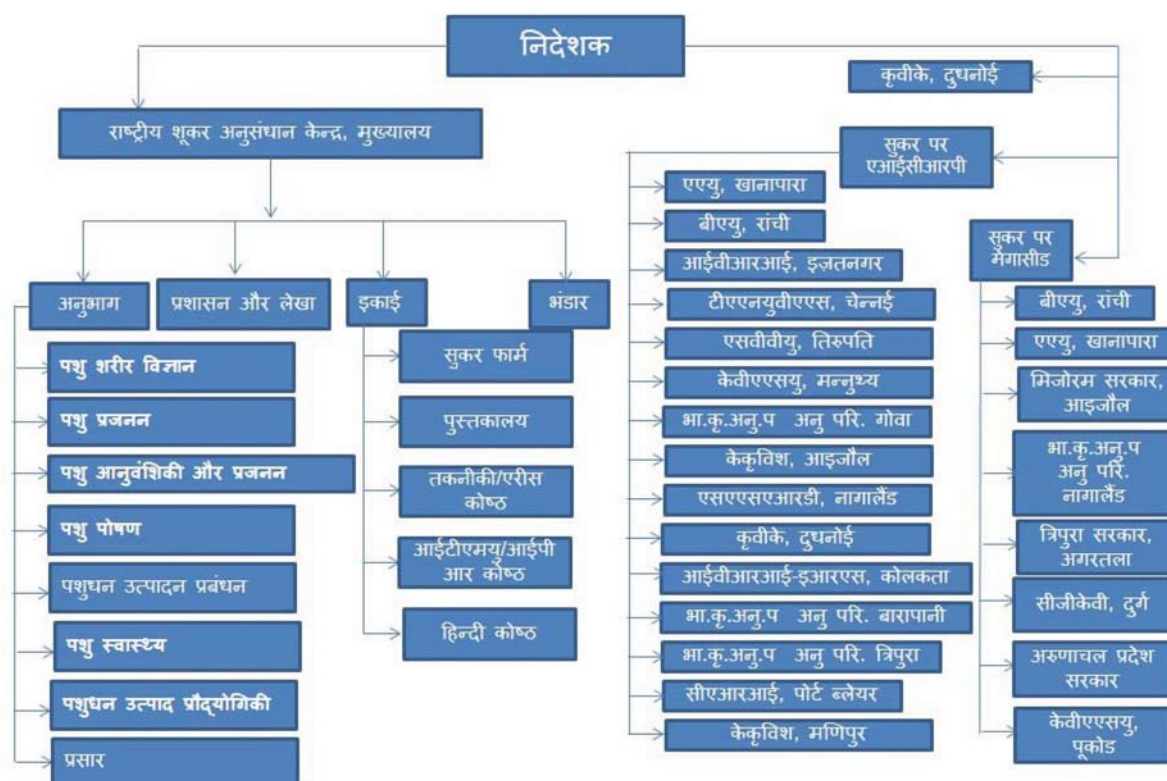
वर्ष के लिए उप प्रमुख वार व्यय दिखाते हुए वक्तव्य 2019-20 (रूपए लाख में):

योजना / परियोजना का नाम	वेतन और भत्ते	TA	आवर्ती आकस्मिकता	काम करता है	उपकरण	IT	पुस्तकालय	पशु	फर्नीचर	अन्य	मरम्मत और रखरखाव	HRD	प्रचार	Others/ MISC	संपूर्ण
शूकर पालन पर आईसीएआर-एनआरसी (मुख्य योजना)	R.E	15.00	244.98	96.00	38.95	5.05	0.10	4.90	5.00	0.00	153.72	2.20	0	1.10	987.00
	EXP	14.45	244.91	95.98	38.75	4.99	0.06	4.83	4.72	0.00	153.41	2.19	0	1.08	985.12
शूकर पर AICRP	R.E	8.50	482.00	82.00	12.00	0.00	0.00	4.75	0.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	712.21
	EXP	8.50	482.00	82.00	12.00	0.00	0.00	4.75	0.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	712.21
शूकर पर मेगा बीज	R.E	4.00	338.50	15.00	4.00	0.00	0.00	11.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	373.00
	EXP	4.00	338.50	15.00	4.00	0.00	0.00	11.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	373.00

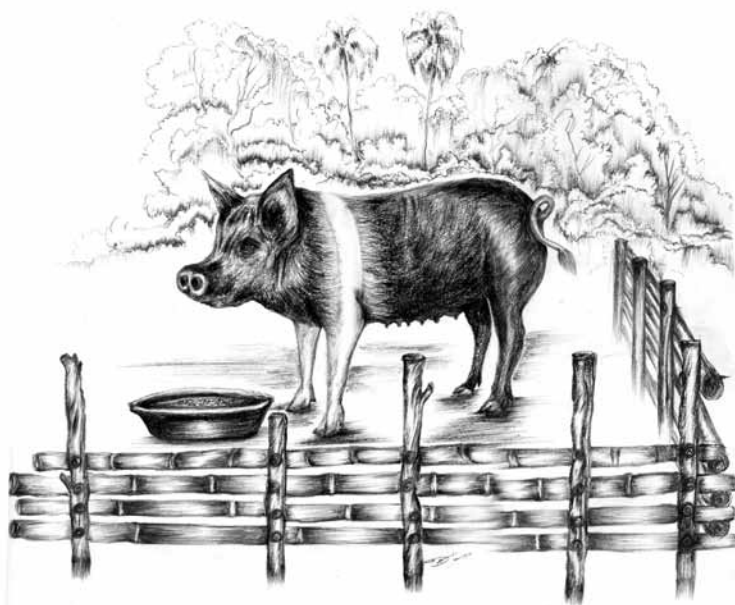
राजस्व उत्पत्ति

क्रमांक	विवरण	राजस्व (रूपए)
1	2019-20 के दौरान राजस्व लक्ष्य	83.54 लाख
2	2019-20 के दौरान राजस्व सृजन	118.66 लाख

संगठनात्मक संरचना



प्रबंधन के मैट्रिक्स मोड को अनुसंधान गतिविधियों में अपनाया जाता है जो बहु-विषयक / अंतःविषय कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विकसित जिम्मेदारियां प्रदान करते हैं। निदेशक संस्थान के प्रमुख हैं, जो प्रशासनिक और वित्तीय विंग द्वारा समर्थित हैं। स्थानीय निर्णय लेने और अनुसंधान की निगरानी को मजबूत करने के लिए, अनुसंधान सलाहकार समिति, संस्थान प्रबंधन समिति, संस्थान अनुसंधान परिषद और पीएमई सेल आवधिक बैठकों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।



भौतिक प्रगति

कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन (एबीआई) केंद्र

एक समय में 08 संख्या में इनक्यूबेट के लिए कार्यालय सुविधा के साथ कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन (एबीआई) केंद्र स्थापित किया गया है। भवन में व्यवसाय बैठक कक्ष का भी प्रावधान है। भवन का निर्माण डॉ. टी। महापात्र, सचिव, डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर द्वारा 24 नवंबर, 2019 को किया गया था। अब तक यूनिट में 07 नंबरों को शामिल किया गया था।



एग्रीबसनेस इन्क्यूबेशन सेंटर बिल्डिंग

आधुनिक शूकर वीर्य प्रसंस्करण प्रयोगशाला

संस्थान उत्तर पूर्वी परिषद, डूनर मंत्रालय, से वित्तीय सहायता के साथ एक आधुनिक शूकर वीर्य प्रसंस्करण प्रयोगशाला स्थापित करने की प्रक्रिया में है। भारत की। लैब में 50 बोअर से शूकर वीर्य के प्रसंस्करण की सुविधा होगी। गुणवत्ता वाले जर्मप्लाज्म बोअर्स को बनाए रखने के लिए दो आधुनिक शेड का निर्माण पहले ही किया जा चुका है। कासा जैसे आधुनिक उपकरणों को वीर्य प्रसंस्करण केंद्र में स्थापित किया जाएगा। केंद्र में हितधारकों के प्रशिक्षण और जागरूकता के लिए एक प्रशिक्षण हॉल भी होगा।



प्रगति के तहत आधुनिक शूकर वीर्य प्रसंस्करण प्रयोगशाला

साइट का विकास

संस्थान ने औपचारिक रूप से पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग, सरकार से लगभग 3.5 एकड़ (10 बीघा 2 कट्ठा और 2 साल) भूमि का अधिग्रहण किया है। असम में और सीमा की दीवार के निर्माण, पृथ्वी को भरने और पेड़ों के रोपण सहित साइट के विकास की पहल की।



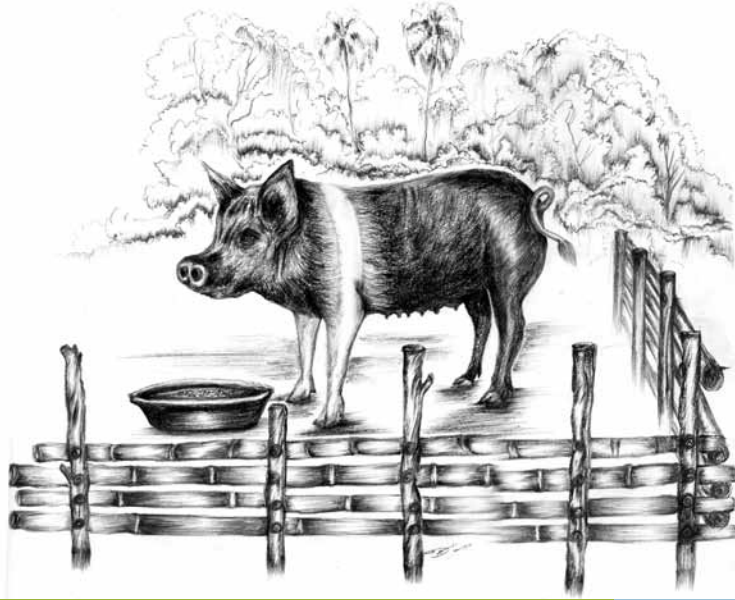
नए प्लॉट में साइट डेवलपमेंट

मेडिकल यूनिट का निर्माण

संस्थान ने परिसर में एक चिकित्सा इकाई का निर्माण किया है। इस यूनिट में मरीजों की जांच के लिए बुनियादी सुविधा है। संस्थान ने कर्मचारियों को उपचार सुनिश्चित करने के लिए एक चिकित्सा चिकित्सक की सेवा को काम पर रखा है।



चिकित्सा इकाई



अनुसंधान परियोजनाए

पशु आनुवंशिकी और ब्रीडिंग

संस्थान की परियोजना: रानी पार की पीढ़ी-वार जेनेटिक मूल्यांकन

एस. बनिक, पी. जे. दास, के. बर्मन, आर. थॉमस, एस. आर. पेगू और सुनील कुमार

क्षेत्र स्तर पर बहु स्थान परीक्षणों का संचालन करके प्रदर्शन मूल्यांकन के बाद एक उच्च उत्पादक क्रॉसब्रेड शूकर किस्म रानी विकसित की गई और ब्रीडर किसानों के लिए जारी की गई। गुवाहाटी में शूकर, गुवाहाटी पर आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर के शूकर प्रजनन फार्म में चयनात्मक प्रजनन के माध्यम से बनाए गए हैम्पशायर और घुंघरू (मादा) शूकरों की शुद्ध पैतृक लाइनें क्रमशः क्रॉसब्रीडिंग प्रोग्राम के रूप में विदेशी और स्वदेशी जर्मप्लाज्म के रूप में इस्तेमाल की गईं।



रानी मादा शूकर



रानी ने पिगलेट के साथ बोया



रानी उत्पादक

जीन की विशेषता और अभिव्यक्ति प्रोफाइलिंग। परियोजना कोड: IXX14388 संस्थान की परियोजना: शूकर के प्रजनन के लिए शूकर MSY (Y गुणसूत्र के पुरुष-विशिष्ट क्षेत्र)

पी.जे.दास, एस. बनिक, सुनील कुमार और एस. राजखोवा

इस अध्ययन में, हम शूकर वाई गुणसूत्र के कार्यात्मक और प्रतिलेखीय रूपरेखा को स्पष्ट करने के लिए शूकर वाई गुणसूत्र के पुरुष-विशिष्ट क्षेत्र की व्यापक कार्यात्मक रूपरेखा तैयार कर रहे हैं। वृषण-व्यक्त जीन के प्रवर्धन और एक उपन्यास अनुक्रम वर्ग की पहचान इस अद्वितीय गुणसूत्र के विकास और कार्य में उपन्यास अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। यद्यपि शूकर के नगण्य कार्यों में वाई विशिष्ट जीन के छिटपुट लक्षण पाए गए हैं लेकिन इसकी अभिव्यक्ति प्रोफाइलिंग पर की गई है। वर्तमान अध्ययन ने शूकर जीन के बारह पुरुष-विशिष्ट जीन की पहचान की है जो स्तनधारी प्रजातियों में नर प्रजनन क्षमता के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। वध किए गए शूकरों से ताजा रक्त और ऊतक के नमूने को असमान रूप से एकत्र किया गया है और डीएनए और आरएनए दोनों को मानक प्रोटोकॉल के बाद अलग किया गया है। MSY जीन के प्रवर्धन के लिए प्राइमरों को बारह स्क्व जीन, शूकर से 6 नियंत्रण जीन और 20 प्रजनन-संबंधित miRNA के लिए डिज़ाइन किया गया है। लक्षित जीन को पुरुष और महिला जीनोमिक डीएनए में प्रवर्धित किया गया था और पुरुष-व्युत्पन्न विशिष्टता की पुष्टि करता है। शूकर, साथ ही शुक्राणु से ऊतक पैनल को अभिव्यक्ति रूपरेखा में इन MSY जीनों की उपन्यास जटिलता को समझने के लिए एकत्र किया गया है। इसके अलावा, स्क्व जीन की वृषण-विशिष्ट अभिव्यक्ति विभिन्न परीक्षण किए गए ऊतकों के बीच अलग थी। यकृत, फेफड़े, गुर्दे, अग्न्याशय, हृदय, प्लीहा, कंकाल की मांसपेशी, अंडाशय और वृषण। पहचाने जाने वाले MSY जीन का उपयोग शूकर की पुरुष-विशिष्ट विशेषताओं को स्थापित करने और नर और मादा शूकर के जीन को अलग-अलग करने के लिए किया जा सकता है।

संस्थान परियोजना: उत्तर-पूर्व भारत के मूल शूकरों के शूकर माइटोकॉन्ड्रियल जीनोम अनुक्रमों के फ्लोजेनेटिक विश्लेषण। परियोजना कोड: IXX13503

पी.जे.दास, एस. बनिक, एस.आर.पेगू और एस. राजखोवा

MtDNA समृद्ध डीएनए को अलग-अलग नमूनों से अलग किया गया था और mtDNA विशिष्ट प्राइमरों का उपयोग करके प्रवर्धन किया गया था। प्रत्येक नस्ल के पूर्ण mtDNA जीनोम के साथ-साथ घुंघरू, निआंग मेघा, तेन्या-वो, कयामत, गैर-विवरण, माली, ज़ोवक, रानी, आशा, लम्सियांग, एचडीके 75 और जंगली शूकर की एनजी के पूरे मट्टीडिएनए डी-लूप के पांच प्रत्येक। एबीआई सेंगर सीक्वेंसिंग का उपयोग करके अनुक्रमित किया गया। डीएनए अनुक्रमों को क्लस्टल एक्स का

उपयोग करके इकट्ठा किया गया था और FASTA फ़ाइल को निर्यात किया गया था। MITOS और DOGMA का उपयोग करके पूरा अनुक्रम एनोटेट किया गया था। एनई की स्वदेशी शूकर नस्लों का विकासवादी इतिहास पड़ोसी-जुड़ाव (एनजे) पद्धति का उपयोग करके अनुमान लगाया गया था। एशियाई नस्लों, यूरोपीय नस्लों और जंगली शूकर के बीच क्रमशः पूर्ण और डी-लूप क्षेत्रों के पूरे mtDNA अनुक्रमों की तुलना करके स्वदेशी शूकरों की फाइटोलैनेटिक स्थितियों की जांच की गई। MtDNA D- लूप अनुक्रमों और पूरे mtDNA विश्लेषण के आधार पर बनाए गए नेबर-जॉइनिंग पेड़ों ने स्पष्ट रूप से दिखाया कि हृथ क्षेत्र के स्वदेशी शूकर एक अलग शाखा में स्थित थे। ये आंकड़े बताते हैं कि शूकरों की देसी नस्लें अन्य नस्लों से अलग हैं। यह पता चला है कि पूर्वोत्तर के देशी शूकर को हाल ही में एक दूसरे से अलग किया गया था और विदेशी यूरोपीय शूकरों से अलग था। भारतीय जंगली शूकर का अन्य सभी घरेलू शूकरों के साथ दूर के आनुवंशिक संबंध के साथ-साथ स्थानीय देसी नस्ल और शूकर की विदेशी नस्लों के बीच संकरण के संभावित प्रभावों को बाहर करता है। इस डेटा विश्लेषण में, यह एनई इंडिया के स्वदेशी शूकरों में एक उच्च स्तर के उप-विभाजन का भी सुझाव देता है। एनई क्षेत्र के स्वदेशी शूकरों में जर्मप्लाज्म के संरक्षण के लिए, इस दुर्लभ आनुवंशिक सामग्री के संरक्षण के लिए उपाय करना आवश्यक है।

संस्थान परियोजना: शूकरों की स्वास्थ्य स्थिति की जांच के लिए आईआरटी छवि-आधारित प्रणालियों का विकास।
परियोजना कोड: IXX15272

पी. जे. दास, एस. बनिक, एस. आर. पेगू और एस. राजखोवा

इस अध्ययन ने वाल्वर स्किन टेम्परेचर (VST), ग्लूटल स्किन टेम्परेचर (GST) और वल्चर और ग्लूटल स्किन टेम्परेचर (VGT) के अंतर को साइकल के ऑस्ट्रियस और नॉन-ऑस्ट्रियस स्टेज में अंतर करने की योजना बनाई। अध्ययन के परिणामों ने विभिन्न तापमानों (°C) पैरामीटर जैसे कि VST (36.78 29 0.29 Vs 35.94 19 0.19), GST (33.44 ± 0.24 Vs 35.51 ± 0.14) और VGT (3.34) के लिए ओस्ट्रस और गैर-ओस्ट्रस जानवरों के बीच महत्वपूर्ण अंतर का संकेत दिया। 0. 0.26 बनाम 0.43 11 0.11)। निष्कर्ष में, इन्फ्रारेड थर्मोग्राफी का उपयोग ओट्रस में गिल्ट और बो को प्रभावी ढंग से पहचानने के लिए किया जा सकता है।

अंजीर। बोनो की अवरक्त थर्मोग्राफिक छवियां; (ए) नॉन एस्ट्रस बोना, (बी) वल्चर स्किन टेम्परेचर नॉन एस्ट्रस सो, (सी और डी) वूल्वर स्किन टेम्परेचर ऑफ नॉन एस्ट्रस सो।

आईसीएआर वित्त पोषित: अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना शूकर, केवीके-गोलपारा केंद्र पर

एस. बनिक, पी. जे. दास, के. बर्मन, एस. राजखोवा और सतीश कुमार

केंद्र परियोजना के अनुसार असम के डूम शूकर की संरक्षण इकाई के रूप में कार्य कर रहा है। केंद्र संरक्षण और आनुवंशिक सुधार के उद्देश्य से डूम शूकर की 30 बुवाई इकाई का रखरखाव कर रहा है। इस अनोखे शूकर जर्मप्लाज्म के संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाए गए। इस उद्देश्य के लिए, प्रजनन पथ के मूल नस्ल के पालनकर्ताओं की पहचान, इन जर्मप्लाज्म के महत्व के बारे में किसानों के नियमित प्रशिक्षण और नस्ल के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन अभ्यास का प्रसार किया गया था। वर्तमान में आनुवंशिक सुधार कार्यक्रम डूम शूकर के बीच चयनात्मक प्रजनन द्वारा किया जा रहा है।



शूकर, केवीके, दुधोई पर आईसीएआरपी में शूकर शेड



इसकी संरक्षण इकाई में कयामत शूकर

संस्थान परियोजना: विभिन्न उम्मीदवार जीनों में आनुवंशिक परिवर्तनशीलता और शूकरों में फिर से (उत्पादन) लक्षण के साथ उनका जुड़ाव। परियोजना कोड: IXX14967

सतीश कुमार, संतनु बनिक, पी जे दास, सुनील कुमार, एआर साहू और जया

परियोजना को विभिन्न उम्मीदवारों के जीनों में आनुवंशिक परिवर्तनशीलता और शूकरों में प्रजनन लक्षणों के साथ उनके सहयोग के लिए तैयार किया गया था। आनुवंशिक परिवर्तनशीलता को विभिन्न उम्मीदवार जीनों में एसएनपी के संदर्भ में एक्सेस किया गया था। शूकरों के प्रजनन में जीन को इसकी कार्यात्मक और शारीरिक भूमिका के आधार पर चुना गया था।

संस्थान परियोजना: स्वदेशी शूकर नस्लों के आणविक लक्षण वर्णन। परियोजना कोड: IXX14968

सतीश कुमार, संतनु बनिक, पी. जे. दास, ई. बी. चाकुरकर, अमिय रंजन साहू, सुनील कुमार

परियोजना को भारत के स्वदेशी शूकरों के आणविक लक्षण वर्णन के उद्देश्य से तैयार किया गया था। देसी शूकर की नस्लों के बीच आनुवंशिक विविधता व्यापक है और प्रत्येक नस्ल की विशिष्ट विशेषताओं को अच्छी तरह से पहचाना जाता है। लेकिन, इन पंजीकृत शूकर नस्लों के बारे में कोई नस्ल विशिष्ट आणविक जानकारी नहीं है। इसलिए, आनुवंशिक भिन्नताओं के आणविक आधार का पता लगाना और उनके बीच आनुवंशिक विविधता का अध्ययन करना इस परियोजना का आधार है।

पशु पोषण

संस्थान परियोजना: सब्जी अपशिष्ट / फलों के अपशिष्ट पर आधारित शूकर का विकास: परियोजना कोड: IXX14389

केशव बर्मन, आर। थॉमस और एस. आर. पेगू

सब्जियों के कचरे के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध गोभी, फूलगोभी, गाजर, टमाटर आदि का उपयोग करके सब्जी अपशिष्ट आधारित सिलेज तैयार किया गया, सबसे पहले, सामग्री को तैयार करने से पहले धोया गया और फिर 2-3 घंटे के लिए धूप में सुखाया गया और 3% जगुआर के साथ साइलेज बनाने के लिए उपयोग किया गया 0.25% नमक। सामग्री को 21 दिनों के लिए साइलेज बैग में रखा गया था और फिर इसे प्रायोगिक रूप से इस्तेमाल किया गया था।



अंजीर: 3% गुड़ और 0.25% नमक के साथ तैयार किया गया सिलेज



सब्जी के कचरे को काटना



गुड़ और नमक के साथ वनस्पति कचरे का मिश्रण



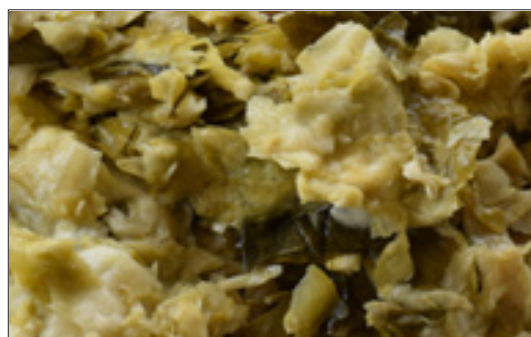
साइलेज बैग में पैकिंग



अतिरिक्त हवा को हटाने के लिए साइलेज बैग में सामग्री को दबाएं

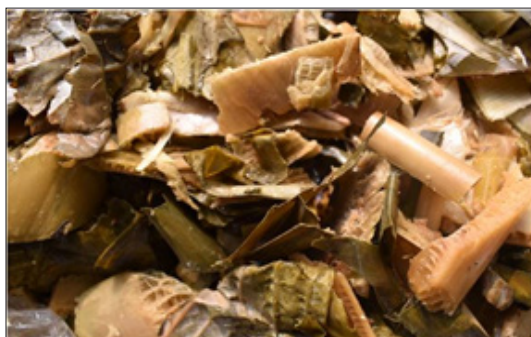


साइलेज बैग का बंद होना



21 दिनों के बाद अंतिम सिलेज

गोभी और कोलोकैसिया पत्ती के साथ केले के तने का उपयोग करके सिलेज तैयार करना



केले के तने के साथ पत्ता गोभी (60:40)



केले के तने के साथ साथ कोलोकैसिया (60:40)

गोभी और कोलोकैसिया के साथ केले के तने के विभिन्न संयोजन का उपयोग करके रासायनिक संरचना और खिल्ला परीक्षण प्रगति पर है

आईसीएआर-आईआईएमआर वित्त पोषित: सतत पशुधन उत्पादन के लिए एनईएच क्षेत्र में मक्का उत्पादन

के. बर्मन, एस. बनिक्, एस. आर. पेगू, सुनील कुमार और स्वराज राजखोवा

बड़े व्हाइट यॉर्कशायर उत्पादक शूकरों में उत्पादन प्रदर्शन पर QPM मक्का के चारे के पूरक का प्रभाव

अठारह बड़े सफेद यार्कशायर ग्रोअरपाइप को यादृच्छिक ब्लॉक डिज़ाइन का उपयोग करके तीन समूहों में विभाजित किया गया था और उन्हें 0, 5 और 10% क्यूपीएम मक्का चारा के साथ पूरक किया गया था, जो कि डीएस (डीएम / 2t) द्वारा मक्का के अनाज को बदलकर बेसल आहार के रूप में रखा गया था और T_1 , T_2 , T_3 के रूप में नामित किया गया था और T_3 क्रमशः प्रायोगिक आहार की प्रोटीन सामग्री 18.63, 0.25, 18.51 और 0.18 और 18.37 content 0.11 थी जबकि QPM मक्का चारे की प्रोटीन सामग्री 7.95 experimental 0.04 थी। उपचार समूहों में सूखे पदार्थ का सेवन समान पाया गया। उपचार समूहों में पोषक तत्वों की पाचनशक्ति पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। इसी तरह औसत दैनिक लाभ (जी / दिन), फीड इनटेक प्रति किग्रा लाभ (एफसीआर) और फीड कॉस्ट प्रति किग्रा लाभ पर कोई खास अंतर नहीं था। हालांकि, आहार में एफसीआर और फीड की लागत प्रति किलोग्राम 5% और मक्का चारा के 10% पूरकता में बेहतर पाई गई। प्रति किग्रा शूकरों में फीड लागत प्रति किलोग्राम लाभ 7.77 रुपये और 5% पर 10% और QPM मक्का चारे की 10% पूरकता में कमी आई।

एमओईएफ ने फंड किया: हिमालयन इकोसिस्टम को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन के तहत हिमालयन एग्रीकल्चर: प्रोजेक्ट कोड: OXX3.334

केशव बर्मन और स्वराज राजखोवा

किसानों के क्षेत्र में शूकर के स्थायी उत्पादन को बनाए रखने के लिए

1. सीरम के नमूने

असम के चार जिलों से कुल 70 शूकर सेरा के नमूने और 100 मल के नमूने एकत्र किए गए थे

स्थान	नमूना का प्रकार और कुल सं. जुटाया हुआ	
	सीरम	मल
जोरहाट, लखीमपुर, गोलाघाट, कामरूप, नलबारी, सिबसागर	120	140

सभी सीरम नमूनों की जांच आरटी-पीसीआर द्वारा की गई। स्क्रीनिंग का विवरण नीचे दिया गया है

- CSFV एंटीबॉडी: 23 CSFV एंटीबॉडी के लिए सकारात्मक थे
 - पीसीवी 2 एंटीबॉडी: पीसीवी 2 के लिए 10 सीरम के नमूने सकारात्मक पाए गए
 - जेईवी एंटीबॉडी: 16 नमूने पीपीवी के लिए सकारात्मक पाए गए
 - 1. बैक्टीरियलोलॉजिकल परीक्षा और पीसीआर के लिए कुल 140 फेकल नमूनों का विश्लेषण किया गया था
 - ई कोलाई और क्लोस्ट्रीडियम इत्र के लिए केवल 31 fecal नमूने सकारात्मक पाए गए।
 - 2. विभिन्न व्यक्तिगत शूकर फार्म से लगभग 30 नंबरों के फीड नमूने एकत्र किए गए और उनके पोषक मूल्य के लिए एक ही विश्लेषण किया और किसानों को शूकर के आहार में प्रोटीन और ऊर्जा मूल्य को संतुलित करने का सुझाव दिया।
- परियोजना 15 मार्च 2020 में पूरी हो गई है और रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है।

पशु प्रजनन

प्लैगशिप कार्यक्रम: शूकरों में कृत्रिम गर्भाधान। परियोजना कोड IXX14962

सुनील कुमार और रफीकुल इस्लाम

विभिन्न एजेंसियों द्वारा प्रायोजित कुल 18 प्रशिक्षण। गुम स्वायत्त परिषद, मेघालय उद्यमिता संस्थान, राष्ट्रीय पशुधन मिशन, पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग, सरकार। असम सरकार अरुणाचल प्रदेश, केवीके बक्सा, मेघालय बेसिन डेवलपमेंट एजेंसी और एनआरसी पर पिग-ट्राइबल सब प्लान बनाया गया, जहां शूकरों में कृत्रिम गर्भाधान के लिए व्यावहारिक प्रदर्शन किया गया। तीन विशिष्ट प्रशिक्षणों पर ए.आई. शूकर में केवीके बक्सा, राष्ट्रीय पशुधन मिशन, पशुपालन विभाग, सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया था। असम और सरकार की अरुणाचल प्रदेश का। इसके अलावा, APART परियोजना के तहत, ए.आई. राज्य पशु चिकित्सा विभाग, सरकार के सहयोग से दीफू (कार्बी आंगलोंग), सिबसागर, जौहरत और खानापारा में उपग्रह केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। असम का। किसानों के लिए कुल 23 जागरूकता कार्यक्रम SANJEEVNI (एक सामाजिक आर्थिक कल्याण संगठन), पशुपालन विभाग, सरकार के सहयोग से किए गए। असम, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (RSETI), नलबाड़ी और जनजातीय उप योजना। रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान 98 नए किसानों को स्वरोजगार सृजन के लिए बीमाकर्ता के रूप में प्रशिक्षित किया गया। संस्थान ने 'A.I.' इन पिग को सिम्बायोटिक फूड्स प्राइवेट लिमिटेड को हस्तांतरित किया गया था। लि।, तेजपुर (असम)। शूकर, रानी पर ICAR- NRC में आधुनिक बोअर वीर्य उत्पादन केंद्र की स्थापना, नॉर्थ ईस्ट काउंसिल, डूनर, शिलांग द्वारा वित्त पोषित निर्माणाधीन है। रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान, 109 नए किसानों ने शूकर, रानी पर ICAR- NRC द्वारा आपूर्ति किए गए तरल वीर्य के साथ कृत्रिम गर्भाधान द्वारा अपनी प्रतिज्ञाओं पर प्रतिबंध लगा दिया है। ऐसे किसानों की कुछ सफलताएँ नीचे वर्णित हैं।



एआई इन पिग्स (जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण)

संस्थान की परियोजना: प्री-प्यूबर्टल गिल्ड्स और एनेस्थेसिक गायों में चक्रीय डिम्बग्रंथि गतिविधि को शामिल करने के लिए हार्मोनल हस्तक्षेप

सुनील कुमार, एन.एच. मोहन और के.के. बरुआ

शूकरों में प्रजनन क्षमता को बढ़ावा देने के लिए दो एनेस्थेसिया विकसित किए गए हैं। अध्ययन में कुल 78 महिलाओं का इस्तेमाल किया गया था। प्रोटोकॉल टू (n = 59) में, PMSG + hCG (~~वक्सा~~ 400 इ. और द्रष्ट 200 इ. प्रति पशु) का संयोजन जबकि प्रोटोकॉल टूट्टु (टू = 19) में प्रोस्टाग्लैंडीन स्र2डु का उपयोग किया गया था।

संस्थान परियोजना: शूकर में शूकर वीर्य क्रायोप्रेजर्वेशन के लिए प्रोटोकॉल का विकास

सुनील कुमार, रफीकुल इस्लाम, संतनु बनिक और के. बर्मन

कुल 54 स्खलन (n = 54) स्वस्थ उपजाऊ शूकर से दस्ताने हाथ विधि द्वारा एकत्र किए गए थे। एक वाणिज्यिक एक्सटेंडर का उपयोग क्रायोप्रेजर्वेशन के लिए किया गया था। सोडियम डोडेसिल सल्फेट (SDS; 300mg / 100mL), Vit-E (400mg/100mL), Triethanolamine (TEN; 1.5mg / 100ml) और Mifepristone (MPN; 10mg / 100mL) जैसे एडिटिव्स के सप्लीमेंटेशन के प्रभाव का अध्ययन किया गया; आगे एक और प्रयोग में सेमिनल प्लाज्मा का उपयोग

क्रायोप्रेजर्वेशन के लिए किया गया। विभिन्न प्रोटोकॉल का उपयोग करके ठंड प्रोटोकॉल के कई संयोजनों की कोशिश की गई थी। डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण छात्र के टी-टेस्ट का उपयोग करके किया गया था। पोस्ट पिघलना वीर्य विशेषताओं के संदर्भ में योजक की श्रेष्ठता एसडीएस > विट- ई > एमएफएन > टीईएन थी। शुक्राणुजोड़ा की स्वीकार्य पोस्ट पिघलना गुणवत्ता हासिल नहीं की गई है। इसके अलावा, प्रयोग प्रगति पर हैं। हालांकि, तरल वीर्य संरक्षण के लिए एक लंबी अवधि के लिए मानकीकृत किया गया था।

संरक्षित जेल का उपयोग पुरुषों और महिलाओं में बायोस्टिम्यूलेशन के लिए किया जाता था। इसके अलावा, सक्रिय अणुओं की पहचान के लिए जैव रासायनिक गुणों पर जांच जारी है। अंत में, PMSG + hCG (PMSG @ 400 I.U. और hCG @ 200 I.U. प्रति पशु) का संयोजन एस्ट्रस इंडक्शन के लिए प्रोस्टाग्लैंडीन Fwa से बेहतर पाया गया। हालांकि, बाजार में लागत और आसान उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, महिला शूकर में प्रोस्टाग्लैंडीन F2α का उपयोग आगे भी खोजा जा सकता है।

संस्थान परियोजना: शूकर में शूकर वीर्य क्रायोप्रेजर्वेशन के लिए प्रोटोकॉल का विकास

सुनील कुमार, रफीकुल इस्लाम, संतनु बनिक और के. बर्मन

कुल 54 स्खलन (n = 54) स्वस्थ उपजाऊ शूकर से दस्ताने हाथ विधि द्वारा एकत्र किए गए थे। एक वाणिज्यिक एक्सटेंडर का उपयोग क्रायोप्रेजर्वेशन के लिए किया गया था। सोडियम डोडेसिल सल्फेट (SDS; 300mg / 100mL), Vit-E (400mg/ 100mL), Triethanolamine (TEN; 1.5mg / 100ml) और Mifepristone (MPN; 10mg / 100mL) जैसे एडिटिव्स के सप्लीमेंट का अध्ययन किया गया; आगे एक और प्रयोग में सेमिनल प्लाज्मा का उपयोग क्रायोप्रेजर्वेशन के लिए किया गया। विभिन्न प्रोटोकॉल का उपयोग करके ठंड प्रोटोकॉल के कई संयोजनों की कोशिश की गई थी। डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण छात्र के टी-टेस्ट का उपयोग करके किया गया था। पोस्ट पिघलना वीर्य विशेषताओं के संदर्भ में योजक की श्रेष्ठता एसडीएस > विट- ई > एमएफएन > टीईएन थी। शुक्राणुजोड़ा की स्वीकार्य पोस्ट पिघलना गुणवत्ता हासिल नहीं की गई है। इसके अलावा, प्रयोग प्रगति पर हैं। हालांकि, तरल वीर्य संरक्षण के लिए एक लंबी अवधि के लिए मानकीकृत किया गया था।

स्खलन में शुक्राणु की गतिशीलता (%) 88.19±0.60 थी। एसडीएस (41.83±8 1.42 vs 18.91±0.75), Vit-E (32.75± 1.53 vs 15.50±0.85), TEN (29.16±1.59 vs 9.6±1.09) जैसे विभिन्न योजकों के साथ संरक्षित शूकर में प्रतिशत शुक्राणु गतिशीलता (ठंड बनाम पोस्ट पिघलना) MPN (24.33±1.40 vs 08.58 ± 0.85) और सेमिनल प्लाज्मा (51.05±0.89 vs 20.33±0.93) बताया गया था।

सारणी:संशोधित लंबी अवधि में स्पर्म की गुणवत्ता 17°C पर संग्रहीत

पैरामीटर	ताजा	0 घंटा (विस्तार के बाद)	48 घंटा	96 घंटा	168 घंटा
गतिशीलता	92.36±0.42	86.52±0.65	66.52±1.64	54.44±1.84	21.38±1.20
लाइव %	83.05±0.82	71.38±1.53	60.13±1.53	52.08±1.568	41.66±1.80
होस्ट %	78.88±0.87	72.08±1.09	65.13±1.04	54.16±1.00	44.44±0.97

DBT-NECBH वित्त पोषित: शूकर के जेल में शूकर जेल के जैव रासायनिक विशेषता और शूकरों में बायोस्टिम्यूलेशन के लिए इसका आवेदन (परियोजना कोड: OXX04658)

सुनील कुमार, रफीकुल इस्लाम, मनीष कुमार, संतनु बनिक, पी. जे. दास, एस. आर. पेगू और स्वराज राजखोवा

जेल द्रव्यमान के संरक्षण को मानकीकृत किया गया है। संरक्षित जेल का उपयोग पुरुषों और महिलाओं में बायोस्टिम्यूलेशन के लिए किया जाता था। इसके अलावा, सक्रिय अणुओं की पहचान के लिए जैव रासायनिक गुणों पर जांच जारी है।

निष्कर्ष में, महिलाओं में एस्ट्रस और सिंक्रनाइजेशन को प्रेरित करने और शूकर में कृत्रिम गर्भाधान उद्देश्य के लिए पुरुषों के प्रशिक्षण के लिए सेमिनल जेल का उपयोग किया जा सकता है। सेमिनल जेल और लार के संयोजन से पुरुषों के प्रशिक्षण के लिए जेल के साथ-साथ गिल्ट और बोनो में एस्ट्रस के प्रेरण के लिए अधिक तीव्र बायोस्टिम्यूलेशन प्रभाव पड़ता है।

पशु शारीरिक क्रिया

आईसीएआर-नेशनल फेलो प्रोजेक्ट: बायोमार्कर असिस्टेड सिलेक्शन के माध्यम से थर्मो-टॉलरेंट पिंग का विकास (प्रोजेक्ट आईडी: 1009783)

मोहन एन.एच.

रिपोर्ट की अवधि के दौरान (जनवरी से दिसंबर 2019 तक) विवो और इन विट्रो प्रयोगों के माध्यम से थर्मल तनाव से संबंधित मार्गों की पहचान करने के लिए प्रयोगों का आयोजन किया गया था। इन विट्रो प्रयोगों के लिए एक फाइब्रोब्लास्ट आधारित प्राथमिक सेल लाइनों का उपयोग गर्मी के तनाव के अध्ययन के लिए एक मॉडल के रूप में किया गया था। हीट शॉक रिस्पॉन्स पाथ्स की पहचान और मैपिंग के लिए हीट शॉक फैक्टर -1 (एचएसएफ -1) की भूमिका, शूकरों में हीट शॉक रिस्पॉन्स के प्रमुख मध्यस्थों में से एक की जांच की गई। यह 69 जीनों के प्रमोटरों / ट्रांसक्रिप्शन स्टार्ट साइट्स (टीएसएस) के लिए बाध्य पाया गया, जिसमें से 12 थर्मल तनाव प्रतिक्रिया के साथ जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, HSF-1 भी 53 जीनों के बहिष्कार के लिए बाध्य था और कम से कम 1643 जीनों से जुड़ा था। जुड़े जीन में से 1237 प्रोटीन कोडिंग और आठ स्यूडोजेन हैं। HSF-1 भी कई प्रकार के RNAs (SNRNA-69, SNORA-54, SCARNA-2, miRNA-41, lincRNA-59) से जुड़ा हुआ पाया जाता है, जो सेल फिजियोलॉजी के विनियमन में इस प्रोटीन के लिए एक विस्तृत भूमिका का संकेत देता है, परे गर्मी झटका प्रतिक्रिया। विश्लेषण के आधार पर एक 21 डीएनए बाइंडिंग न्यूक्लियोटाइड सर्वसम्मत अनुक्रम TD-KHKYYYHWYWTBYWTTT की पहचान की गई, जो जीनोम में गर्मी उत्तरदायी तत्व से जुड़ा हो सकता है। थर्मोलेसेंस से जुड़े जीनों की पहचान के लिए: दो अलग-अलग एग्रोक्लिमैटिक जोन में पाले गए देशी जानवरों (शूकरों और बकरियों) के तुलनात्मक प्रतिलेख की जांच गर्मी सहिष्णु ट्रांसक्रिप्टोमिक हस्ताक्षरों की पहचान करने के लिए की गई थी। पूरे ट्रांसक्रिप्टोम के प्रारंभिक विश्लेषण के आधार पर, 223 और 267 जीन अभिव्यक्तियां राजस्थान (गर्म अर्ध शुष्क जलवायु क्षेत्र) में पाई जाने वाली शूकर और बकरियों के लिए अद्वितीय थीं, जहां असम (आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय जलवायु) में पाले जाने वाले शूकर और बकरियां 133 और 158 जीन अभिव्यक्ति पैटर्न हैं। उनके लिए क्रमशः अद्वितीय। हालांकि, 88 जीन अभिव्यक्तियां थीं, जो राजस्थान के गर्म अर्ध शुष्क जलवायु में पाले गए जानवरों के लिए आम और अनोखी थीं। संपूर्ण प्रतिलेख का कार्यात्मक एनोटेशन पूरा हो चुका है।

संस्थान परियोजना: शूकरों में प्रारंभिक प्रजनन मार्करों का विकास (परियोजना आईडी: 1009828)

मोहन.एन.एच., सुनील कुमार और आर.तोमस

आकृति विज्ञान, एक्रोसोम, कोशिका झिल्ली और कार्यात्मक परीक्षणों जैसे कि शुक्राणुजन्य गतिशीलता, मेथिलीन नीली कमी, माइटोकॉण्ड्रियल क्षमता के माध्यम से वीर्य की गुणवत्ता का मूल्यांकन पुरुष प्रजनन क्षमता और निषेचन संबंधी घटनाओं का प्रभावी ढंग से आकलन करने के लिए उपयोग किया गया है। हालांकि, अज्ञातहेतुक बांझपन की बढ़ती संख्या और समान गतिशीलता और रूपात्मक मापदंडों के साथ शूकर की अंतर प्रजनन क्षमता की व्याख्या करने में असमर्थता प्रजनन क्षमता के अधिक सटीक मूल्यांकन के लिए पारंपरिक तरीकों की अपर्याप्तता को इंगित करती है। वर्तमान अध्ययन में, हमने RNA-seq का उपयोग करके प्रजनन क्षमता में अंतर करने वाले शूकरों के शुक्राणुजकीय ट्रांसक्रिप्टोम की जांच की और संस्थान के एआई कार्यक्रम में उपयोग किए जाने वाले शूकरों की प्रजनन स्थिति की तुलना की।

संस्थान परियोजना: शूकरों में डिम्बग्रंथि समारोह को विनियमित करने वाले इम्युनोजेनिक और एंजियोजेनिक विकास कारकों की विशेषता। परियोजना कोड: IXX15063

जया, मोहन एन.एच., पी. जे. दास, सीमा आर. पेगू, सुनील कुमार और सतीश कुमार

दृश्य मूल्यांकन के आधार पर अलग-अलग शारीरिक चरणों में पोरियन अंडाशय की सूची बनाना और उनके ट्रांसक्रिप्टोम प्रोफाइलिंग को डिम्बग्रंथि प्रेरित और आणविक विकास कारकों की भूमिका को उजागर करने के लिए डिम्बग्रंथि चक्रीयता के साथ लिया गया है जो कि स्वाइन में ओव्यूलेशन-प्रेरित आणविक परिवर्तनों में कारक हैं। इस प्रयोजन के लिए, गिल्ट / बो

से पूरे प्रजनन पथ को स्थानीय वध स्थानों से एकत्र किया गया और जल्द से जल्द प्रयोगशाला में स्थानांतरित कर दिया गया। अध्ययन के लिए कम से कम एक हालिया चक्र के रूपात्मक साक्ष्य वाले केवल अंडाशय का चयन किया गया था। उनकी सकल आकृति विज्ञान के अनुसार, अंडाशय को कॉर्पोरा हेमोरेजिका, कॉर्पोरा ल्यूटिया, कॉर्पोरा अल्बिक्न्स और विकासशील रोम और उनके सापेक्ष संख्या, आकार, रंग, संगति और रक्त की आपूर्ति की डिग्री के लिए सावधानीपूर्वक परीक्षण करके ओस्ट्रोस चक्र के कार्यात्मक चरणों को सौंपा गया था। कॉर्पस ल्यूटियम को प्रारंभिक लुटियल (ईएल), मिड लुटियल (एमएल), लेट लुटियल (एलएल) और एस्ट्रस चक्र के रिग्रिंग (आर) चरणों को सौंपा गया था और ऊतकों को आरएनए अनुक्रमण के लिए संसाधित किया गया था।

पशु स्वास्थ्य

संस्थान परियोजना: साल्मोनेला, कैम्पिलोबैक्टर और स्टैफिलोकोकस प्रजातियों के विशेष संदर्भ में पोरसीन मूल के जूनोटिक रोगजनकों पर अध्ययन

एस.राजखोवा, एस. आर. पेगू, डी. के. सरमा और आर. ठोमास

इस परियोजना के तहत रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान असम के विभिन्न हिस्सों से एकत्रित किए गए नाक के स्वाब, मल के नमूने, ऊतक, फोड़े, गर्भपात आदि सहित शूकरों से 305 नमूनों का विश्लेषण किया गया। इन नमूनों में से 59 स्टैफिलोकोकस प्रजातियों को कच्चे मांस, त्वचा, फोड़ा, ऊतक के नमूनों और नाक की सूजन से अलग किया गया। 59 आइसोलेट्स में से 14 नमूने स्क्रू थे। ऊतक के नमूनों से 4 साल्मोनेला टायफिम्यूरियम और ऊतक से 8 कैम्पिलोबैक्टर जेजुनी और शूकरों के डायमेटोइक फेकल नमूने। सभी आइसोलेट्स को शुरुआत में पारंपरिक विधि द्वारा पहचाना गया था और अंत में प्रजाति विशिष्ट पीसीआर परख द्वारा पुष्टि की गई थी। साल्मोनेला और कैम्पिलोबैक्टर प्रजातियों के लिए तेजी से और संवेदनशील न्यूक्लिक एसिड आधारित नैदानिक परख का विकास चल रहा है। शूकरों से एमआरएसए का तेजी से पता लगाने के लिए एक लूप-मध्यस्थता इंजोटेर्मल प्रवर्धन (एलएएमपी) परख विकसित किया।

डीबीटी प्रोजेक्ट: पोर्क के सूक्ष्मजीवविज्ञानी गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए तेजी से प्रयोगशाला और क्षेत्र assays का विकास

एस.राजखोवा, गिरीश पाटिल एस और एस. आर. पेगू

रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान, असम के कामरूप, जोरहाट, नलबाड़ी और लखीमपुर जिले के विभिन्न वध बिंदुओं से शूकर से कुल 240 मांस के नमूने एकत्र किए गए थे और लक्षित बैक्टीरियल रोगजनकों की उपस्थिति का विश्लेषण किया था। ई। कोलाई, साल्मोनेला और स्टैफिलोकोकस प्रजातियों के लिए शूकरों की संख्या तालिका में प्रस्तुत की गई थी।

जीव	आइसोलेट्स की संख्या			
	कामरूप	जोरहाट	नलबारी	लखीमपुर
ई. कोलाई	14	7	3	5
साल्मोनेला	2	-	-	-
एस. ओरियस	7(MRSA 3)	2	3	4(MRSA 1)
एस. हाईकस	4	1	-	2

परियोजना का शीर्षक: DBT-हृष्यकसेंटर फॉर एडवांस्ड एनिमल डिजीज डायग्नोसिस एंड मैनेजमेंट कंसोर्टियम (ADMaC)

एस. राजखोवा और एस. आर. पेगू

रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान, डीबीटी-एडीएमएसी परियोजना के तहत निम्नलिखित किट विकसित और मान्य किए गए हैं।

संस्थान परियोजना: शूकरों में श्वसन पथ के संक्रमण से जुड़े महत्वपूर्ण जीवाणु रोगजनकों के खिलाफ टायफोनियम ट्रिलोबाटम स्कूटी कंद निकालने की प्रभावकारिता का मूल्यांकन

एस.आर. पेगू, एस. राजखोवा, ए. के. यादव, के. बर्मन, पी. दास और डी. के. सरमा

पिग उत्पादन में एंटीमाइक्रोबियल का अंधाधुंध उपयोग वृद्धि को बढ़ावा देने और बैक्टीरिया के संक्रमण के उपचार में रोगाणुरोधी प्रतिरोध के उद्भव के परिणामस्वरूप हुआ है। शूकर के श्वसन संबंधी रोगों का दुनिया भर में महत्वपूर्ण प्रभाव है और शूकर के झुंड में महत्वपूर्ण उत्पादकता हानि के लिए जिम्मेदार हैं। बैक्टीरियल प्रजातियों में से पासचुरिला मल्टोसिडा, एस. सुईस और एस. ओरियस आदि आमतौर पर अध्ययन के दौरान शूकरों के श्वसन पथ के संक्रमण में पाए जाते हैं। एंटीबायोटिक प्रतिरोध बैक्टीरिया न केवल उपचार को जटिल करते हैं, बल्कि शूकरों से मानव में विशेष रूप से शूकर पालन और पोर्क उपभोक्ताओं के लिए आसानी से स्थानांतरित किए जा सकते हैं। एंटीबायोटिक प्रतिरोध बैक्टीरिया के उद्भव को कम करने के कई तरीकों में से, एक जीवाणु संक्रमण के इलाज के लिए दवा के रूप में हर्बल यौगिकों का उपयोग है। कई हर्बल उत्पादों का उपयोग मनुष्य और जानवरों की विभिन्न बीमारियों के उपचार में किया जाता है। भारत में टाइफोनियम ट्रिलोबाटम (रु) शोट की प्रचुरता और इसकी रोगाणुरोधी गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान अध्ययन को श्वसन पथ के संक्रमण से जुड़े चुनिंदा जीवाणु रोगजनकों के खिलाफ इसकी प्रभावकारिता निर्धारित करने के लिए शुरू किया गया था क्योंकि भारत में अभी तक इस पर कोई अध्ययन नहीं किया गया है। पहलू।

डी.बी.टी. ट्वनिंग फंडेड: असम में शूकरों और मच्छरों में जापानी एन्सेफलाइटिस वायरस के आणविक महामारी विज्ञान सीमा आर पेगू

असम के विभिन्न जिलों में जेईवी की आणविक पहचान का प्रसार:

असम भारत में जापानी एन्सेफलाइटिस (जेई) के लिए अत्यधिक स्थानिक राज्यों में से एक है। 20 वीं जनगणना के अनुसार असम में देश की सबसे बड़ी शूकर आबादी भी है। धान के खेत के आसपास बारिश, चावल की खेती और शूकर पालन की प्रचुरता असम को जापानी एन्सेफलाइटिस के प्रसार के लिए सबसे कमजोर राज्य बनाती है। इसलिए, इस जांच का उद्देश्य असम की शूकर आबादी में जेईवी की व्यापकता को निर्धारित करना था। शूकरों में जेई सीरो सकारात्मकता का मौसमी वितरण जनवरी 2019 से दिसंबर 2019 तक मूल्यांकन किया गया था। वर्ष 2019 में असम के कामरूप, जोरहाट, लखीमपुर, नलबाड़ी, बरवा, शिवसागरानंद सोनितपुर जिलों से शूकर के कुल 947 सेरा नमूनों की जांच की गई थी। सीरा के नमूनों में जेईवी के खिलाफ सकारात्मक एंटीबॉडी दिखाया गया। इसके अलावा 65 पूरे रक्त के नमूने और 54 ऊतक नमूनों की जांच आरटी-पीसीआर द्वारा जेईवी के लिए की गई। जेई वायरस का लिफाफा प्रोटीन आरटी-पीसीआर द्वारा लक्षित था। आरटी-पीसीआर द्वारा 11 रक्त के नमूने और 5 ऊतक के नमूने सकारात्मक पाए गए। असम के पांच जिलों से वेक्टर मच्छरों के मौसमी वितरण की जांच की गई। पहचाने गए मच्छर वेक्टर में मुख्य रूप से क्यूलेक्स ट्राइटेनोरिन्वस, क्यूलेक्स विष्णोई, क्यूलेक्स स्यूडोविष्णोई, क्यूलेक्स सफेद अधिक, क्यूलेक्स जिलेटिड और मासोनिया एसपीपी थे। और अप्रैल से सितंबर (मानसून महीने) के दौरान दिसंबर से फरवरी (सर्दियों के महीनों) की तुलना में काफी अधिक पाया गया। इक्काइन, हिसार पर आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर के सहयोग से शूकरों में जेईवी का पता लगाने के लिए रियल टाइम पीसीआर पर आधारित तेजी से नैदानिक परख विकसित की है।

आईसीएआर ने निधि दी: शूकरों में नवजात मृत्यु दर पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना

स्वराज राजखोवा और एस आर पेगू

इस अवधि के दौरान इस परियोजना के तहत हमने विभिन्न नमूनों के 428 नंबरों का विश्लेषण किया है। मल (205), नाक स्वैब (103) और ऊतक का नमूना (120) असम के विभिन्न संगठित और असंगठित शूकर फार्मों से। हम ई। कोलाई के 28 नंबरों को डायरोसेकियल मल के नमूनों से अलग कर सकते हैं, इस 28 में से 18 ईटीईसी के लिए सकारात्मक पाए गए और 10 एसटीईसी के लिए सकारात्मक पाए गए। सभी पृथक ई। कोलाई को रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) के लिए परीक्षण किया गया था और इन 28 में से 11 को आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले एंटीबायोटिक दवाओं के खिलाफ

एएमआर के लिए पुष्टि की गई थी। रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान, हम टिशू के नमूनों और पेस्टलेट्स के नाक के स्खैब से 4 संख्या में पेस्टुरेला मल्टीकोसिडा को अलग कर सकते हैं। इन आइसोलेट्स को शुरू में धुंधला आकृति विज्ञान, जैव रासायनिक परीक्षणों और विशिष्ट प्राइमरों का उपयोग करके पीसीआर द्वारा पुष्टि की गई थी। पीसीआर के माध्यम से स्टिलबोर्न और कमजोर पिगलेट्स में पोर्सिन सर्कोवायरस टाइप 2 (पीसीवी 2) का पता लगाया। टायफोनियम ट्रिलोबाटम के पौधे के अर्क को इन विट्रो में ई। कोलाई मल्टीड्रग प्रतिरोधी तनाव के खिलाफ जीवाणुरोधी संवेदनशीलता के लिए परीक्षण किया गया और अर्क के प्रति संवेदनशील पाया गया। पिगलेट्स से अलग जीवों के कारण अन्य दस्त में आगे संवेदनशीलता अध्ययन चल रहा है।

संस्थान परियोजना: पोर्सिन प्रजनन और श्वसन सिंड्रोम वायरस के इम्युनोजेनिक प्रोटीन की नैदानिक क्षमता की अभिव्यक्ति और मूल्यांकन

अजय कुमार यादव, सीमा रानी पेगू, राजीब देब, प्रणब ज्योति दास और स्वराज राजखोवा

हमने पीआरआरएस वायरस के तीन एंटीजेनिक प्रोटीन को लक्षित किया है; न्यूक्लियोकैप्सिड (एन), मैट्रिक्स (एम) और ग्लाइकोप्रोटीन 5 (ओआरएफ 5)। लक्षित जीनों को प्रवर्धित किया जाएगा और उपयुक्त अभिव्यक्ति वेक्टर में क्लोन किया जाएगा। नमूने (एन = 35) (रक्त और ऊतक) शूकर के खेतों, स्थानीय मांस की दुकानों से एकत्र किए गए थे और पीआरआरएसवी संक्रमण के लिए संदिग्ध प्रकोप दायर किए थे। कुल आरएनए RNeasy किट (मेसर्स क्यूजेन, जर्मनी) द्वारा अलग किया गया था और यादृच्छिक हेक्सामर प्राइमरों का उपयोग करके पहली स्ट्रैंड सीडीएनए संश्लेषण किया गया था। सभी तीन जीन (N, M और ORF5) को सफलतापूर्वक बढ़ाया गया है और pJET1.2 क्लोनिंग वेक्टर में क्लोन किया गया है। हमने एक ही शॉट पीसीआर प्रतिक्रिया में सभी तीन जीनों के एक साथ पता लगाने के लिए एक पीसीआर विधि भी विकसित की है। इस संशोधित पीसीआर के लिए पेटेंट आवेदन संख्या 202011004699, दिनांक 03/02/2020 के साथ दायर किया गया है।

पशुधन उत्पादों प्रौद्योगिकी

संस्थान परियोजना: कार्यात्मक उत्पादों की सेवा के लिए तैयार पोर्क का विकास

आर. थॉमस और के. बर्मन

परियोजना का उद्देश्य विकसित उत्पादों के पोषण, भौतिक-रासायनिक, सूक्ष्मजीवविज्ञानी और संवेदी विशेषताओं का मूल्यांकन करने के लिए स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण अवयवों के माध्यम से मूल्य वर्धित कार्यात्मक पोर्क उत्पादों को विकसित करना था। विकसित किए गए कार्यात्मक पोर्क उत्पादों के प्रकारों में निम्नलिखित श्रेणियां शामिल हैं: 1. PUF बढ़ाया, 2. फाइबर समृद्ध, 3. एंटीऑक्सिडेंट समृद्ध, 4. कम नमक और 5. कम वसा / कम कैलोरी। प्रसंस्करण के दिन अध्ययन किए गए विभिन्न मापदंडों में पीएच, खाना पकाने की उपज, समीपस्थ रचना/पोषण मूल्य, जल गतिविधि, शिकारी रंग मूल्य, बनावट प्रोफाइल और वार्नर-जेस्टर शियर बल शामिल हैं। भंडारण अवधि के दौरान अध्ययन किए गए मापदंडों में शामिल हैं: भौतिक-रासायनिक पैरामीटर - पीएच, अनुमानित संरचना / पोषण मूल्य, टीबीएआरएस मूल्य, टायरोसिन मूल्य, फ्री फैटी एसिड और टिट्रेटेबल अम्लता; माइक्रोबायोलॉजिकल पैरामीटर- एरोबिक काउंट, साइकोट्रोपिक काउंट, कोलीफॉर्म काउंट, साल्मोनेला सपा। गिनती, लैक्टोबैसिलस गिनती, Staph। ऑरियस काउंट, यीस्ट एंड मोल्ड काउंट और सेंसरी विशेषताओं- रूप, स्वाद, रस, बनावट, बंधन, समग्र स्वीकार्यता। उपभोक्ता स्वीकार्यता के साथ मूल्य वर्धित पोर्क उत्पादों के वाणिज्यिक प्रसंस्करण के लिए व्यवहार्य प्रौद्योगिकियों का विकास किया गया। पोर्क उत्पाद के योगों में स्थानीय रूप से उपलब्ध औषधीय पादप भागों (पत्तियों / फलों / कलियों आदि) को शामिल करने के लिए सरल प्रक्रियाओं को विकसित किया गया था। इन सामग्रियों को भंडारण अवधि के दौरान माइक्रोबियल खराब होने और फैटी एसिड ऑक्सीकरण को रोकने पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया था। विपणन के दौरान उत्पादों के ब्रांड मूल्य में सुधार करने के लिए शूकर का मांस और पोर्क उत्पादों की पैकेजिंग में वैज्ञानिक हस्तक्षेप किए गए थे। उत्पादों के व्यावसायीकरण से पहले विकसित योगों की प्रयोगशाला और पायलट पैमाने पर दोनों परीक्षण किए गए थे। उत्पादों के बाजार की स्वीकार्यता सुनिश्चित करने के लिए, पायलट स्केल मार्केटिंग चरण के दौरान प्राप्त सुझावों के आधार पर योगों को संशोधित किया गया था। विकसित की गई तकनीकों का पब्लिक-प्राइवेट- पार्टनरशिप मोड के माध्यम से व्यावसायीकरण किया गया।

MoFPI परियोजना: खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना

आर. थॉमस, सीमा आर. पेगू और एस. राजखोवा

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा रुपये के परिव्यय के साथ ढांचागत विकास परियोजना को मंजूरी दी गई थी। शूकर पर ICAR-NRC में शूकर का मांस और पोर्क उत्पादों के लिए कला NABB मान्यता प्राप्त परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए 365.00 लाख। स्वीकृत उपकरणों के आवास के लिए लगभग 1900 वर्ग फुट के क्षेत्र के साथ एक अलग इमारत का निर्माण पहले ही पूरा हो चुका है। उक्त भवन में विशेष रूप से मांस और मांस उत्पादों के नमूने के नमूने प्राप्त करने और कोडिंग, नमूना प्रसंस्करण, अवशेषों की निगरानी, मिलावट का पता लगाने और माइक्रोबियल विश्लेषण के प्रावधान हैं। संस्थान ने प्रयोगशाला के एनएबीएल मान्यता के लिए आवेदन करने के लिए प्रक्रिया शुरू की है। पहले कदम के रूप में, निम्नलिखित में से तीन वैज्ञानिक कर्मचारी, जो वर्तमान परियोजना से जुड़े हैं, ने मानकीकरण के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थान (एनआईटीएस), बीआईएस में आईएसओ 17025: 2017 प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रयोगशाला गुणवत्ता प्रबंधन और आंतरिक लेखा परीक्षा) किया है। नोएडा। इसके अलावा, लैब के लिए एनएबीएल मान्यता प्राप्त करने में प्रौद्योगिकी सहायता के लिए आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। खाद्य गुणवत्ता प्रबंधन डेटाबेस का पता लगाने और विकसित करने के लिए विकसित किया गया है जो कि ट्रेकबिलिटी के साथ विश्लेषणात्मक नमूनों को संभालता है। गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए यूनित में बायोमेट्री और सीसीटीवी सिस्टम लगाए गए थे।

एपीआरएटी परियोजना: विश्व बैंक के तहत असम एग्रीबिजनेस एंड रूरल ट्रांसफॉर्मेशन प्रोजेक्ट (एपीएआरटी) के तहत असम में पिग्गी मूल्य श्रृंखला सुधार के लिए तकनीकी सलाहकार सेवाएं।

आर. थॉमस, सीमा आर. पेगू, के. बर्मन, सुनील कुमार, एस. राजखोवा

ARIAS सोसायटी, सरकार। असम में विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना के तहत असम में पिग्गी मूल्य श्रृंखला सुधार के लिए तकनीकी सलाहकार सेवाएं प्रदान करने के लिए शूकर, गुवाहाटी पर आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। संस्थान इस परियोजना के तहत चार जोर क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। राशन संतुलन के लिए फीड संसाधनों का विश्लेषण; शूकर के लिए मच्छर संचारित वायरस को कम करने के लिए लक्षित उपायों को सूचित करने के लिए जेईवी के लिए सीरो-नमूना; तरल बोअर वीर्य प्रसंस्करण प्रयोगशालाओं के निर्माण / उन्नयन में सहायता और मास्टर ट्रेनरों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम का संचालन करना। राशन संतुलन के लिए डेटाबेस तैयार करने के संबंध में, फीड नमूना संग्रह, पैकेजिंग और परिवहन के लिए दिशानिर्देश तैयार किए जाते हैं और एचवीडी को प्रस्तुत किए जाते हैं। उन्. ाड्डष्ठ कर्मचारी और संस्थान में अब तक प्रशिक्षित शूकर बन्धुओं को नमूना संग्रह और परिवहन प्रक्रिया के बारे में विस्तृत विवरण दिया गया था। मच्छरों से संक्रमित वायरस को कम करने के लिए लक्षित उपायों की सूचना देने के लिए जेईवी के लिए सीरो-नमूने के संबंध में शूकरों ने प्रभावित क्षेत्रों में शूकरों से रक्त / सीरम के नमूनों के संग्रह के लिए आवश्यक सामग्री (नमूना संग्रह किट) पहले ही खरीद लिया है।

आईसीएआर-एलबीएस पुरस्कार परियोजना: भारत में पोर्क आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े खतरों के फार्म-टू-फोर्क जोखिम की रूपरेखा, खतरों पर एक डेटाबेस विकसित करना और अद्वितीय शूकर पालन / प्रसंस्करण प्रथाओं से संबंधित, खतरों को कम करने और प्रभावी जोखिम संचार रणनीतियों के रूप में खाद्य सुरक्षा हस्तक्षेप विकसित करना उद्योग के लिए मार्गदर्शन

आर. थॉमस

इस परियोजना को 01-01-2019 से शुरू किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य भारत में कॉर्क आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े खतरों (सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता, पशु चिकित्सा दवा के अवशेष, कीटनाशक अवशेष और भारी धातु के सूक्ष्मजीव) की फार्म-टू-फोक रिफाइलिंग करना है। और उनके डेटाबेस को विकसित करने के लिए। परियोजना में परिकल्पित सर्वेक्षण कार्य लगभग पूरा हो चुका है। प्रारंभिक चरण में 05 उत्तर पूर्वी राज्यों को शामिल किया गया था अर्थात् असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम और नागालैंड। दक्षिण भारत (केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना) से नमूने भी एकत्र किए गए;

उत्तर भारत (हरियाणा, पंजाब और दिल्ली) और पूर्वी भारत (WB और झारखंड)। रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान पिग फार्म (पिछवाड़े और छोटे) की साठ तीन संख्या और पोर्क रिटेल इकाइयों (सड़क के किनारे की दुकानों और संगठित दुकानों) की 47 संख्या देखी गई। विवरण 2.r.t एकत्र किए गए थे। उत्पादन प्रथाओं, खिला प्रथाओं, स्वास्थ्य प्रबंधन आदि पर जोर दिया गया था ताकि संभावित कबूतर और पोर्क मूल्य श्रृंखला में जोखिमों में योगदान दे सकने वाले संभावित कारकों की पहचान और दस्तावेजों पर जोर दिया जा सके। सर्वेक्षण के दौरान उनके साथ जुड़े संभावित जोखिम कारकों के मूल्यांकन के लिए विभिन्न नमूने (फीड सैंपल, पोर्क के नमूने, खाद्य आंत के अंग आदि) एकत्र किए गए जो किसी समय शूकर / पोर्क मूल्य श्रृंखला में प्रवेश कर सकते थे। इन क्षेत्रों में विपणन किए गए शूकर के मांस की विभिन्न गुणवत्ता विशेषताओं (शव माप, फिजियो-केमिकल और माइक्रोबायोलॉजिकल) का मूल्यांकन किया गया। मांस कर्मियों / कसाई और मांस की दुकानों (जो पोर्क को संभालते हैं) की स्वच्छता की स्थिति का आकलन करने के लिए नमूने लिए गए थे। इसके अलावा, परियोजना में सर्वेक्षण क्षेत्रों में पोर्क उपभोक्ताओं की गुणवत्ता जागरूकता और आवश्यकताओं को समझने के लिए एक सर्वेक्षण शामिल था।

विस्तार

संस्थान परियोजना: असम में छोटे धारकों के बीच वैज्ञानिक शूकर उत्पादन प्रथाओं को अपनाने को बढ़ावा देना (परियोजना कोड: IXX14969)

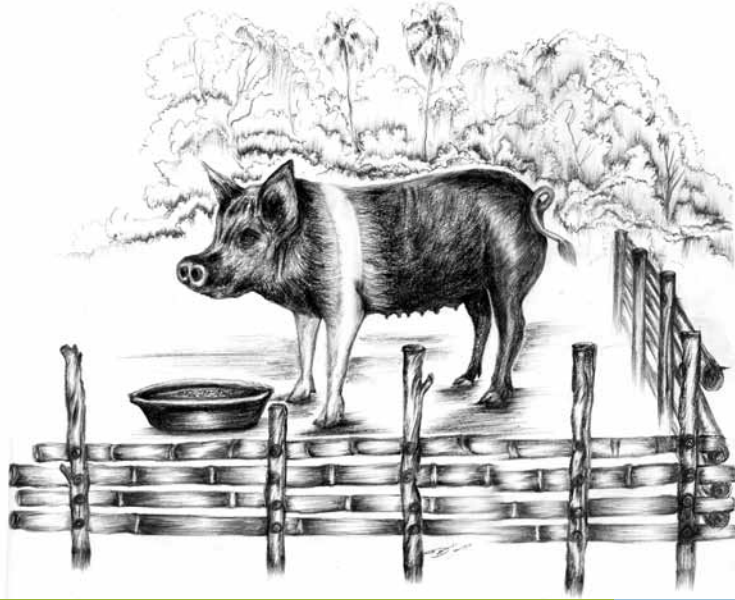
मिशा माधवन एम, केशव बर्मन, मोहन एन. एच., संतनु बनिक, आर. थॉमस, सीमा आर. पेगू और सुनील कुमार

इस परियोजना का लक्ष्य असम में छोटे धारकों के बीच विभिन्न वैज्ञानिक शूकर उत्पादन प्रथाओं को अपनाने की दर का आकलन करना है। यह क्षेत्र प्रयोग विधि के माध्यम से कुछ शैक्षिक हस्तक्षेप करने के बाद किसानों के ज्ञान और अपनाने में अंतर को देखने का इरादा रखता है। रिपोर्ट की अवधि के दौरान, तीन भाषाओं में सभी वैज्ञानिक शूकर उत्पादन प्रथाओं जैसे अंग्रेजी, हिंदी और असमिया सहित एक वीडियो स्क्रिप्ट तैयार की गई थी। फिर वीडियो शूटिंग संस्थान के खेत के साथ-साथ कामरूप ग्रामीण जिले और असम के नलबाड़ी जिले के किसानों के खेतों में की गई। यह सुनिश्चित किया गया था कि वीडियो में सभी वैज्ञानिक प्रथाओं को कवर किया गया था। डबिंग पार्ट भी किया गया था। इस वीडियो का उपयोग किसानों के ज्ञान को समृद्ध करने के लिए एक शैक्षिक उपकरण के रूप में किया जाएगा।

NASF परियोजना: आदिवासी महिलाओं (असम, मेघालय और नागालैंड) की स्थायी आजीविका के लिए उत्तर पूर्व भारत में पोर्क विपणन श्रृंखला (परियोजना कोड: OXX04734)

मिशा माधवन एम.

यह राष्ट्रीय कृषि विज्ञान कोष द्वारा वित्त पोषित एक सहयोगी परियोजना है। इस परियोजना का उद्देश्य शूकर / शूकर का मांस मूल्य निर्धारकों का विश्लेषण करना और मूल्य श्रृंखला की दक्षता को इंगित करने के लिए महत्वपूर्ण बिंदुओं का अनुमान लगाना है। अन्य उद्देश्यों में शामिल हैं, पोर्क मूल्य श्रृंखला में भाग लेने वाली महिलाओं के लिए चुनौतियों / स्वास्थ्य जोखिम पैदा करने वाले कारकों का आकलन, आदिवासी महिलाओं के लिए एक कार्य योजना और रूपरेखा तैयार करना ताकि पोर्क मूल्य श्रृंखला में भाग लेकर परिवार के साथ स्थायी आजीविका और आर्थिक सशक्तिकरण उत्पन्न हो सके। अनुकूलित ज्ञान उत्पादों को डिजाइन करना और प्रत्येक राज्य के एक जिले में पायलट पैमाने पर लागू करना और उनके परिणामों का आकलन करना। यह 1 दिसंबर, 2019 से शुरू हुई तीन साल की परियोजना है।



राष्ट्रीय कृषि नवाचार

**ITMU परियोजना: संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई (आईसीएआर की योजना 'एनएआईएफ')
संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन समिति**

सदस्य	स्थिति
डॉ. एस. राजखोवा, निदेशक (अभिनय)	अध्यक्ष
डॉ. शान्तनु बनिक, प्रधान वैज्ञानिक	सदस्य
डॉ. केशव बर्मन, प्रधान वैज्ञानिक	सदस्य
डॉ. आर. थॉमस, वरिष्ठ वैज्ञानिक और पीआई, एबीआई	सदस्य
डॉ. सुनील कुमार, वैज्ञानिक	सदस्य
श्री पी.के. नायक, एएफ और एओ	सदस्य
श्री उत्तम प्रकाश, एएओ	सदस्य
डॉ. पी. जे. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक	सदस्य सचिव

आईपी पोर्टफोलियो

बौद्धिक सम्पदा	आवेदन / पंजीकरण संख्या	नवाचार का नाम / प्रौद्योगिकी / उत्पाद / संयंत्र विविधता	आवेदन / जमा करने की तिथि	आवेदन की तिथि दी गई / पंजीकृत है
पेटेंट	TEMP/E-1/9996/2019-KOL	व्यक्ति के लिए बकरी परितारिका छवि पर कब्जा करने के लिए विधि	11.03.2019	बहुप्रतीक्षित
	296345	डिब्बाबंद मांस के लिए एक पोर्टेबल अछूता कंटेनर	29.12.2009	बहुप्रतीक्षित अंतिम पेटेंट कराया गया on 27.04.18
	201631026604	शूकर बाल आधारित जैव-सम्मिश्र और इसकी तैयारी के लिए एक विधि	04.08.2016	अर्जी दाखिल की (FER ने उत्तर दिया 2019)
	879/KOL/ 2012	शूकरों और कार्यप्रणाली में आणविक सेक्स टाइपिंग के लिए एक प्राइमर रचना	08.08.2012	विचाराधीन पेटेंट कार्यालय में प्रस्तुत किया गया (प्रक्रिया 2019 में प्राप्त और उत्तर)
	319634	एक कोरल उपकरण और जानवरों के परिवहन के लिए विधि	29.12.2009	अंतिम 31.08.2019 को पेटेंट प्रदान किया गया
ट्रेडमार्क	एक	-	20.12.2019	प्रसंस्कृत
कॉपीराइट	नौ	-	20.12.2019	प्रसंस्कृत

आगे बढ़ने की गतिविधियाँ

क्रमांक.	प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण / स्थानांतरण के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया	प्रतिभागियों की संख्या	घटना का स्थान	Remarks
1	प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण / लाइसेंसिंग पर संवेदीकरण कार्यशाला पर एक दिवसीय कार्य की दुकान	30	प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण / लाइसेंसिंग पर संवेदीकरण कार्यशाला पर एक दिवसीय कार्य की दुकान	16-12- 2019
व्यावसायीकरण के लिए की गई अन्य पहल				
1	27 फरवरी -28 फरवरी, 2019 को 'पशु कृषि के लिए किसानों की आय - प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति की राय' पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी।	प्रदर्शनी	पशु चिकित्सा विज्ञान, असम कृषि विश्वविद्यालय, खानापारा, गुवाहाटी, असम	संस्थान प्रौद्योगिकी की प्रदर्शनी
2	20-24 फरवरी 2019 तक IARI, नई दिल्ली के मेला ग्राउंड में ASC- एक्सपो। (प्रदर्शनी) प्रदर्शनी	प्रदर्शनी	IARI, नई दिल्ली	संस्थान प्रौद्योगिकी की प्रदर्शनी

आईपी प्रबंधन में क्षमता निर्माण

प्रशिक्षण / कार्यशाला / सेमिनार आदि में भाग लिया				
क्रमांक.	कार्यक्रम का नाम (प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी आदि) में भाग लिया	द्वारा आयोजित (संस्थान का नाम)	कार्यक्रम का दिन (तिथि - से)	भाग लेने वाले का नाम
1.	एनएएससी, नई दिल्ली में राष्ट्रीय कृषि नवाचार निधि (एनआईएफ) की समीक्षा समिति की बैठक।	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद	4 और 5 अक्टूबर, 2019	डॉ. आर. थॉमस
2.	नेशनल एग्री-बिजनेस एंटरप्रेन्योरशिप कॉन्क्लेव "NEH, Umiam के लिए ICAR-RC में आयोजित किया गया।	एनईएच, उमियाम के लिए आईसीएआर-आरसी	9-11 फरवरी, 2019	डॉ. एस राजखोवा डॉ. आर. थॉमस
3	ई-वराह: सुरक्षित पोर्क उत्पादन के लिए सूचना प्रणाली उत्तर पूर्वी भारत। आईटीआरए-स्टार्टअप, कार्यशाला और प्रौद्योगिकी शोकेस आईटीआरए, नई दिल्ली।	सूचना प्रौद्योगिकी अनुसंधान अकादमी (ITRA), सरकार। of India, नई दिल्ली	21-23 जुलाई, 2019	डॉ. पी. जे. दास

4	आठवें सप्ताह उद्यमिता बूटकैम्प (आभासी)	टीआईई दिल्ली-एनआरसी आईटीआरए के लिए, डिजिटल इंडिया कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली	जुलाई-सितंबर 2019	डॉ. पी. जे. दास
5	एक दिन एबीआई-ओरिएंटेशन वर्कशॉप	शूकर पर राष्ट्रीय शूकर अनुसन्धान केन्द्र	1 अक्टूबर, 2019	आईसीएआर-एनआरसीपी के सभी वैज्ञानिक कर्मचारी
6.	राष्ट्रीय शूकर अनुसन्धान केन्द्र	पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग और असम पशुधन और कुक्कुट निगम	7 से 10 नवंबर 2019 तक	संस्थान के सभी वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारी

प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी आदि का आयोजन				
क्रमांक	कार्यक्रम का नाम (प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी आदि) का आयोजन	कार्यक्रम का दिन (तिथि - से)	प्रतिभागी (सं.)	प्रतिभागी श्रेणी
1.	बौद्धिक संपदा अधिकार और जैव विविधता कानून पर कार्यशाला	19-20 फरवरी 2019	60	वैज्ञानिक / संकाय

ABI परियोजना: कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन (ABI) केंद्र (आईसीएआर की योजना योजना "NAIF") की स्थापना

ABI प्रबंधन समिति

सदस्य	एबीआई कमेटी में पद
डॉ. राजखोवा, निदेशक (अभिनय)	अध्यक्ष
डॉ. संतनु बनिक, प्रधान वैज्ञानिक	सदस्य
डॉ. मोहन एन.एच., प्रधान वैज्ञानिक	सदस्य
डॉ. पीजे दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक और पीआई, आईटीएमयू	सदस्य
डॉ. जुवार डौली, वैज्ञानिक	सदस्य
डॉ. जी. कादिरवेल, प्रमुख वैज्ञानिक, आईसीएआर-आरसी, एनईएच, उमियम	सदस्य
डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख, सीफरी, गुवाहाटी	सदस्य
श्री पी.के. नायक, एएफ और एओ	सदस्य
श्री उत्तम प्रकाश, एएओ	सदस्य
डॉ आर. थॉमस, वरिष्ठ वैज्ञानिक और पीआई, एबीआई	सदस्य सचिव

शूकर, रानी, गुवाहाटी पर आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर ने प्रौद्योगिकी आधारित व्यापार परियोजनाओं पर संचालन का समर्थन करने के लिए एक अत्याधुनिक कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन केंद्र बनाया है। इस सुविधा में 08 इनक्यूबेटर्स, एक बैठक कक्ष और उपयोगिता स्थान के लिए ऊष्मायन स्थान है। ऊष्मायन के कार्यालय की गतिविधियों को चलाने के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ कंप्यूटर और सहायक उपकरण के साथ ऊष्मायन स्थान अच्छी तरह से सुसज्जित है। बैठक कक्ष उद्यमियों को निवेशकों और वैज्ञानिकों के साथ मिलने और बातचीत करने के लिए बहुत अच्छी जगह प्रदान करता है। शूकर, रानी, गुवाहाटी पर आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर पर एग्री-बिजनेस इनक्यूबेशन (एबीआई) केंद्र का औपचारिक उद्घाटन डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डीएआरई) और महानिदेशक (आईसीएआर) द्वारा 24 नवंबर, 2019 को डॉ की उपस्थिति में किया गया था। डॉ. जॉयकृष्णा जेना, उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) और आईसीएआर के अन्य गणमान्य व्यक्ति। ABI केंद्र उद्यमियों को प्रौद्योगिकियों को मान्य और अपकेंद्रित करने और आकर्षक व्यावसायिक प्रस्ताव के लिए अंतिम उपयोगकर्ता तक अपनी पहुंच को प्रोत्साहित करने के लिए सभी आवश्यक सहायता प्रदान कर रहा है। एबीआई सेंटर अपने विचारों को वाणिज्यिक उद्यम में बदलने के लिए इनोवेटर और शोधकर्ताओं की सुविधा प्रदान कर रहा है। केंद्र उद्यमिता कौशल विकास गतिविधियों सहित ऊष्मायन और व्यवसाय विकास कार्यक्रमों पर केंद्रित है।



डॉ त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डीएआरई) और महानिदेशक (आईसीएआर)
द्वारा ICAR-NRCP के ABI केंद्र का उद्घाटन

मेसर्स आरोहण फूड्स प्रा. लिमिटेड, गुवाहाटी; मेसर्स सिम्बायोटिक फूड्स प्रा। लिमिटेड, तेजपुर; 24 नवंबर, 2019 को डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डीएआरई) और महानिदेशक (आईसीएआर) की उपस्थिति में मैसर्स सयूरी फार्म्स, गुवाहाटी और मैसर्स अमोरा फूड्स, गुवाहाटी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों को मान्यताओं और प्रौद्योगिकियों के अप-स्केलिंग के लिए आवश्यक समर्थन प्रदान करने और एक आकर्षक व्यवसाय प्रस्ताव के रूप में उपयोगकर्ता तक अपनी पहुंच को प्रोत्साहित करने के लिए परिकल्पना की गई थी। यह समझौता ऊष्मायन और व्यावसायिक विकास कार्यक्रम पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें व्यावसायिक शूकर पालन के क्षेत्रों में उद्यमिता कौशल विकास गतिविधियां शामिल हैं; अस्पष्टीकृत बाजारों के लिए दरवाजे ढूँढकर पोर्क में संबद्ध सेवा क्षेत्रों और मूल्यवर्धन। इन समझौतों के माध्यम से, एबीआई सेंटर का उद्देश्य भावी उद्यमियों की मदद करना है, जो तकनीकी परामर्शी, अवसररचना सुविधा, विशेषज्ञों के मार्गदर्शन और प्रशिक्षण के आधार पर प्रौद्योगिकी आधारित व्यावसायिक विचारों को विकसित करने और स्थायी उद्यम स्थापित करने के लिए सक्रिय और मूल्य वर्धित व्यापार सहायता प्रदान करते हैं।



ABI में शामिल उद्यमियों को प्रौद्योगिकी का स्थानांतरण

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, माननीय सचिव (डीएआरई) और महानिदेशक (आईसीएआर) ने भी आईसीएआर-एनआरसीपी द्वारा विकसित ग्रामीण शूकर वध गृह प्रौद्योगिकी का अनावरण किया और आरोहण फूड्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लोकप्रिय यह तकनीक ग्रामीण क्षेत्रों में मांस संचालकों को प्रदान करती है। फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के दिशानिर्देशों के अनुसार एक सस्ती कीमत पर बेहतर उपज के लिए बेहतर स्वास्थ्य की स्थिति सुनिश्चित करने के लिए फ्लोर-ड्रेसिंग ऑपरेशन करना।



1. एबीआई इनक्यूबेट के लिए ओरिएंटेशन वर्कशॉप का आयोजन

शूकर पर आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर ने एग्री-बिजनेस इनक्यूबेशन यूनिट के तहत नए शामिल किए गए उद्यमियों के लिए 01 अक्टूबर, 2019 को एक दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यशाला का आयोजन किया है। इस कार्यशाला में 12 कंपनियों ने भाग लिया, जिन्होंने कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन (एबीआई) केंद्र के माध्यम से इनक्यूबेटर समर्थन के लिए एक्सप्रेस ऑफ इंटरैस्ट (ईओआई) में भाग लिया है। कृषि-व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार-विमर्श किया गया। भारत में कृषि-उद्यमिता परिदृश्य; एग्री-बिजनेस को बढ़ावा देने के लिए एबीआई सपोर्ट मैकेनिज्म; और धन के स्रोत और उद्यमियों के लिए वित्त तक पहुंच। कार्यशाला में एक के बाद एक नए-नए शामिल किए गए उद्यमियों के साथ उनके व्यापार प्रस्तावों को व्यवस्थित करने के लिए बातचीत की गई।



अभिविन्यास कार्यशाला से झलकें

2. एग्रीनोवेट के सहयोग से 'प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण लाइसेंसिंग पर संवेदनशीलता' पर कार्यशाला

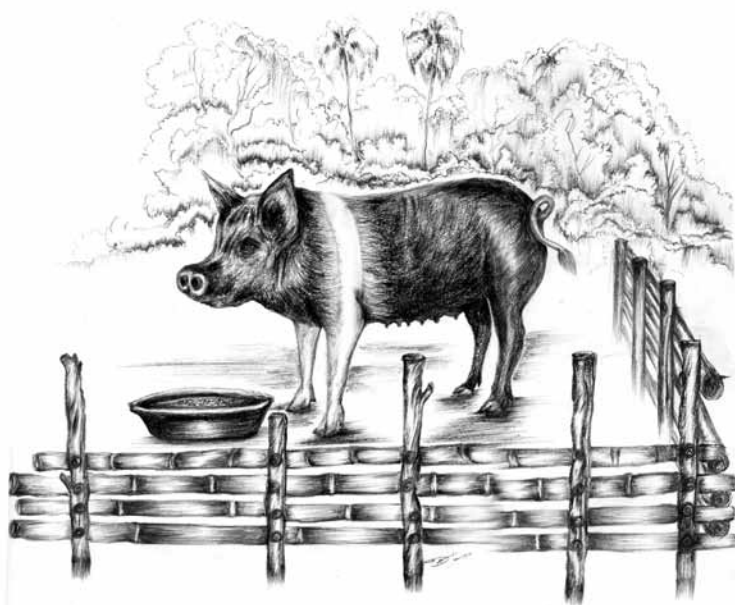
एग्री-बिजनेस इन्व्यूवेशन (ABI) सेंटर ऑफ़ ICAR- नेशनल रिसर्च सेंटर ऑन पिग, रानी, गुवाहाटी ने 16 दिसंबर 2019 की 16 तारीख को एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली के सहयोग से एक दिवसीय 'प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण और लाइसेंसिंग पर कार्यशाला' का आयोजन किया। Agrinnovate इंडिया लिमिटेड का प्रतिनिधित्व डॉ. सुधा मैसूर, सीईओ और श्री द्वारा किया गया। अमित कलकल, बिजनेस मैनेजर 'प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण और एनएआरएस प्रणाली में ऊष्मायन और एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के माध्यम से प्रौद्योगिकी हस्तांतरण प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा की गई। डॉ. सुधा मैसूर ने ICMUs, ZTMC, BPDs और ABI आदि की स्थापना के माध्यम से अनुसंधान गतिविधियों से उत्पन्न बौद्धिक गुणों की रक्षा, प्रबंधन और व्यावसायीकरण करने में ICAR द्वारा उठाए गए विभिन्न कदमों के बारे में सदन को जानकारी दी। प्रौद्योगिकियों के मूल्यांकन और मूल्य निर्धारण के लिए माना जाता है; प्रौद्योगिकी प्रकटीकरण प्रक्रिया; प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण, लाइसेंसिंग, अनुबंध अनुसंधान और परामर्शी परियोजनाओं के बारे में संशोधित दिशानिर्देश; और व्यावसायीकरण के लिए एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के माध्यम से प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए प्रक्रिया प्रवाह।



प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण लाइसेंसिंग पर संवेदीकरण कार्यशाला

एबीआई यूनिट के तहत इनक्यूबेटी प्रोफाइल

क्रमांक	कंपनी का नाम / व्यक्तिगत	व्यवसाय उद्यम का स्थान	संस्थागत सहायता का क्षेत्र	ब्रांड का नाम
1	आरोहण फूड्स प्राइवेट लिमिटेड	जन रोड, गीतानगर, कामरूप- 781021	वाणिज्यिक शूकर प्रजनन फार्म, पोर्क प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना, ग्रामीण बूचड़खानों की स्थापना	च्चाइस पोर्क, डेली पोर्क
2	अमोरा फूड्स प्राइवेट लिमिटेड	लोखरा रोड, गुवाहाटी, असम- 781090	पोर्क प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना	इंटरनेशनल हाउस ऑफ सॉसेज
3	सउरी फार्म	बेटकुची, एनएच 37, लोकहरा, गुवाहाटी -34	वाणिज्यिक प्रजनन फार्म की स्थापना, पोर्क प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना	Pigzee के
4	सिम्बायोटिक फूड्स प्राइवेट लिमिटेड	सोनितपुर, असम- 78 4105	कृत्रिम गर्भाधान सहायता की स्थापना, पोर्क प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना	--
5	पूर्वोत्तर पशुधन खेती प्राइवेट लिमिटेड	पूरी, गढ़वाल, उत्तराखंड- 246149	पोर्क प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना	--
6	निरब मेढी	फाटाशिल, गुवाहाटी, असम- 781009	पोर्क प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने में सहायता	--
7	बोरलिट फार्म	दिसपुर गुवाहाटी- 781005	एक छोटी प्रोसेसिंग यूनिट की स्थापना, एक छोटे पैमाने की स्थापना पोर्क प्रसंस्करण इकाई	--



जनजातीय उप-योजना
के तहत संस्थान ग्राम
संपर्क कार्यक्रम

जनजातीय उप-योजना के तहत संस्थान ग्राम संपर्क कार्यक्रम

केशव बर्मन, एस. राजखोवा, बीसी दास, एस. बनिक, मोहन एनएच, रफीकुल इस्लाम, पी. जे. दास, आर. थॉमस, एस. आर. पेगू, जोवर डेली, राजीव देब, सुनील कुमार, सौविक पॉल, कल्याण डे, अजय यादव, सतीश कुमार, जया और मिशा माधवन एम।

उत्तर पूर्वी क्षेत्र में रहने वाले लोग ज्यादातर मांसाहारी हैं और आबादी के आदिवासी उप-वर्ग पोर्क और पोर्क उत्पादों पर निर्भर हैं। इस जनजातीय क्षेत्र में लगभग हर परिवार अपनी आजीविका के समर्थन के लिए कुछ शूकर (3-10 नग) रखता है। देश की कुल शूकर आबादी (9.06 मिलियन, पशुधन जनगणना, 2019) का लगभग 40% उत्तर पूर्वी क्षेत्र में है। शूकर पर आईसीएआर-राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र कामरूप (ग्रामीण) जिले में रानी में जनजातीय क्षेत्र में स्थित है। संस्थान न केवल उत्तर पूर्वी क्षेत्र में, बल्कि पूरे देश में शूकर उत्पादन में उत्कृष्टता लाने के जनादेश के साथ आदिवासी समुदाय के कल्याण के लिए अपनी सेवाओं को समर्पित कर रहा है। इसलिए, संस्थान की सभी गतिविधियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जनजातीय समुदायों के कल्याण से संबंधित हैं, जिनके लिए बजट को सुव्यवस्थित किया जाता है।

संस्थान आदिवासी लाभार्थियों को संस्थान के टीएसपी योजना के मासिक आधार पर ध्यान केंद्रित फीड (1 किग्रा / शूकर) और पूरक के साथ 2-3 महीने की उम्र के प्रजनन योग्य पिगलेट प्रदान कर रहा है। संस्थान नियमित रूप से गोद लिए गए गाँवों में शूकरों के स्वास्थ्य, विकास और प्रबंधन की निगरानी कर रहा है और आवश्यक होने पर आवश्यक स्वास्थ्य कवरेज और एआई सेवाएं दे रहा है।

शूकर पर आईसीएआर-एनआरसी द्वारा गाँवों को गोद लिया

वर्तमान में खूँटी पर ICAR-NRC 07 गाँवों को गोद ले रहा है, जैसे रानीपुर ब्लॉक के मोइरपुर, गणपति, सज्जनपारा, कुमारबाड़ी, गैरोपरा, कामरूप जिले के जरबोरी ब्लॉक के अंतर्गत गोसाईहाट गाँव और असम के गोलपारा जिले के दुधौनी ब्लॉक के अंतर्गत खारा पार II गाँव।

रिपोर्ट अवधि के दौरान आयोजित टीएसपी कार्यक्रम:

2019-2020 के दौरान आयोजित स्वास्थ्य शिविरों और जागरूकता कार्यक्रम और अन्य वितरण कार्यक्रम की सूची

Sl. No	कार्यक्रम	दिनांक	क्रियाएँ	गुल्लक की नहीं	किसानों की संख्या में फायदा हुआ
1	असम के उत्तरी लखीमपुर जिले के जोहिंग गाँव में शूकर के स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन	14-02-19	200 खुराक कृमिनाशक 200 खुराक मरहम 200 खुराक स्वाइन बुखार वैक्सीन	-	80
2	असम के धेमाजी जिले के गोगामुख, तिगरी गाँव में शूकर के स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन	15-02-19	200 खुराक कृमिनाशक 200 खुराक मरहम 200 खुराक स्वाइन बुखार वैक्सीन	-	100
3	असम के सोनितपुर जिले के तेजपुर में शूकर के स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन	16-02-19	35 खुराक कृमिनाशक 25 खुराक मरहम	-	50

4	सत्तारगाँव, सज्जन पारा गाँव, पिटबारी, थंगापारा गाँव, रानी, कामरूप जिले, असम के आदिवासी लाभार्थियों के लिए 16-05-19 को आयोजित टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	03-04-19	लाभार्थियों के बीच 810 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	42
5	संस्थान के टीएसपी कार्यक्रम के तहत वस्तुओं का वितरण	10-05-2019	अवरक्त थर्मामीटर वजन का संतुलन	-	50
6	सत्तारगाँव, सज्जन पारा गाँव, पिटबारी, थंगापारा गाँव, रानी, कामरूप जिले, असम के आदिवासी लाभार्थियों के लिए 16-05-19 को आयोजित टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	16-05-19	लाभार्थियों के बीच 810 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	42
7	गोलपारा में गुल्लक और चारा वितरण कार्यक्रम का संचालन	29-05-19	300 किलोग्राम शूकर फ़ीड वितरित की गई है कृमिनाशक, मलहम वितरित किया गया है	क्रॉसब्रेड पिगेट्स की 10 संख्या	40
8	सज्जनपुर, गाँव, बेलगुरी गाँव, रानी, कामरूप जिले, असम के आदिवासी लाभार्थियों के लिए 20-08-19 को टीएसपी के तहत पिगलेट और फ़ीड वितरण कार्यक्रम	20-08-19	लाभार्थियों के बीच 210 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	क्रॉसब्रेड पिगेट्स की 7 संख्या	13
9	23-0 program-19 को मायापुर, सत्तारगाँव, गणपति, सज्जनपारा गाँव, रानी, कामरूप जिले, असम के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत पिगलेट और फ़ीड वितरण कार्यक्रम	23-08-19	लाभार्थियों के बीच 900 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	क्रॉसब्रेड पिगेट्स की 30 संख्या	32

10	सत्तारगाँव, जोनाकी एसएचजी ग्रुप विलेज पिटबरी, थंगापारा गाँव के सुरजयमुखी एसएचजी, गणपति गाँव के ओइकेटिक एसएचजी, सज्जनपारा गाँव रानी, कामरूप जिले, असम के सुरजयमुखी एसएचजी के लिए 7-08-19 को आयोजित टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	07-08-19	लाभार्थियों के बीच 810 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	49
11	टीएसपी के तहत पिगलेट और फ़ीड वितरण कार्यक्रम 04-09-19 को ज़ारबरी ब्लॉक, रानी, कामरूप जिले, असम के गोसाईंहाट गाँव के आदिवासी लाभार्थियों के लिए आयोजित किया गया।	04-09-19	लाभार्थियों के बीच 150 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	8 क्रास पिगलेट	01
12	संस्थान के टीएसपी कार्यक्रम के तहत वस्तुओं का वितरण ग्राम सज्जनपारा, मायापुर गाँव और जरबरी के गोसाईंहाट गाँव के लाभार्थी	4-9-2019	प्रत्येक 1000 किलोग्राम क्षमता का वजन-02 200 किलोग्राम की क्षमता का वजन -01	-	03
13	सत्तारगाँव के जनजातीय लाभार्थियों के लिए 7-08-19 को आयोजित टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम, जोनाकी एसएचजी ग्रुप विलेज पिटबाड़ी, थंगापारा गाँव के सुरजयमुखी एसएचजी, गणपति गाँव के ओइकेटिक एसएचजी, मोरपुर गाँव की मा मानशा एसएचजी, सज्जनपारा गाँव की सुरजयमुखी एसएचजी कामरूप जिला, असम	07-08-19	लाभार्थियों के बीच 1140 किलोग्राम शूकर फ़ीड वितरित की गई	-	61
14	ग्राम बेलपुरी और सज्जनपारा के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	20-08-19	लाभार्थियों के बीच 210 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	13

15	ग्राम गणपति, बेलगुरी, सज्जनपारा, मैरापुर के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	23-08-19	लाभार्थियों के बीच 900 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	37
16	सत्तारगाँव, पिटबरी, थंगापारा गाँव, गणपति गाँव, मोइरापुर गाँव, सज्जनपारा गाँव और सत्तारगाँव के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	19-09-19	लाभार्थियों के बीच 1140 किलोग्राम शूकर फ़ीड वितरित की गई	12 क्रॉसब्रेड पिलेट्स (जोनाकी और सूर्यमुखी एसएचजी से वापस लौटे)	61
17	12 क्रॉसब्रेड पिलेट्स (जोनाकी और सूर्यमुखी एसएचजी से वापस लौटे)	05-10-19	लाभार्थियों के बीच 150 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	01
18	गोसाईहाट गांव के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	05-11-19	लाभार्थियों के बीच 150 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	01
19	गणपति गाँव, मोरीपुर गाँव, सज्जनपारा गाँव के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	16-11-19	लाभार्थियों के बीच 1350 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	37
20	गैरोपारा गांव के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	07-12-19	लाभार्थियों के बीच 210 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	12
21	गोसाईहाट गाँव, थंगापारा, मोइरापुर गाँव, कुमारबाड़ी और सज्जनपारा गाँव के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	21-12-19	लाभार्थियों के बीच 1740 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	-	49
22	सत्तारगाँव, पिटबरी, थंगापारा गाँव, गणपति गाँव, मोइरापुर गाँव, सज्जनपारा गाँव और सत्तारगाँव के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत फ़ीड वितरण कार्यक्रम	29-01-2020	लाभार्थियों के बीच 1920 किलो शूकर का चारा वितरित किया गया	-	62

23	नलबाड़ी गांव के आदिवासी लाभार्थियों के लिए टीएसपी के तहत पिगलेट और फीड वितरण कार्यक्रम	14-02-2020	लाभार्थियों के बीच 180 किलोग्राम शूकर का चारा वितरित किया गया	03 शूकर के बच्चे	01
24	असम के बक्सा जिले के सिमला में शूकर का स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम	02-11-2019	250 खुराक कृमिनाशक 100 खुराक मरहम स्वाइन बुखार का टीका: 250 खनिज मिश्रण -50 कि.ग्रा	-	200
25	असम के नलबाड़ी जिले के ग्राम खटिकुची में शूकर स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम	29-11-2019	200 खुराक कृमिनाशक 100 खुराक मरहम 200 खुराक स्वाइन बुखार वैक्सीन खनिज मिश्रण -25 कि.ग्रा	-	200
26	असम के कामरूप जिले के ग्राम गणपति में शूकर का स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम	24-12-2019	50 खुराक कृमिनाशक 50 खुराक मरहम 50d Swine fever वैक्सीन खनिज मिश्रण -10 कि.ग्रा	-	50
Total			13080 kg	70	1487

TSP के तहत आयोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रम:

SN	प्रशिक्षण का नाम	दिनांक	द्वारा प्रायोजित
1	शूकर पालन के लिए अच्छा प्रबंधन अभ्यास	5-9 th अगस्त 2019	संस्थान प्रायोजित
2	शूकर पालन के लिए अच्छा प्रबंधन अभ्यास	14-18 th अक्टूबर 2019	संस्थान प्रायोजित
3	बक्सा जिले के किसानों के लिए झुस्कर के तहत शूकर में कृत्रिम गर्भाधान पर प्रशिक्षण	07-03-2020	संस्थान प्रायोजित
4	असम के बक्सा जिले के सिमला में शूकर का स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम	02-11-2019	संस्थान प्रायोजित
5	असम के नलबाड़ी जिले के ग्राम खटिकुची में शूकर स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम	29-11-2019	संस्थान प्रायोजित
6	असम के कामरूप जिले के ग्राम गणपति में शूकर का स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम	24-12-2019	संस्थान प्रायोजित
7	असम के गोलपारा जिले के दुधौनी के ग्राम खारा भाग II में शूकर का स्वास्थ्य और जागरूकता कार्यक्रम	15-02-2020	संस्थान प्रायोजित

किसानों को 2019 के दौरान टीएसपी के तहत लाभ हुआ

क्र.स.		लाभविन्त	
1	क्षमता निर्माण कार्यक्रम: प्रशिक्षण / प्रदर्शन / जागरूकता / अभिविन्यास कार्यक्रम, वैज्ञानिक-किसान संपर्क आदि	600 आदिवासी परिवारों को फायदा हुआ	वैज्ञानिक शूकर उत्पादन और प्रबंधन के प्रति प्रतिभागियों का बेहतर ज्ञान
2	कामरूप, बक्सा और गोलपारा जिलों में वैज्ञानिक शूकर पालन प्रथाओं पर तकनीकी मार्गदर्शन, इनपुट समर्थन और अनुवर्ती	700 आदिवासी परिवारों को फायदा हुआ	शूकरों के बेहतर उत्पादन प्रदर्शन
3	गोद लिए गए गांवों के आदिवासी क्षेत्रों में शूकर पालन का वितरण	350 आदिवासी परिवारों को फायदा हुआ	बेहतर पोषण शूकर और उत्पादन की स्थिति
4	गोद लिए गए गांवों के आदिवासी क्षेत्रों में शूकर के लिए शूकर बुखार के टीके और कृमिनाशक दवा का वितरण	550 आदिवासी परिवारों को लाभ हुआ	बेहतर पोषण शूकर और उत्पादन की स्थिति
5	गोद लिए गए गांवों के आदिवासी क्षेत्रों में खनिज मिश्रण का वितरण	350 आदिवासी परिवारों को लाभ हुआ	बेहतर पोषण शूकर और उत्पादन की स्थिति
6	आदिवासी गांवों में पशु स्वास्थ्य शिविर सहित वैज्ञानिक शूकर पालन प्रथाओं पर जागरूकता कार्यक्रम	450 आदिवासी परिवारों को लाभ हुआ	वैज्ञानिक शूकर उत्पादन और प्रबंधन के प्रति प्रतिभागियों का बेहतर ज्ञान
7	आदिवासी गांवों में कृत्रिम गर्भाधान	09 आदिवासी परिवारों को लाभ हुआ	स्थानीय शूकरों के आनुवांशिक मेक में सुधार करके उत्पादन प्रदर्शन में सुधार किया
8	शूकरो का वितरण	40 आदिवासी परिवारों को फायदा हुआ	आदिवासी किसानों के स्वरोजगार को बढ़ाया

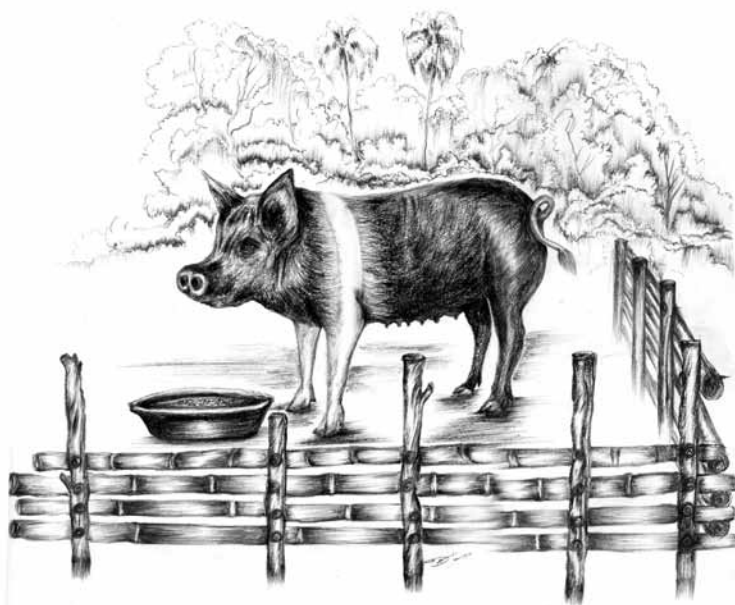
कबूतरों का वितरण, शूकर का चारा, चारा की खुराक, दवा, टीके, आदिवासी किसानों के बीच एआई की संख्या, 2019-2020 के दौरान जनजातीय क्षेत्रों में बनाई गई बीमारियों और सुविधाओं के लिए नमूनों की स्क्रीन नहीं।

क्र.स.	विवरण	इकाई	संपूर्ण
1	क्षमता निर्माण कार्यक्रम: प्रशिक्षण / प्रदर्शन / जागरूकता / अभिविन्यास कार्यक्रम, वैज्ञानिक सहभागिता आदि	संख्या	38
2	असम के कामरूप, गोलपारा, नलबाड़ी, जोरहाट, धेमाजी, लखीमपुर, बारपेटा, उदलगुरी, दरांग और बक्सा जिलों में वैज्ञानिक शूकर पालन प्रथाओं पर तकनीकी मार्गदर्शन, इनपुट समर्थन और अनुवर्ती	संख्या	1500
3	शूकर पालन का वितरण	किलोग्राम	13080
4	खनिज मिश्रण का वितरण	किलोग्राम	135
5	स्वाइन फीवर वैक्सीन का वितरण	खुराक	800
6	शूकर के लिए कृमिनाशक का वितरण	खुराक	800
7	गुल्लक का वितरण	संख्या	70





TSP के तहत आयोजित कार्यक्रमों की झलक



एआईसीआरपी और
मैगा सीड प्रोजेक्ट

एआईसीआरपी और मेगा सीड प्रोजेक्ट

शूकर पर एआईसीआरपी का मुख्य उद्देश्य जो IVth पंचवर्षीय योजना (1970-1971) में लॉन्च किया गया था, देश के विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों में शूकरों के प्रदर्शन का अध्ययन करना था। बाद में इस परियोजना को गुणवत्ता जर्मप्लाज्म सहित क्षेत्र-विशिष्ट पैकेज विकसित करने के लिए अनिवार्य किया गया था। स्वदेशी जर्मप्लाज्म के संरक्षण के लिए कुछ केंद्र अनिवार्य हैं। वर्तमान में यह कार्यक्रम देश भर के पंद्रह अलग-अलग केंद्रों में जारी है। शूकर पर आईसीएआर-राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र नियमित रूप से परिषद के परामर्श से तकनीकी और वित्तीय निगरानी के माध्यम से शूकर परियोजना पर एआईसीआरपी की प्रगति की निगरानी कर रहा है और समीक्षा बैठक आयोजित करता है। 27-28 सितंबर, 2019 को एनईएच क्षेत्र, उमियम, मेघालय के लिए आईसीएआर-रिसर्च कॉम्प्लेक्स में आखिरी एआईसीआरपी समीक्षा बैठक आयोजित की गई थी।

असम कृषि विश्वविद्यालय, खानापारा, गुवाहाटी

केरल पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,
मैत्रेहनी केंद्र, केरल

श्री वेंकटेश्वर वेटेरिनरी विश्वविद्यालय, तिरुपति

आईसीएआर-केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोवा

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर,
बरेली

तमिलनाडु पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,
कट्टुपक्कम

पशु चिकित्सा विज्ञान और पशुपालन विभाग, केन्द्रीय
कृषि विश्वविद्यालय, आइजॉल, मिज़ोरम

कृषि विज्ञान और प्राकृतिक विकास विभाग, नागालैंड
परिसर, नागालैंड

आईसीएआर-सेंट्रल आइलैंड कृषि अनुसंधान संस्थान,
पोर्ट ब्लेयर

कृषि वैज्ञानिक, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

एनईएच क्षेत्र, बरापानी के लिए आईसीएआर अनुसंधान

आईसीएआर-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान,
पूर्वी क्षेत्रीय स्टेशन, कोलकाता

के वी के गोलपाड़ा, आईसीएआर-एनआरसी ऑन शूकर

गुरु अंगद देव वेटेरिनरी और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,
लुधियाना

श्री नाना पंटिल पशु चिकित्सा विज्ञान, शिरवल



एआईसीआरपी केंद्र, खानापारा में HD-K75 शूकर



एआईसीआरपी केंद्र, मन्नथुथी में शूकर का वितरण



एआईसीआरपी केंद्र तिरुपति में नियमित स्वास्थ्य
देखभाल



एआईसीआरपी पिग सेंटर, गोवा में एआई पर प्रशिक्षण



शूकर प्रबंधन पर प्रशिक्षण, नागालैंड



एआईसीआरपी केंद्र, बरेली में पिगलेट के साथ शूकर



अंडमान स्थानीय शूकर



शूकर केंद्र, कटुपक्कम पर एआईसीआरपी की फील्ड इकाई



पिग सेंटर, इंफाल में एआईसीआरपी में रानी उत्पादक शूकर



आइजोल शूकर में शूकर



बारापानी में एआईसीआरपी में नियांग मेघा शूकर



घुंघरू ब्रीडिंग शूकर कोलकाता



वीर्य संग्रह पर प्रशिक्षण, एआईसीआरपी लुधियाना केंद्र



गोलपारा केंद्र में डुम शूकर



महाराष्ट्र के स्थानीय शूकर, एआईसीआरपी, शिरवल

मेगा सीड परियोजना

तेजी से शहरीकरण और आबादी के दबाव में वृद्धि से गुणवत्ता वाले पोर्क उत्पादन की मांग में वृद्धि हुई है। बेहतर गुणवत्ता वाले बीज स्टॉक की अनुपलब्धता, उचित मूल्य पर असंतुलित राशन, अवैज्ञानिक प्रबंधन या अपर्याप्त ज्ञान, वित्तीय सहायता के अभाव के साथ-साथ विपणन चैनल आदि की मुख्य बाधाएं मुख्य हैं। देश का क्षेत्र, इसलिए, ICAR ने 2008 में शूकर पर मेगा बीज परियोजना शुरू की है, जिसमें वर्तमान में सात अलग-अलग केंद्र हैं। स्थानीय किसानों को गुणवत्ता वाले स्वाइन जर्मप्लाज्म का उत्पादन और आपूर्ति करने के उद्देश्य से यह परियोजना शुरू की गई थी। इस परियोजना के तहत किसानों को विभिन्न प्रकार के गुल्लक का उत्पादन और वितरण किया गया। बारहवीं योजना अवधि के दौरान वितरण के लिए उन्नत किस्म के कुल 18027 पिगलेट का उत्पादन किया गया। कुल 5879 और 4403 नग। 2017-18 और 2018-19 में वितरण के लिए विभिन्न प्रकार के पिगलेट का उत्पादन क्रमशः किया गया था।

असम कृषि विश्वविद्यालय, खानापारा, गुवाहाटी

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, झारखंड

सेंटर, नागालैंड

पशु चिकित्सा विभाग, मिज़ोरम, आइजोल

केरल पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, केरला

पशु संसाधन विकास विभाग, त्रिपुरा

पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवाएं, सिक्किम



मेगा सीड सेंटर, गुवाहाटी से पिगलेट का वितरण



रांची में नए 2 लाइन ब्रीडर द्वारा शूकर पालन



मन्थुथी व्हाइट ने मेगा सीड सेंटर



मेगा बीज केंद्र, नागालैंड



त्रिपुरा केंद्र में पिगलेट के साथ शूकर



वितरण के लिए LWY पिगलेट, मेगा सीड सेंटर,
आइज़ॉल



एचडीके 75 किस्म, शूकर बीज केंद्र



कृषि विज्ञान केन्द्र गतिविधियां

कृषि विज्ञान केंद्र गतिविधियां

प्रशिक्षण

वर्ष के दौरान कुल 110 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। 70 प्रशिक्षण कार्यक्रमों में किसानों और खेत की महिलाओं के लिए प्रशिक्षण; 11 ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण - नग। 2191 प्रतिभागियों को कवर करने वाले 311 प्रतिभागियों को कवर करना; विस्तार अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण - 3 नग। 83 प्रतिभागियों को कवर; 332 प्रतिभागियों को शामिल करते हुए 09 व्यावसायिक प्रशिक्षण; 532 प्रतिभागियों को शामिल करते हुए 17 प्रायोजित प्रशिक्षण



खेत परीक्षण (OFT) पर

कृषि विज्ञान केंद्र गोलपारा ने नव सृजित कृषि प्रौद्योगिकियों पर 12 ऑन फार्म ट्रायल (OFT) आयोजित किया है।

सामने ऑनलाइन प्रवेश (FLD)

FLD-1: पल्स क्रॉप्स का फ्रंट लाइन प्रदर्शन

के. वी. के. गोलपारा ने विभिन्न स्थानों पर किसान के क्षेत्र में नई जारी प्रौद्योगिकियों की उत्पादन क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए हस्तस्क्रू के तहत क्लस्टर फ्रंटलाइन प्रदर्शन (FLDs) का आयोजन किया। किसानों के खेत में दलहनी फसलों पर दो नंबर एफएलडी का आयोजन 2019-20 के दौरान किया गया। हरे चने की किस्म स्तष्ट 16 और काले चने की किस्म PU 31 ने प्रत्येक 20ha भूमि में प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में कुल 83 किसान दलहन किसान शामिल हुए। प्रदर्शन के परिणाम सारणीबद्ध रूप में वर्णित हैं

FLD-2: तिलहन फसलों का फ्रंट लाइन प्रदर्शन

के. वी. के. गोलपारा ने अलग-अलग स्थानों पर किसान के क्षेत्र में नव जारी प्रौद्योगिकियों की उत्पादन क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए तिलहन और तेल पाम (NMOOP) पर राष्ट्रीय मिशन के तहत क्लस्टर फ्रंटलाइन प्रदर्शन (FLDs) का आयोजन किया। के. वी. के. गोलपारा ने प्रदर्शन के माध्यम से विभिन्न तकनीकों के प्रसार के लिए किसान और विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए खेती और विस्तार गतिविधियों का भी आयोजन किया। सीसमम ST 1683 पर क्लस्टर FLD के लिए कुल 10 हेक्टेयर क्षेत्र का उपयोग किया गया था। प्रदर्शन का विवरण नीचे संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह

विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून, 2019 को केवीके गोलपारा द्वारा स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी में रैनबो शावर (राधाशूरा) की रोपाई के साथ पेड़ों के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए दुधनोई के सार्वजनिक श्मशान घाट के आसपास पौधारोपण किया गया।



अंतराष्ट्रीय योग दिवस का उत्सव

21 जून 2019 को केवीके समिति के हॉल में अंतराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर एक योग शिविर का आयोजन किया गया था जहाँ केवीके गोलपारा के सभी कर्मचारियों ने भाग लिया।



अवेयरनेस कैपों जल शक्ति अभियान

2006 से KVK गोलपारा की स्थापना के बाद से सूक्ष्म सिंचाई, संरक्षण संरचनाओं और वाटरशेड प्रबंधन और वनीकरण के माध्यम से वर्षा जल संचयन और पुनर्चक्रण की आवश्यकता के बारे में जागरूकता नियमित रूप से की जाती है। 2019-20 के दौरान, शक्ति अभियान पर एक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।



उर्वरक आवेदन जागरूकता कार्यक्रम:

केवीके गोलपारा द्वारा फर्टिलाइजर एप्लिकेशन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन ब्रह्मपुत्र वैली फर्टिलाइजर कॉर्पोरेशन लिमिटेड, नामरूप में जनमन्दिर, में 22/10/2019 को किया गया जहां 207 किसानों ने भाग लिया। कृषि उत्पादकता को बनाए रखने के लिए विभिन्न मानकों के आधार पर उर्वरक पोषक तत्वों के इष्टतम उपयोग पर किसानों के बीच ज्ञान का प्रसार करने और किसानों को उर्वरक उपयोग और प्रबंधन के क्षेत्र में नए विकास के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित किया गया।



बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण ड्राइव:

केवीके गोलपारा में 17/09/2019 को बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण जागरूकता अभियान और अंकुर वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 270 जनो की भागीदारी से संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अंत में किसानों को वृक्षारोपण के लिए जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न फलों के 7300 नगों का वितरण किया गया।



स्वच्छता ही सेवा, 2019 पर जागरूकता कार्यक्रम

केवीके गोलपारा द्वारा स्वच्छता ही सेवा पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 02/10/2019 को किया गया। किसानों और 43 नग छात्रों की। स्वच्छ भारत सेवा 2019 का विषय प्लास्टिक कचरा जागरूकता और प्रबंधन था। भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा सभी नागरिकों को एकल उपयोग प्लास्टिक से अपने घर, कार्यालयों और कार्य स्थलों को हटाने के आग्रह को ध्यान में रखते हुए, केवीके गोलपारा ने किसानों और छात्रों को जागरूक करने का प्रयास किया और एकल-उपयोग के खतरनाक प्रभावों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया।

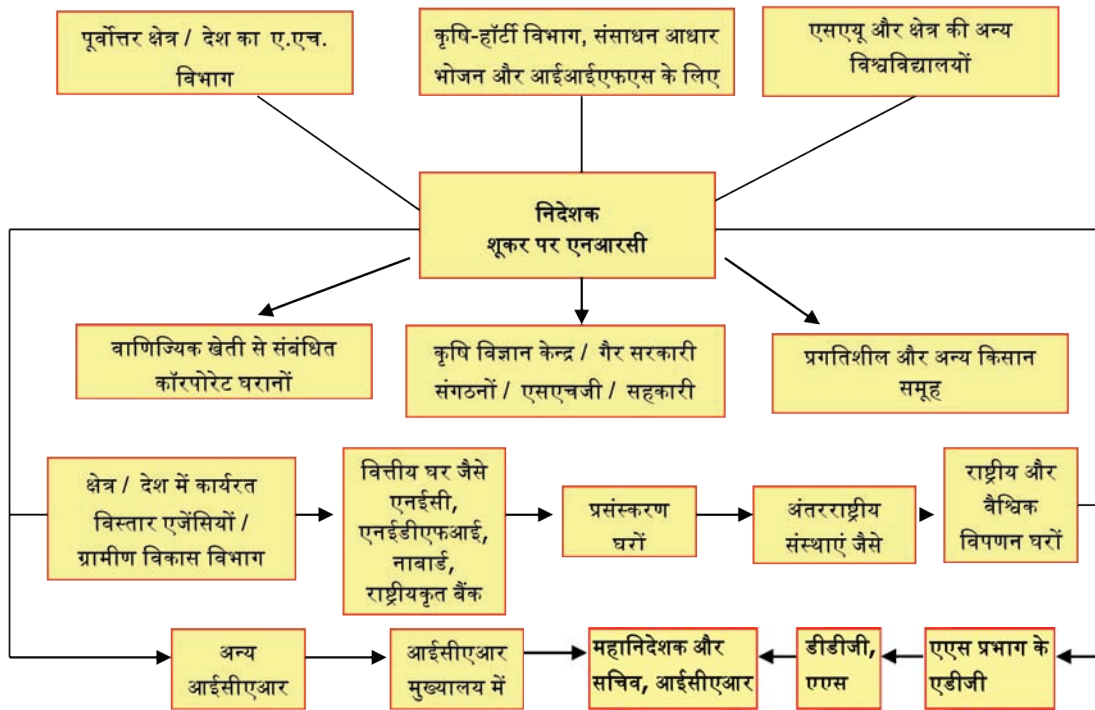


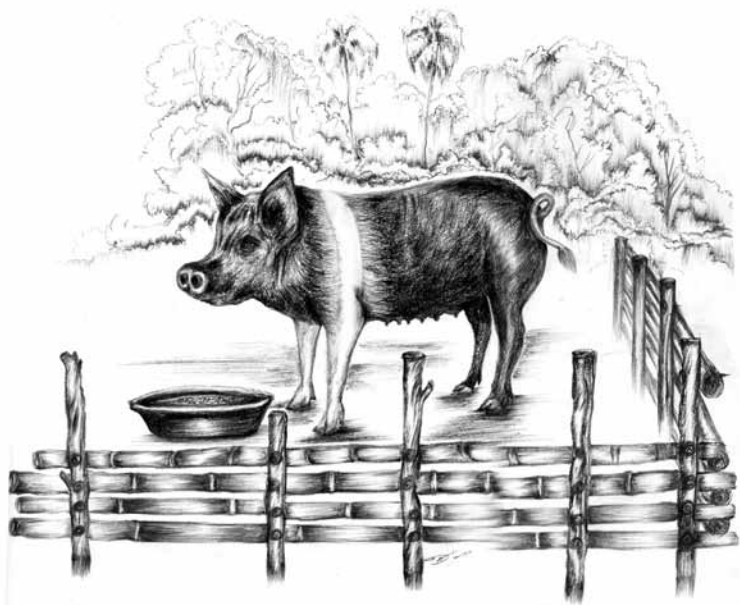
राष्ट्रीय एकता दिवस:

राष्ट्रीय एकता दिवस 31 अक्टूबर 2019 को केवीके गोलपारा में मनाया गया। कार्यक्रम में केवीके, गोलपारा के स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया।



संकलन





बैठकेँ और अन्य गतिविधियाँ

बैठकें और अन्य गतिविधियाँ

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक (RAC)

सदस्य	आरएसी में स्थिति
डॉ. एन. बालारामन, पूर्व कुलपति, तनुवास	अध्यक्ष
डॉ. आर.एस. गांधी सहायक महानिदेशक (एपी एंड बी), आईसीएआर, नई दिल्ली	सदस्य
डॉ. आर.एन. गोस्वामी पूर्व डीन, कॉलेज ऑफ़ वेटेरनरी साइंस, एएयू खानपारा, गुवाहाटी -781022	सदस्य
डॉ. सी. राजखोवा पूर्व निदेशक आईसीएआर, मिथुन अनुसन्धान केन्द्र, नागालैंड	सदस्य
डॉ. जे. अब्राहम पूर्व निदेशक, मांस प्रसंस्करण में उत्कृष्टता केंद्र, केयू मन्नुथी / शेरोन, मन्नुथी, त्रिशूर, केरल -665651	सदस्य
डॉ. आर.सी. उपाध्याय पूर्व प्रमुख, डेयरी कैटल फिजियोलॉजी डिवीजन भा.कृ.अनु.प.- रा.डे.अनुसन्धान, करनाल -132001, हरियाणा	सदस्य
डॉ. (श्रीमती) जेंसी गुप्ता पूर्व प्रमुख, डेयरी विस्तार प्रभाग भा.कृ.अनु.प.- रा.डे.अनुसन्धान, करनाल -132001, हरियाणा	सदस्य
डॉ. स्वराज राजखोवा निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र	सदस्य
माननीय कृषिमंत्री द्वारा नामित सदस्य (क) डॉ. धनेश्वर डेका, भुंकुची, नलबाड़ी, असम (ख) डॉ. प्रेमा दत्ता, धेमाजी, असम	सदस्य
डॉ. के. बर्मन प्रमुख वैज्ञानिक, शूकर पर भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र	सदस्य सचिव

शूकर पर भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र की XIII वीं अनुसंधान सलाहकार समिति (RAC) की बैठक 19-20 अगस्त, 2019 को डॉ. एन. बालारामन, पूर्व कुलपति, TANUVAS की अध्यक्षता में हुई थी। इससे पहले, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र के निदेशक, डॉ. स्वराज राजखोवा ने अध्यक्ष, सभी सदस्यों और वैज्ञानिक कर्मचारियों का स्वागत किया और संस्थान की सलामी उपलब्धियों और भविष्य की शोध योजना के बारे में मूल्यांकन किया। डॉ. केशव बर्मन, सदस्य सचिव ने संस्थान के अनुसंधान कार्यक्रमों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी और पिछली आरएसी बैठक की सिफारिशों पर कार्रवाई की गई रिपोर्ट। प्रत्येक अनुसंधान परियोजना को घर की टिप्पणियों के बाद कार्यक्रम के अनुसार प्रस्तुत किया गया था। संस्थान के वैज्ञानिकों ने चल रहे शोध कार्यों और उनकी प्रगति को प्रस्तुत किया। समिति ने सभी कार्यों का गंभीर रूप से मूल्यांकन किया और अपनी बहुमूल्य टिप्पणियाँ दीं। इसके अलावा, माननीय सभापति और सदस्यों को 20 अगस्त, 2020 को संस्थान परिसर में एक वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लिया गया। उन्होंने संस्थान के दत्तक शूकर गांवों में भी यात्रा की। कामरूप जिले के थंगापारा, बेलगुरी और गणपति और शूकर किसानों के साथ बातचीत की। आरएसी के माननीय अध्यक्ष और सदस्य भी चयनित किसानों को गुल्लक और चारा वितरित करते हैं।



13 वीं आरएसी की बैठक प्रगति पर है

संस्थान अनुसंधान परिषद की बैठक (आईआरसी)

शूकर पर आईसीएआर-एनआरसी की XIIIth रिसर्च रिसर्च काउंसिल की बैठक 15 मई, 2019 को निदेशक (कार्यवाहक), डॉ. स्वराज राजखोवा की अध्यक्षता में हुई। अध्यक्ष, IRC ने डॉ. विनीत भसीन, प्रमुख वैज्ञानिक, ICAR मुख्यालय, नई दिल्ली और संस्थान के वैज्ञानिकों का स्वागत किया। प्रत्येक अनुसंधान परियोजनाओं का प्रस्तुतीकरण घर की टिप्पणियों के बाद किया गया। अध्यक्ष ने जोर दिया कि वैज्ञानिकों को बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान करने में महत्वपूर्ण होना चाहिए और उल्लेख किया कि नई परियोजनाओं को संस्थान के आदेश का पालन करना चाहिए। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि वैज्ञानिकों को उच्च प्रभाव कारक वाले शोध पत्रिकाओं में गुणवत्ता के पत्र प्रकाशित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने चाहिए। बैठक के दौरान, पूर्ण की गई परियोजनाओं के परिणाम, चल रहे संस्थान परियोजनाओं की प्रगति और नए परियोजना प्रस्तावों के तकनीकी कार्यक्रमों को पीआई द्वारा प्रस्तुत किया गया और पूरी तरह से समीक्षा की गई।



13 वीं आईआरसी बैठक प्रगति पर

संस्थान प्रबंधन समिति (आईएमसी)

सदस्य	पद
डॉ. स्वराज राजखोवा निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र	अध्यक्ष
डॉ. आर. एन. गोस्वामी एक्स-डीन, सीवीएससी, एएयू, खानापारा	सदस्य
डॉ. एस. बंदोपाध्याय प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-आईवीआरआई, ईआरएस, पश्चिम बंगाल	सदस्य
डॉ. बी. मोहंती प्रमुख वैज्ञानिक और प्रभाग के प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, कोलकाता	सदस्य
डॉ. जी. कादिरवाल प्रमुख वैज्ञानिक, एनईएच क्षेत्र, उमियाम, मेघालय के लिए	सदस्य
श्री प्रशांत कुमार सीनियर फाइनेंस एंड अकाउंट ऑफिसर एनईएच क्षेत्र, उमियाम, मेघालय के लिए आईसीएआर-आरसी	सदस्य
डॉ. एस. बनिक प्रमुख वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र	सदस्य सचिव

17 वीं संस्थान प्रबंधन समिति की बैठक 3 जून 2019 को संस्थान में आयोजित की गई थी। बैठक के दौरान, अध्यक्ष ने विभिन्न शोध प्रयासों सहित संस्थान की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। पूर्व बैठक की सिफारिशों के लिए की गई कार्रवाई की पुष्टि की गई और आईएमसी द्वारा सहमति व्यक्त की गई। बैठक में विभिन्न एजेंडा आइटम जैसे उपकरणों की खरीद, बुनियादी ढांचे के विकास आदि पर चर्चा की गई और प्रस्तावों की सिफारिश आईएमसी द्वारा की गई।



प्रगति पर 17 वीं आईएमसी की बैठक

संयुक्त सलाहकार मशीनरी (JCM)

संयुक्त सलाहकार मशीनरी की योजना सरकार और नियोक्ता के बीच सभी विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए कर्मचारी पक्ष और आधिकारिक पक्ष के प्रतिनिधियों के बीच रचनात्मक संवाद का एक मंच है। यह योजना 1966 में सरकार द्वारा शुरू की गई थी। भारत सामंजस्यपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से और आम चिंता के मामलों में नियोक्ता और कर्मचारियों के रूप में केंद्र सरकार के बीच सहयोग का सबसे बड़ा उपाय हासिल करने के उद्देश्य से और अच्छी तरह से होने के साथ संयुक्त रूप से सार्वजनिक सेवा की दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से। वे कार्यरत हैं। यह योजना एक गैर वैधानिक है जो कर्मचारी पक्ष और आधिकारिक पक्ष के बीच पारस्परिक रूप से सहमत है।

संयुक्त सलाहकार मशीनरी के तहत, संस्थान संयुक्त कर्मचारी परिषद (IJSC) निम्नलिखित सदस्यों के साथ संस्थान में कार्य कर रहा है।

स्टाफ साइड सदस्य		
1.	श्री उत्तम प्रकाश, एएओ, आईसीएआर-एनआरसीपी, गुवाहाटी	CJSC सदस्य और IJSC सदस्य (प्रशासनिक श्रेणी)
2.	एर बेंजामिन कामन, तकनीकी अधिकारी, केवीके, दुधोई, गोलपारा	IJSC सदस्य सचिव और सदस्य (तकनीकी श्रेणी)
3.	मिस जोनाली नाथ, यूडीसी, आईसीएआर-एनआरसी पीग, गुवाहाटी पर	सदस्य (प्रशासनिक श्रेणी))
3.	डॉ राजीव कुमार दास, सीनियर तकनीकी सहायक, आईसीएआर-एनआरसीपी, गुवाहाटी	सदस्य (प्रशासनिक श्रेणी)
4.	श्री ध्रुवा राभा, एसएसएस, केवीके, गोलपारा	सदस्य (श्रेणी)
5.	श्री नरेन चन्द्र डेका, एसएसएस, आईसीएआर-एनआरसी पीग, गुवाहाटी	सदस्य (श्रेणी)
आधिकारिक वीडियो सदस्य		
1.	डॉ पी.जे.दास, सीनियर साइंटिस्ट, आईसीएआर-एनआरसीपी, गुवाहाटी	सदस्य सचिव
2.	डॉ सीमा रानी पेगु, सीनियर साइंटिस्ट, आईसीएआर-एनआरसीपी, गुवाहाटी	सदस्य
3.	डॉ हितू चौधरी, एसीटीओ, केवीके, गोलपारा	सदस्य
4.	डॉ एस.बानिक, आई / सी एओ, आईसीएआर-एनआरसीपी, गुवाहाटी	सदस्य
5.	श्री पी.के. नायक, एएफ और एओ, आईसीएआर-एनआरसीपी, गुवाहाटी	सदस्य

आंतरिक शिकायत समिति (महिला प्रकोष्ठ)

आंतरिक शिकायत समिति का अभिप्राय किसी संगठन की सभी महिला कर्मचारियों की सुरक्षा और उनकी सुरक्षा करना है। यह कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न पर सभी शिकायतों का ध्यान रखता है और शिकायतों के निवारण के लिए कार्रवाई की जाती है। यह किसी व्यक्ति द्वारा अधिकार और एक सेक्स से संबंधित किसी भी कार्य या आचरण का भी ध्यान रखता है जो वाहक विकास की खोज में समान अवसर से इनकार करता है या कार्यस्थल पर वातावरण को शत्रुतापूर्ण बनाता है या किसी अन्य व्यक्ति से संबंधित व्यक्ति को डराने, केवल देखभाल के आधार पर लिंग।

समिति की संरचना

डॉ सीमा रानी पेगु, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी	अध्यक्ष
श्रीमती रितु बोरो बोरा, एडवोकेट, गुवाहाटी	सदस्य (बाहरी)
डॉ पोली सैकिया, एसएमएस, केवीके, दुधनोई, गोलपारा	सदस्य
डॉ अल्पना दास, आई / सी हेड और सीनियर साइंटिस्ट, सीपीसीआरआई रीजनल स्टेशन, कहिकुची, गुवाहाटी	सदस्य
श्रीमती जोनाली नाथ, यूडीसी, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र	सदस्य
प्रशासनिक अधिकारी I / C प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी	सदस्य सचिव

शूकर पालन पर आईसीएआर-राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र के लिए माननीय केंद्रीय समझौता ज्ञापन, मत्स्य मंत्रालय, पशुपालन और डेयरी की यात्रा

डॉ. संजीव कुमार बालियान, माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री, मत्स्य मंत्रालय, पशुपालन और डेयरी, भारत सरकार, ने 28 जुलाई, 2019 को आईसीएआर-राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र रानी, गुवाहाटी में का दौरा किया। यात्रा के दौरान, संस्थान की संस्थागत गतिविधियों और मुख्य उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया गया। उन्होंने संस्थान के फार्म कॉम्प्लेक्स और आरएंडडी पोर्क प्रोसेसिंग प्लांट का दौरा किया। संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत करते हुए, उन्होंने किसानों और उद्यमियों के लाभ के लिए गुणवत्ता जर्मप्लाज्म के उत्पादन और बाद में प्रसार के लिए शूकर प्रजनन के महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने यह भी जोर दिया कि शूकरों के उत्पादक और प्रजनन प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए, देश के एक प्रमुख संस्थान होने के नाते, संस्थान में विदेशी जर्मप्लाज्म आयात करने की तत्काल आवश्यकता है। उन्होंने शूकर पालन में पोषण के महत्व का भी सुझाव दिया। उन्होंने फीड दक्षता बढ़ाने और वैकल्पिक फीड संसाधनों के उपयोग के लिए अनुसंधान परियोजनाओं को लेने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि, इससे न केवल चारा लागत कम होगी, बल्कि कृषि समुदाय के लिए लाभदायक और टिकाऊ उद्यम के रूप में भी शूकर पालन होगा। इससे पहले, आईसीएआर-नेशनल शूकर रिसर्च सेंटर के निदेशक, डॉ. स्वराज राजखोवा ने माननीय मंत्री का स्वागत किया। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारियों ने भाग लिया



माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री का दौरा

डॉ. टी महापात्र, सचिव डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर का दौरा

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डीएआरई) और महानिदेशक (आईसीएआर) ने 14 अगस्त, 2019 को आईसीएआर-नेशनल शूकर रिसर्च सेंटर का दौरा किया। संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत करते हुए, उन्हें संस्थागत गतिविधियों और गतिविधियों के बारे में बताया गया। उन्होंने संस्थान और एआईसीआरपी केंद्रों द्वारा विकसित शूकर की किस्मों के बारे में पूछा। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि मांस उत्पादन, बढ़ी हुई उत्पादकता, एफसीआर और जलवायु लचीलापन के विशेष संदर्भ के साथ देश में विदेशी जर्मप्लाज्म आयात करने की तत्काल आवश्यकता है। उन्होंने स्वदेशी नस्लों के डिजिटलकरण और जल्द से जल्द विकसित किस्मों की वकालत की। उन्होंने किसान के क्षेत्र में प्रजनन रणनीतियों को और अधिक मजबूत बनाने और आणविक साधनों द्वारा चयन पर जोर दिया जिससे शूकरों के उत्पादक और प्रजनन प्रदर्शन में वृद्धि हुई। उन्होंने क्लासिकल स्वाइन फीवर (CSF) और पोर्सन रेस्पिरेटरी एंड रिप्रोडक्टिव सिंड्रोम (PRRS) के नियंत्रण और रोकथाम के बारे में उल्लेख किया और कहा कि हितधारकों को वैक्सीन आपूर्ति की मांग को पूरा करने के लिए एक वैक्सीन उत्पादन प्रयोगशाला स्थापित करने की तत्काल आवश्यकता है। शूकरों में आम संक्रामक एजेंटों के जीनोम को जल्द से जल्द चित्रित किया जाना चाहिए। उन्होंने शूकर जर्मप्लाज्म के संरक्षण और विदेशी जर्मप्लाज्म के आयात के लिए संस्थान की गतिविधियों को मजबूत करने का उल्लेख किया। गुणवत्ता वाले मांस उत्पादन के साथ लागत फ़ीड को कम किया जाना चाहिए। उन्होंने उल्लेख किया कि संस्थान को पोर्क उत्पादन और मूल्य संवर्धन के साथ-साथ गुणवत्ता नियंत्रण, प्रजातियों के प्रमाणीकरण और मिलावट और अवशेषों का पता लगाने के लिए पोर्क और पोर्क उत्पादों की स्थापना करनी चाहिए। उन्होंने उल्लेख किया कि संस्थान को 2022 और 2024 के लिए 100 दिन की योजना तैयार करनी चाहिए।

डॉ. स्वराज राजखोवा, निदेशक, ने डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डीएआरई) और महानिदेशक (आईसीएआर) का स्वागत किया। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारियों ने भाग लिया।



संस्थान पशु आचार समिति

ऑर्डर नंबर एफ। 25/9/2010-AWD दिनांक 03-11-2017, पर्यावरण और वन और जलवायु परिवर्तन पशु कल्याण प्रभाग के तहत भारत सरकार ने जानवरों पर प्रयोग और पर्यवेक्षण के पर्यवेक्षण (CPCSEA) के लिए समिति, संस्थान पशु नैतिक समिति के सदस्यों को मंजूरी दी है संस्थान की स्थापना के पशु हाउस की सुविधा अब सीपीसीएसईए के साथ 'बड़े जानवरों (जैसे शूकर) के इन-हाउस उपयोग के लिए अनुसंधान और प्रजनन के लिए पंजीकृत है।' स्थापना की नई पंजीकरण संख्या 1658 / GO / RBi / रु/ 12 / CPCSEA है जो बड़े जानवरों (शूकर) के अनुसंधान और प्रजनन के लिए घर में है। CPCSEA ने IAEC के एक भाग के रूप में ICAR-NRCP से निम्नलिखित सदस्यों को मंजूरी दी है:

- डॉ. स्वराज राजखोवा, चेयरपर्सन
- डॉ. सुनील कुमार, एनिमल हाउस सुविधा के वैज्ञानिक प्रभारी
- डॉ. राजीव कुमार दास, पशु चिकित्सक
- डॉ. केशव बर्मन, विभिन्न विषयों के वैज्ञानिक, सदस्य सचिव

SN	सदस्य	पता	पद
1	डॉ. अपूर्वा चक्रवर्ती	अनुसंधान निदेशक (पशु चिकित्सा), असम, कृषि विश्वविद्यालय	मुख्य नामांकित
2	डॉ. पी. चट्टोपाध्याय	वैज्ञानिक, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन, रक्षा मंत्रालय	लिंक नामांकित व्यक्ति
3	डॉ. चंदना चोधरी बरुआ	प्राध्यापक, पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के डीएपीटी, एएयू	वैज्ञानिक बाहर से संस्थान
4	डॉ. शशांक सेखर दत्ता	कनकलता पथ, सर्वे, बेलटोला, गुवाहाटी	सामाजिक रूप से अवेयर नॉमिनी

बैठक 3 दिसंबर 2019 को आईसीएआर-एनआरसी पिग में आयोजित की गई। प्रतिबद्ध ने अनुसंधान कार्यक्रमों को विकसित किया और संस्थान के पशु घर की सुविधा का दौरा किया।



IAEC की बैठक प्रगति पर

अन्य

उत्तर पूर्व के लिए शूकर विकास योजना पर राष्ट्रीय संचालन समिति (एनएससी) की बैठक

उत्तर पूर्व के लिए शूकर विकास योजना पर राष्ट्रीय संचालन समिति (एनएससी) की पहली बैठक 18 जनवरी, 2019 को भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र में आयोजित की गई।



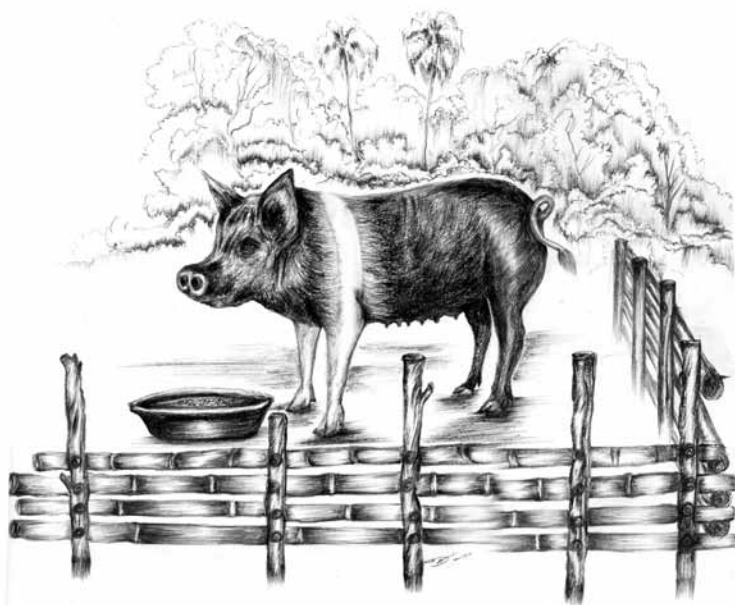
एनएससी की बैठक प्रगति पर

पशुधन एक्सपो में भागीदारी

7-10 नवंबर, 2019 को वेटनरी कॉलेज, खानापारा के बहुउद्देशीय मैदान में आयोजित लाइवस्टॉक एक्सपो में संस्थान ने भाग लिया। श्री अतुल बोहरा, कृषि और पशुधन मंत्री, असम के एक्सपो के दौरान ICAR-NRCP की NRCP प्रदर्शनी स्टाल का दौरा किया।



पशुधन एक्सपो में आईसीएआर-एनआरसीपी स्टाल



समारोह

समारोह

संस्थान स्थापना दिवस

भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र ने 4 सितंबर, 2019 को एक दिन लंबे कार्यक्रम के साथ अपना 18 वां स्थापना दिवस मनाया है। डॉ. के.एम. बुजरबुआ, पूर्व कुलपति, ए.ए.यू., जोरहाट और पूर्व डीडीजी (पशु विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे और डॉ. बी सैकिया, डीन, सीवीएससी, खानापारा और डॉ. के.के. बरुआ, पूर्व निदेशक, एनआरसी-याक, गेस्ट ऑफ ऑनर्स थे। संस्थान के निदेशक डॉ. स्वराज राजखोवा ने सभा को संबोधित किया और आने वाले वर्षों के लिए चल रही संस्थान की गतिविधियों और कार्य योजना के बारे में बताया। उन्होंने संस्थान के सभी कर्मचारियों और शुभचिंतकों को संस्थान की प्रगति में योगदान देने के लिए अपने हाथ मिलाने के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर बोलते हुए, मुख्य अतिथि ने भारत में शूकर क्षेत्र के विकास में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए संस्थान की पूरी टीम की सराहना की। उन्होंने उत्तर पूर्व भारत में छोटे धारकों की सेवा में संस्थान द्वारा निभाई गई भूमिका पर भी प्रकाश डाला। संस्थान के सभी वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारी इस दिवस को मनाने के लिए एक साथ आए। संस्थान के कर्मचारियों और क्रमशः रानी हाई स्कूल के छात्रों के लिए खेल प्रतियोगिताएं और साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। घटना के हिस्से के रूप में एक किसान-वैज्ञानिक बातचीत भी आयोजित की गई। संस्थान के आसपास के गांवों के लाभार्थी संस्थान से अपनी कृतज्ञता और अपेक्षाएं व्यक्त करने के लिए आगे आए।



संस्थान स्थापना दिवस की गतिविधियों की झलक

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

28.10.2019 से 02.11.2019 तक भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र में सतर्कता जागरूकता सप्ताह -2019 मनाया गया।



संस्थान के निदेशक और आमंत्रित अतिथि सतर्कता जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए

राष्ट्रीय एकता दिवस

संस्थान ने 31 अक्टूबर 2019 को राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया। संस्थान के निदेशक ने राष्ट्रीय एकता दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और कार्यक्रम के सभी प्रतिभागियों द्वारा एक प्रतिज्ञा ली गई।



स्वतंत्रता दिवस

संस्थान ने 15 अगस्त 2019 को हमारे देश का 73 वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया। संस्थान के सभी कर्मचारी झंडारोहण समारोह के लिए बड़े जोश के साथ इकट्ठे हुए। संस्थान के निदेशक ने इस अवसर पर उन सभी शहीदों को याद करते हुए भाषण दिया, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपना खून बहाया था।



विश्व पशु चिकित्सा दिवस

संस्थान ने 27 अप्रैल 2019 को 'वैक्सीनेशन का महत्व' थीम के साथ विश्व पशुचिकित्सा दिवस मनाया। कार्यक्रम में आरएस और एसआरएफ सहित संस्थान के सभी कर्मचारियों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक ने आयोजन के दौरान अपने विचार व्यक्त किए।



अंतराष्ट्रीय महिला दिवस

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च, 2019 को मनाया गया। कार्यक्रम में संस्थागत के सभी कर्मचारी सदस्य। कार्यक्रम में किसानों को भी आमंत्रित किया गया था।



गांधी जयंती

संस्थान ने 2 अक्टूबर, 2019 को अहिंसा के मार्ग पर चलकर भारत की आजादी की लड़ाई में उनके महान योगदान को मनाने के लिए महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती मनाई। उत्सव के भाग के रूप में, संस्थान ने पास के गाँवों में स्कूली बच्चों के लिए ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया और प्रमाणपत्र और पुरस्कार वितरित किए।



स्वच्छ भारत अभियान

केन्द्र सरकार की 'स्वच्छ भारत अभियान' पहल के एक हिस्से के रूप में, संस्थान ने आईसीएआर दिशानिर्देशों के अनुसार पूरे वर्ष विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। स्वच्छ पखवाड़ा, पास के गाँवों में स्वच्छ भारत अभियान, स्वच्छता पर कार्यशाला, स्वच्छता पर जागरूकता अभियान और परिसर में पेड़ों की रोपाई अलग-अलग गतिविधियाँ थीं।



स्वच्छ भारत अभियान के तहत की गई गतिविधियों की झलकियाँ

अंतराष्ट्रीय योग दिवस

संस्थान ने 21 जून, 2019 को अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाया है। कार्यक्रम के लिए विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में सभी वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, आरए, एसआरएफ आदि ने भाग लिया।



मन की बात

24/02/2019 को संस्थान ने प्रधानमंत्री श्री के मन की बात कार्यक्रम का लाइव वीडियो टेली-कास्टिंग शो आईसीएआर के दिशानिर्देशों के अनुसार आयोजित किया। कार्यक्रम को देखने के लिए आसपास के गांवों के स्थानीय नेता और किसान संस्थान में इकट्ठे हुए।



J- गेट @ CeRA पर जागरूकता कार्यक्रम

23-08-2019 को जे-गेट @ CeRA पर जागरूकता कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिक, तकनीकी और अनुसंधान अध्येताओं ने भाग लिया। श्री महेंद्रनाथ एस, प्रशिक्षण प्रबंधक, CeRA ने CeRA पर एक वार्ता और प्रदर्शन दिया।

नए साल का उत्सव

संस्थान के सभी कर्मचारियों ने 1 जनवरी, 2019 को संस्थान में एक केक काटने की रस्म द्वारा नव वर्ष की खुशी को साझा किया। निदेशक ने इस अवसर पर सभी कर्मचारियों को नए साल की शुभकामनाएं दीं।





राजभाषा प्रकोष्ठ

राजभाषा प्रकोष्ठ

राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी में निम्नलिखित राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यरत है।

क्रं संख्या	समिति	नाम
1.	अध्यक्ष	डा.स्वराज राजखोवा, निदेशक
2.	सदस्य	डा.शान्तनु बानिक, प्रधान वैज्ञानिक
3.	सदस्य	डा.सीमा राणी पेगु, वरिष्ठ वैज्ञानिक
4.	सदस्य	डा.सुनील कुमार, वैज्ञानिक
5.	सदस्य	श्री प्रभात कुमार नायक, सहायक वित्त एवं लेखा अधिकारी
6.	सदस्य	श्री उत्तम प्रकाश, सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं हिंदी प्रभारी

कार्यालय में प्रत्येक तिमाही को राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक करवाती है तथा हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए सुझाव देती है एवं प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा करती है। कार्यालय समय समय पर राजभाषा विभाग को तिमाही रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। कार्यालय में वर्ष में 4 राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक का आयोजन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का कार्यवृत्त

तारीख	स्थान
15-02-2019, 3.00 बजे	समिति कक्ष, राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, राणी, गुवाहाटी
7-05-2019, 11.00 बजे	राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, राणी, गुवाहाटी
12-09-2019, 11.00 बजे	राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, राणी, गुवाहाटी
15-11-2019, 3.00 बजे	राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, राणी, गुवाहाटी

राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का सदस्य है एवं संस्थान ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सभी बैठकों में भाग लिया।

राजभाषा विभाग के निर्देश अनुसार वार्षिक कार्यक्रमों, राजभाषा अधिनियमों एवं अन्य सभी आदेशों/अनुदेशों का अनुपालन कार्यालय द्वारा वर्ष में सफलतापूर्वक किया गया।

राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, राणी, गुवाहाटी में 16 सितम्बर 2019 से 30 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

हिंदी दिवस का सुभारम्भ डा.स्वराज राजखोवा, निदेशक, राष्ट्रीय सूकर अनुसंधान केन्द्र, राणी, गुवाहाटी द्वारा किया गया। निदेशक महोदय ने हिंदी भाषा का महत्व और सरकारी कार्यालय में इसकी उपयोगिता के बारे में बताया तथा कार्यालय के सभी कर्मचारियों को अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया। तद्पश्चात आमंत्रण किये गए विशिष्ट अतिथि दैनिक पूर्वोदय के संपादक श्री रवि शंकर रवि जी ने भी राजभाषा से जुड़े महत्वपूर्ण बातों के बारे में कर्मचारियों को संबोधित किया। इसके बाद श्री उत्तम प्रकाश सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं हिंदी प्रभारी अधिकारी ने हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय कृषि एवं किसान कल्याण ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री (भारत सरकार कृषि भवन, नई दिल्ली) जी का संदेश पढ़ कर सभी कर्मचारियों को सुनाया और साथ में हिंदी पखवाड़ा के दौरान होने वाले विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों के बारे में बताया।

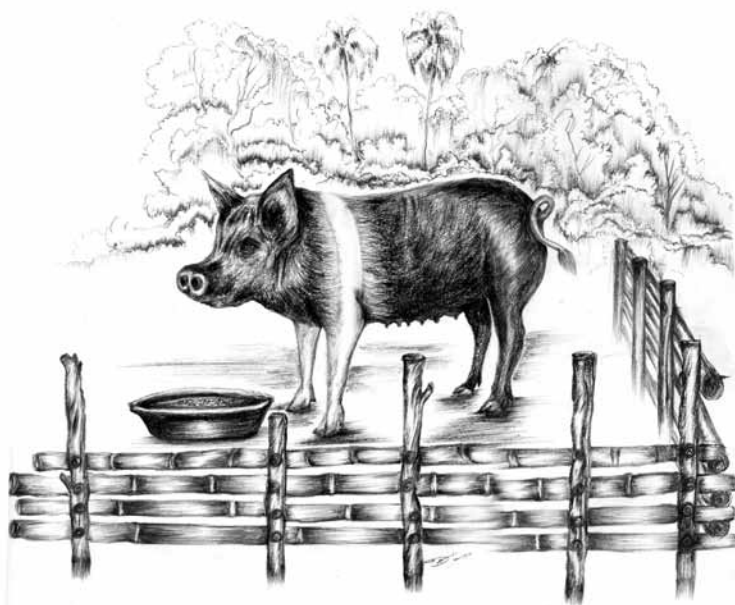
हिंदी सप्ताह में निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया

दिनांक	कार्यक्रम	आयोजन स्थल
16.09.2019, 3.00 बजे	उद्घाटन सत्र, निदेशक, राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, राणी, गुवाहाटी द्वारा	समिति कक्ष
16.09.2019, 3.30 बजे	निबंध एवं हिंदी लेखन प्रतियोगिता (विशिष्ट अतिथि, श्री रवि शंकर रवि संपादक, दैनिक पूर्वोदय)	समिति कक्ष
18.09.2019, 11.00 बजे	छात्रों का वाद-विवाद प्रतियोगिता	राणी हाईस्कूल, राणी
19.09.2019, 3.00 बजे	हिंदी कार्यशाला-01(डा. सुनील कुमार)	समिति कक्ष
19.09.2019, 3.30 बजे	सामान्य ज्ञान-प्रतियोगिता	समिति कक्ष
20.09.2019, 12.30 बजे	हिंदी कार्यशाला-02(डा. सुनील कुमार) वाद-विवाद प्रतियोगिता	समिति कक्ष
25.09.2019, 11.00 बजे	हिंदी कार्यशाला-03 तथा गायन प्रतियोगिता (एकल)	राणी हाईस्कूल, राणी
28.09.2019, 11.30 बजे	हिंदी कार्यशाला-04	समिति कक्ष
30.09.2019, 10.00 बजे	हिंदी कार्यशाला-05 (विशिष्ट अतिथि, श्री बद्री यादव, अनुसंधान अधिकारी एवं कार्यालय प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी)	समिति कक्ष
30.09.2019, 11.30 बजे	गायन प्रतियोगिता (युगल) राणी हाईस्कूल, राणी	
30.09.2019, 12.30 बजे	गायन प्रतियोगिता (युगल)	
30.09.2019, 1.30 बजे	समापन सत्र	

18.09.2019 हिंदी पखवाड़ा के दौरान स्थानीय स्कूल (राणी हाईस्कूल के कक्षा 8वीं से कक्षा 10वीं के छात्रों के बीच वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया। 30.09.2019 कार्यक्रम के समापन अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री बद्री यादव, अनुसंधान अधिकारी एवं कार्यालय प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी की उपस्थितियों में गायन एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के समापन में राणी हाईस्कूल के छात्रों के बीच गायन प्रतियोगिता और छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। निदेशक महोदय द्वारा हिंदी पखवाड़ा के कार्यक्रम में सभी वजयी प्रतिभागियों को सम्मानित कर पुरस्कृत किया और सभी से अपील कि, हिंदी भाषा में अधिक से अधिक कार्य कर राजभाषा को गौरान्वित करें। श्री उत्तम प्रकाश, सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी ने सभी अतिथि गणों, कर्मचारियों एवं राणी हाईस्कूल के छात्रों एवं अध्यापकों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया।



हिंदी पखवाड़ा गतिविधियां



प्रशिक्षण कार्यक्रम
आयोजित

प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

बजट और धन के स्रोत के साथ प्रशिक्षण 2019-20 की सूची

SN	प्रशिक्षण का नाम	निधीयन एजेंसी
1	वैज्ञानिक शूकर पालन पर एएचवीडी कर्मचारियों के लिए मास्टर प्रशिक्षण कार्यक्रम	APART, असम सरकार
2	4-8 मार्च, 2019 से स्थानीय सेवा प्रदाता के लिए मास्टर प्रशिक्षण कार्यक्रम	APART, असम सरकार
3	'एडवांस पिग हस्बैंड्री प्रैक्टिस' 20 से 24 मई 2019	प्रायोजित प्रशिक्षण
4	वैज्ञानिक शूकर पालन में एएचवीडी स्टाफ के लिए मास्टर ट्रेनिंग (टीओटी) कार्यक्रम (27 से 31 मई 2019) तक	APART, असम सरकार
5	स्थानीय सेवा प्रदाता (शूकर बन्धु) के लिए मास्टर प्रशिक्षण (टीओटी) कार्यक्रम, (10 से 14 जून 2019) तक	APART, असम सरकार
6	वैज्ञानिक शूकर पालन में एएचवीडी स्टाफ के लिए मास्टर ट्रेनिंग (टीओटी) कार्यक्रम (24 से 28 जून 2019) तक	APART, असम सरकार
7	शूकर में कृत्रिम गर्भाधान पर प्रशिक्षण (10-12 जून 2019)	NLM, असम सरकार
8	स्थायी आजीविका के लिए वैज्ञानिक शूकर पालन प्रथाएं (25 से 29 जून 2019)	बायोटेक किसान प्रोजेक्ट
9	शूकर में कृत्रिम गर्भाधान पर प्रशिक्षण (23-25 जुलाई 2019)	AHVD, अरुणाचल प्रदेश सरकार
10	5-9 अगस्त 2019 से आयोजित संस्थान के टीएसपी के तहत किसानों के लिए 'शूकर पालन के लिए अच्छे प्रबंधन अभ्यास' पर किसानों के लिए 5 दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम।	संस्थान की जनजातीय उप योजना
11	26 से 30 अगस्त 2019 तक 26 शूकर पालन के लिए अच्छे प्रबंधन अभ्यास 'पर किसानों के लिए 5 दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम।	प्रायोजित प्रशिक्षण
12	'लाभदायक शूकर पालन के लिए वैज्ञानिक पालन अभ्यास' (21 सितंबर से 05 अक्टूबर 2019) तक	पशुधन, मत्स्य और पशुपालन विभाग, सिक्किम
13	किसानों की स्थायी आजीविका के लिए वैज्ञानिक शूकर पालन खेती (16-20 सितंबर 2019)	MAC, धेमाजी
14	'14-18 अक्टूबर 2019 से आयोजित संस्थान के टीएसपी के तहत किसानों के लिए शूकर पालन के लिए अच्छा प्रबंधन अभ्यास'	संस्थान की जनजातीय उप योजना
15	5 दिन व्यक्तिगत रूप से 'पिग्गी फार्मिंग ऑन सस्टेनेबल लाइवलीहुड' डब्ल्यू.एफ पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का भुगतान किया (26-30 नवंबर 2019)	स्व प्रायोजित
16	वैज्ञानिक शूकर पालन में एएचवीडी स्टाफ के लिए मास्टर प्रशिक्षण (टीओटी) कार्यक्रम, (11 से 15 नवंबर 2019)	APART, असम सरकार
17	'किसानों की स्थायी आजीविका के लिए वैज्ञानिक शूकर पालन (9-13 दिसंबर 2019)।	MAC, धेमाजी





आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की झलकियां

बौद्धिक संपदा अधिकारों और जैव विविधता कानूनों पर कार्यशाला

बौद्धिक संपदा अधिकार और जैव विविधता कानूनों पर दो दिवसीय कार्यशाला 19 और 20 फरवरी 2019 को आयोजित की गई।



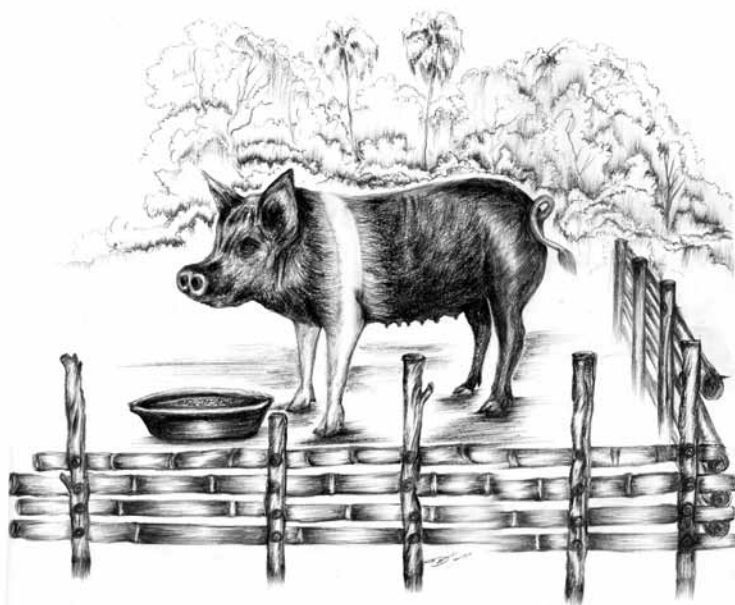
उभरते संक्रामक रोगों के प्रभावी प्रबंधन के लिए बायोसैफ्टि पर राष्ट्रीय कार्यशाला

23 मार्च, 2019 को 'NER में शूकरों के उभरते संक्रामक रोगों के प्रभावी प्रबंधन के लिए जैव-सुरक्षा पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला' आयोजित की गई।

अफ्रीकी स्वाइन बुखार पर ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र

'अफ्रीकी स्वाइन बुखार: मीन्स फॉर दि प्रिवेंशन एंड कंट्रोल' पर एक दिन के ब्रेन स्टॉर्मिंग सेशन का आयोजन 28/06/2019 को गुवाहाटी, रानी, गुवाहाटी में किया गया।





पुरस्कार और मान्यताएँ

पुरस्कार और मान्यताएँ

डॉ. मोहन एन. एच.

- माननीय महानिदेशक, आईसीएआर ने आईसीएआर डेटा प्रबंधन दिशानिर्देशों को लागू करने और प्रकाशनों और प्रौद्योगिकियों के लिए राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र को प्रमाण पत्र प्राप्त दिया। सर्टिफिकेट डॉ. एन.एच.मोहन, नोडल ऑफिसर, डेटा मैनेजमेंट, ने ICAR KRISHI नोडल ऑफिसर्स वर्कशॉप के दौरान प्राप्त किया था।



डॉ. शान्तनु बनिक

- बनिक, एस., बर्मन, के. कुमार, एस., दास, पी. जे., थॉमस, आर. और राजखोवा, एस. 2019 के लिए पहला सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति पुरस्कार। रानी: किसानों की आय दोगुनी करने के लिए एक क्रॉसब्रेड शूकर किस्म असम कृषि विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए पशु कृषि पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी: प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति विकल्प (27-28 फरवरी, 2019)
- एएयू, खानापारा में, दो पीएचडी के बाहरी थीसिस मूल्यांकनकर्ता के रूप में कार्य किया। (पशु आनुवंशिकी प्रजनन)। असम कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञान और पशुपालन।
- जज, नेशनल लाइवस्टॉक एंड पोल्ट्री शो -2019। पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग, सरकार द्वारा आयोजित। असम का।

डॉ. पी. जे. दास

- बनिक, एस., बर्मन, के. कुमार, एस., दास, पीजे, थॉमस, आर. और राजखोवा, एस. 2019 के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति (प्रथम) पुरस्कार। रानी: किसानों की आय दोगुनी करने के लिए एक क्रॉसब्रेड शूकर सीवीएससी, एएयू, खानापारा में असम कृषि विश्वविद्यालय और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए पशु कृषि: प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति के विकल्प (27-28 फरवरी, 2019) पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान।

डॉ. आर. थॉमस

- FAD 18 / P-5 और FAD 18 / P-3 पैनल में सदस्य के रूप में शामिल, BIS के स्लैब 18 के तहत भारतीय मानकों की समीक्षा करने के लिए इसी कोडेक्स मानकों और FSSAI नियमों के साथ संरेखित करें और 20 साल से अधिक पुराने भारतीय मानकों की समीक्षा करें एफएडी -18 अनुभागीय समिति।

- APEDA द्वारा पत्र के रूप में मांस संयंत्र निरीक्षण समिति में विशेषज्ञ के रूप में Empaneled- MPD / MT / 38 / 2018/124
- FSSAI के तहत 'पोल्ट्री सहित मांस और मांस उत्पादों पर वैज्ञानिक पैनल' में सदस्य के रूप में प्रतिष्ठित।

डॉ. सीमा आर. पेगू

- जर्नल के समीक्षक के रूप में पांडुलिपि की समीक्षा की - इंडियन जर्नल ऑफ़ वेटेरनरी पैथोलॉजी
- M.V.Sc. के मूल्यांकन के लिए बाहरी परीक्षक कॉलेज ऑफ़ वेटेरनरी साइंस, खानापारा, असम से पशु चिकित्सा पैथोलॉजी।

डॉ. सुनील कुमार

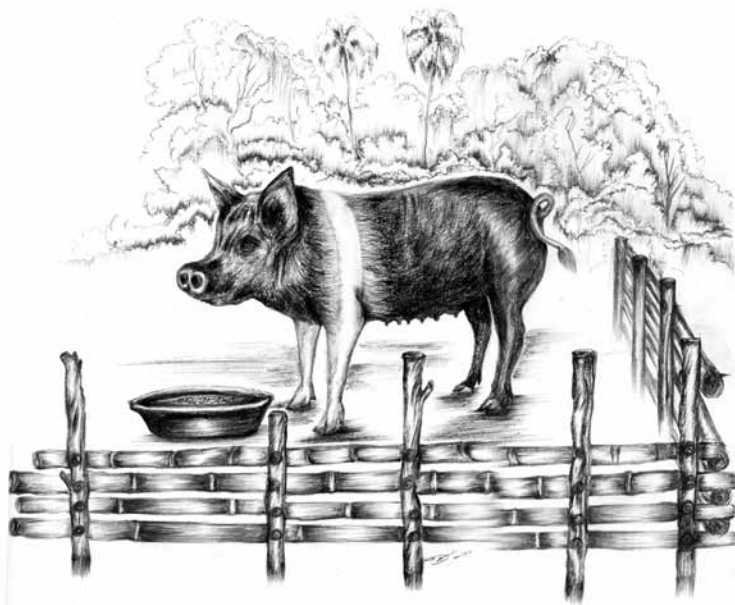
- 3-4 नवंबर, 2019 को आईसीएआर-सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च ऑन कैटल, मेरठ कैंट में सतत पशुधन उत्पादन के माध्यम से आजीविका सुधार पर राष्ट्रीय सम्मेलन में क्रॉसबोर्ड गावों में इंटर्सेवल अंतराल, कृषिक गतिशीलता और प्रजनन पर प्रस्तुति के लिए सह-लेखक के रूप में दूसरा पुरस्कार।
- 14/09/2019 से 29/09/2019 तक ICAR- NRC पर शूकर, रानी पर हिंदी पखवाड़ा मनाने के अवसर पर हिंदी निबंध लेखन (प्रथम), हिंदी लेखन (तृतीय) और प्रश्नोत्तरी (दूसरा) में संस्थागत पुरस्कार।
- स्पोर्ट्स इवेंट्स क्रिकेट (फर्स्ट) और बैडमिंटन (रनर अप) में संस्थागत पुरस्कार से संस्थान स्थापना दिवस के अवसर पर सम्मानित।
- विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित ए.आई. सूजीईवीएनआई (सोशियो इकोनॉमिक वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन), असम द्वारा पिग्स में ए.आई. पर 2 व्याख्यान और व्यावहारिक प्रदर्शन दिया।

डॉ. मिशा माधवन एम

- 23 दिसंबर, 2019 को सिंडीकेट बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी के ग्रामीण विस्तार शिक्षा कार्यक्रम के साथ 'पशुधन फार्मों में प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन' विषय पर मेटुआकुची, बारपेटा जिला, असम में किसान दिवस कार्यक्रम के अवसर पर आमंत्रित व्याख्यान
- 2 अक्टूबर, 2019 को खूटी के ICAR-NRC में 'स्वच्छता ही सीवा' कार्यक्रम के भाग के रूप में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार प्राप्त किया।
- हिंदी पखवाड़ा -2019 के एक भाग के रूप में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया

डॉ. सतीश कुमार

- दूसरा पुरस्कार हिंदी लखान में, वाद-विवाद, तीसरा पुरस्कार हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदी निबन्ध में। वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
- बैडमिंटन मिश्रित युगल और क्रिकेट में विजेता; स्थापना दिवस समारोह के दौरान बैडमिंटन सिंगल, बैडमिंटन डबल्स, कैरम सिंगल, कैरम डबल और टेबल टेनिस डबल्स स्पर्धाओं के वार्षिक खेलों के आयोजन में रनर अप।
- पंजीकरण से पहले पूर्णिया / वनांचल काले शूकर के दावे को सत्यापित करने के लिए शूकर पर एनआरसी से विशेषज्ञ के रूप में नामांकित।



मानव संसाधन विकास

मानव संसाधन विकास

डॉ. स्वराज राजखोवा

- 16 अप्रैल, 2019 को डीबीटी, नई दिल्ली में डीबीटी वित्त पोषित परियोजना की समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- 20 अप्रैल 2019 को आईसीएआर-नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, करनाल में मस्तिष्क और पशुधन उत्पादन प्रणालियों की स्थिरता पर ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र में 'भारत में शूकर उत्पादन बढ़ाने के लिए रणनीति' विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया गया।
- 29 अप्रैल, 2019 को के वी के बक्सा के स्थान परिवर्तन के लिए साइट चयन समिति के सदस्य के रूप में साइट का दौरा किया।
- 29, 30 और 31 मई, 2019 के दौरान केवीके की वार्षिक समीक्षा बैठक में सीआईएफआरआई ट्रेनिंग हॉल, हाउसफेड कॉम्प्लेक्स, बेलटोला में भाग लिया।
- 15 मई, 2019 को आईआरसी की बैठक आयोजित की गई।
- संस्थान के एसएफसी को अंतिम रूप देने के लिए DDG (AS) के साथ बैठक (2017-18 से 2019-20) के लिए 27-28 मई, 2019।
- 3 जून, 2019 को आईएमसी की बैठक आयोजित की गई।
- आयोजित ADMaC की उपस्थित प्रौद्योगिकी प्रदर्शन बैठक। (10-11 जून, 2019)।
- 17.6.19 को नई दिल्ली के कृषि भवन में AHD & F के माननीय केंद्रीय मंत्री के साथ बैठक में भाग लिया।
- 19.6.19 को देश के शूकर पालन क्षेत्र के बारे में चर्चा करने के लिए कृषि भवन, नई दिल्ली में AHD & F के माननीय केंद्रीय मंत्री की बैठक में भाग लिया।
- 28 जून, 2019 को 'अफ्रीकी स्वाइन बुखार: इसकी रोकथाम और नियंत्रण के लिए उपाय' पर मंथन कार्यक्रम आयोजित किया।
- 2 जुलाई को असम प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज, खानापारा में AAU के सहयोग से राज्य नवाचार और परिवर्तन Aayog (SITA) द्वारा आयोजित असम में 'पशुधन, पोल्ट्री, डेयरी और मत्स्य क्षेत्र के विकास पर एक दिवसीय मस्तिष्क तूफान सत्र में भाग लिया।
- एनईएच घटक के बारे में चर्चा के लिए 4 जुलाई, 2019 को एनएससी परिसर में डीडीजी (एनआरएम), आईसीएआर के साथ एनईआर के सभी संस्थानों के निदेशकों की बैठक में भाग लिया।
- 13 जुलाई, 2019 को ADMaC के सत्र में भाग लिया।
- 24 जुलाई, 2019 को नाबार्ड, गुवाहाटी द्वारा आयोजित खूंटी पर क्षेत्रीय सलाहकार समूह की बैठक में उत्पादकता बढ़ाने पर गुणवत्ता वाले पशु (शूकर) पर एक व्याख्यान दिया।
- 19 से 20 अगस्त, 2019 तक संस्थान आरएसी का संचालन किया
- 28 अगस्त 2019 को नई दिल्ली के कृषि भवन में पूर्वोत्तर के लिए शूकर विकास योजना के लिए आयोजित (4 वें राष्ट्रीय तकनीकी और कार्यान्वयन समिति (एनटीआईसी) के अध्यक्ष के रूप में आयोजित।
- शूकर और मेगा सीड प्रोजेक्ट पर एआईसीआरपी की वार्षिक समीक्षा बैठक, 27 और 28 सितंबर, 2019 को एनईएच क्षेत्र, उमियाम, मेघालय के लिए आईसीएआर रिसर्च कॉम्प्लेक्स में वर्ष 2018-2019 के लिए आयोजित की गई।
- 26 अक्टूबर, 2019 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में NITI Aayog Lectures के पांचवें संस्करण में भाग लिया।
- 1 नवंबर, 2019 को NASC, नई दिल्ली में AICRP की कार्ययोजना को अंतिम रूप देने के लिए बैठक (सचिव DARE & DG, ICAR द्वारा अध्यक्षता) में भाग लिया।
- 5 नवंबर, 2019 को असम के मोरीगांव जिले में शूकर क्षेत्र के विकास के लिए मोरीगांव में असम के राज्यपाल के साथ बैठक में भाग लिया।
- खानापारा में उपस्थित राष्ट्रीय पशुधन और कुक्कुट शो 2019 w.e.f. -10 नवंबर, 2019 का आयोजन AH & Vety द्वारा किया गया। विभाग, सरकार असम और असम पशुधन और कुक्कुट निगम की।

- 27-28 नवंबर, 2019 को ऑफिसर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, खानापारा में AH & Vety Dept. असम, NLM, असम और RKVY द्वारा आयोजित 'असम में शूकर पालन क्षेत्र के व्यापक विकास के लिए रणनीति' पर 2-दिवसीय सम्मेलन में भाग लिया और वितरित किया।
- 17 दिसंबर, 2019 को डीबीटी, नई दिल्ली में डीबीटी वित्त पोषित एडीएमएसी परियोजना की समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- कामधेनु विश्वविद्यालय, गांधीनगर में आयोजित पशु स्वास्थ्य और उत्पादन में फ्यूचरिस्टिक टेक्नोलॉजीज पर 18 वीं वार्षिक दीक्षांत समारोह सह वैज्ञानिक सम्मेलन में भाग लिया। 26-27 दिसंबर, 2019।
- एनएससी, नई दिल्ली में 6 जनवरी, 2020 को आयोजित कृषि पशुओं में नवजात मृत्यु दर (एआईएनपी
- एनएम) पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना की समीक्षा बैठक में भाग लिया। AH और Vety के तीसरे
- द्विवार्षिक सामान्य सम्मेलन में भाग लिया। सेवा संघ, गोलपारा जिला शाखा 18-20 जनवरी, 2020 से
- गोलपारा में आयोजित की गई। इसके अलावा "imntimicrobial प्रतिरोध की प्रवृत्ति: वर्तमान और भविष्य की
- चुनौतियों पर तकनीकी सत्र के सह-अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। 24 जनवरी, 2020 को कृषि भवन, नई दिल्ली में नस्ल पंजीकरण समिति की बैठक में भाग लिया।
- AH & Vety द्वारा आयोजित गुवाहाटी केखानापारा में नस्ल सुधार के माध्यम से असम में शूकर क्षेत्र के विकास पर एक मस्तष्क तूफान सत्र में भाग लिया।
- 30 जनवरी, 2020 को असम सरकार और ILRI के विभाग। 6-7 फरवरी, 2020 तक आईवीआरआई, इ ज़तनगर में आयोजित IAVMI के XXXIII वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया
- 11 फरवरी, 2020 कोएटीएआरआई, गुवाहाटी में आईसीएआर-एटीएआरआई, गुवाहाटी के तहत केवीके के नए भर्ती किए गए
- एसएमएस के लिए एचआरडी प्रशिक्षण में एनई इंडिया में शूकर पालन के लिए गुंजाइश और अवसरों पर व्याख्यान दिया।
- 22 फरवरी, 2020 को डीडी केंद्र, गुवाहाटी में एक लाइव टेलीकास्ट (किसान वैज्ञानिक बातचीत) कार्यक्रम का आयोजन किया। 26 फरवरी -27, 2020 तक एचआरएस, काहिकुचि, गुवाहाटी में किसानों की आय दोगुनी करने के माध्यम से 'किसानों की समृद्धि पर राज्य स्तरीय किसान मेला सह-वैज्ञानिकों की बातचीत' (एक सह-अध्यक्ष के रूप में) आयोजित। विषय पर सत्र: पशुधन और मत्स्य पालन।

डॉ. शान्तनु बनिक्

- XXXII के दौरान 'शूकर स्वास्थ्य और उत्पादन' पर गोल मेज IAVMI के वार्षिक सम्मेलन और बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना (5.02.2019) में 'बेहतर उत्पादन और व्यापार के लिए पशु स्वास्थ्य में वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचारों' पर राष्ट्रीय सम्मेलन।
- किसानों की आय दोगुनी करने के लिए 'पशु कृषि पर असम कृषि विश्वविद्यालय और अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वर्ण जयंती समारोह: प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति विकल्प' (27-28 फरवरी, 2019) CVSC, AAU, खानापारा में।
- एससी / एसटी उद्यमियों के लिए नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन 'एमएसएमई द्वारा आयोजित पूर्वोत्तर क्षेत्र में एससी / एसटी उद्यमियों के लिए व्यापार के अवसरों को बढ़ावा देना', 22 और 23 नवंबर 2019 को मणिरामदेवन ट्रेड सेंटर, गुवाहाटी, असम।
- शूकर पर ICAR-NRC में हृष्य राज्यों (18.01.2019) द्वारा शूकर के आयात के लिए DADF और राज्य के अधिकारियों के साथ बैठक।
- 28 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली के कृषि भवन में पूर्वोत्तर के लिए शूकर विकास योजना के लिए चौथी राष्ट्रीय तकनीकी और कार्यान्वयन समिति (एनटीआईसी)।
- खूंटी केंद्र, जीएडीएवीयू केंद्र, लुधियाना (15.07.19-17.07.19) पर AIRCP पर जाएँ।

- आईसीएआर-सीआईएआरआई, पोर्ट ब्लेयर (31.4.19-2.04.2019) के शूकर केंद्र पर एआईसीआरपी पर जाएं।
- शूकर, अगरतला, त्रिपुरा (14.11.2019-15.11.2019) पर मेगा सीड प्रोजेक्ट का दौरा।
- सचिव, DARE और DG, ICAR की अध्यक्षता में AICRP प्रोजेक्ट्स की समीक्षा के लिए बैठक। (2019/01/11)
- आईसीएआर-एनबीएजीआर, करनाल में शूकर की विविधता के पंजीकरण के लिए बैठक (14.10.2019)।
- गुवाहाटी, गुवाहाटी (27.9.2019-28.09.2019) पर NRC पर शूकर और मेगा बीज परियोजना पर AICRP की वार्षिक समीक्षा बैठक।
- आईसीएआर आर सी, बारापानी में बायोटेक किसान परियोजना पर इंटरएक्टिव बैठक। (2019/02/22)।
- ICAR-NRC पर याक की बैठक, ICAR-NRC पर याक, डारंग, अरुणाचल प्रदेश (27.03.2019) पर ICC की बैठक।

डॉ. पी. जे. दास

- 28 जून, 2019 को शूकर, रानी, गुवाहाटी, असम में आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर में आयोजित 'अफ्रीकी शूकर बुखार: इसकी रोकथाम और नियंत्रण के लिए उपाय' पर मंथन सत्र में भाग लिया। प्रजनन पथ में माली शूकर की नस्लों के पंजीकरण को सत्यापित करने के लिए विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। यात्रा के क्षेत्र में त्रिपुरा पश्चिम, खोवाई और त्रिपुरा के धलाई जिले 9-11 जुलाई 2019 तक शामिल थे। टीआईई दिल्ली
- एनआरसी द्वारा आईटीआरए, डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन, नई दिल्ली में 8 सप्ताह की उद्यमिता कैम्प,
- जुलाई-सितंबर 2019 का आयोजन किया गया। एग्री-बिजनेस इनक्यूबेशन यूनिट द्वारा आयोजित शूकर पर
- आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर में 1 अक्टूबर, 2019 को आयोजित एक दिवसीय एबीआई-उन्मुखीकरण
- कार्यशाला में भाग लिया। पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग और असम पशुधन और कुक्कुट सहयोग
- लिमिटेड द्वारा आयोजित 7-10 नवंबर 2019 को असम के गुवाहाटी के खानापारा में आयोजित राष्ट्रीय
- पशुधन और पोल्ट्री शो में भाग लिया। प्रौद्योगिकी व्यवसायीकरण / लाइसेंसिंग पर संवेदीकरण कार्यशाला पर
- एक दिवसीय कार्य की दुकान में भाग लिया, 16 दिसंबर 2019 को आईसीएआर-राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र में
- आयोजित किया गया, एग्री-बिजनेस इंडिया लिमिटेड नई दिल्ली के साथ मिलकर शूकर पर आईसीएआर एनआरसी के कृषि-व्यवसाय रुष्मायन केंद्र द्वारा आयोजित किया गया।

डॉ. मोहन एन. एच.

- 29.03.2019 से 28.06.2019 तक LBS के उत्कृष्ट युवा वैज्ञानिक के तहत अंतराष्ट्रीय प्रशिक्षण, आणविक जीवविज्ञान संस्थान, मेंज, जर्मनी में।
- 23 मार्च, 2019 को खूंटी पर ICAR-NRC द्वारा आयोजित हृष्य क्षेत्र में शूकरों पर उभर रहे संक्रामक रोगों के प्रभावी प्रबंधन के लिए जैव वर्कशॉप पर राष्ट्रीय कार्यशाला।
- सोसायटी की 88 वीं वार्षिक बैठक और 'जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति' पर एक सम्मेलन BARC, मुंबई Nov.1-3, 2019।
- AICRP / Megaseed परियोजना पर शूकर वार्षिक समीक्षा बैठक 27-28 सितंबर 2019 से हृष्य क्षेत्र, उमियाम, बारापानी, मेघालय के लिए ICAR RC में होगी
- ICAR KRISHI नोडल अधिकारी की कार्यशाला NAS कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में 10-11 दिसंबर 2019 तक।
- 27 फरवरी, 28 फरवरी, 2019 को 'पशु किसानों के लिए पशु कृषि आय, प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति की राय' पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया। कॉलेज ऑफ वेटेरनरी साइंस, असम कृषि विश्वविद्यालय, खानापारा, गुवाहाटी, असम द्वारा आयोजित
- संस्थान की गतिविधियों और प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन। 27 फरवरी, 2019 को 'पशु किसानों के लिए पशु कृषि आय, प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति की राय' पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी। कॉलेज ऑफ वेटेरनरी साइंस, असम कृषि विश्वविद्यालय, खानापारा, गुवाहाटी, असम द्वारा आयोजित।

- द असम साइंस एंड टेक्नोलॉजी एंड एनवायरनमेंट काउंसिल, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी और ज्यूडिशियल एकेडमी-असम और नेशनल बायोडायवर्सिटी अथॉरिटी के सहयोग से 19-20 वें फरवरी 2019 से बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और जैव विविधता कानूनों पर एक कार्यशाला का आयोजन किया।

डॉ. आर. थॉमस

- 27-28 फरवरी, 2019 के दौरान CVSc, AAU, खानापारा में आयोजित 'किसानों की आय दोगुनी करने के लिए पशु कृषि: प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति विकल्पों' पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में एक लीड पेपर में भाग लिया और प्रस्तुत किया।
- 19-20 फरवरी, 2019 के दौरान शूकर पर ICAR-NRC द्वारा आयोजित 'बौद्धिक संपदा अधिकारों और जैव विविधता कानून पर कार्यशाला' में भाग लिया और वितरित किया गया।
- 9-11 फरवरी, 2019 के दौरान NEH, Umiam के लिए ICAR-RC में आयोजित 'नेशनल एग्री-बिजनेस एंटरप्रेन्योरशिप कॉन्क्लेव' में भाग लिया और प्रस्तुत किया।
- 27-28 फरवरी, 2019 के दौरान CVSc., खानापारा में आयोजित 'किसानों की आय दोगुनी करने के लिए पशु कृषि: प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति विकल्पों' पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में एक लीड पेपर वितरित किया।
- 19-20 फरवरी, 2019 के दौरान शूकर पर ICAR-NRC द्वारा आयोजित 'बौद्धिक संपदा अधिकारों और जैव विविधता कानून पर कार्यशाला' में आमंत्रित व्याख्यान।
- 9-11 फरवरी, 2019 के दौरान NEH, miam के लिए ICAR-RC में आयोजित 'नेशनल एग्री-बिजनेस एंटरप्रेन्योरशिप कॉन्क्लेव' में लीड पेपर दिया।
- एफएसएसएआई द्वारा 24 जुलाई, 2019 को एफडीए भवन, नई दिल्ली में आयोजित 'जोखिम मूल्यांकन ढांचे संरचना-उपन्यास खाद्य पदार्थ और योजक' पर उन्मुखीकरण कार्यशाला में भाग लिया।
- तकनीकी परामर्शदात्री समिति के सदस्य के रूप में मिथुन, मेजदीपमे पर आईसीएआर-एनआरसी में एक बड़े पशु वधशाला की स्थापना की दिशा में समय-समय पर इनपुट प्रदान किए गए।
- 8-9 मई, 2019 के दौरान असम पशुधन और कुक्कुट निगम द्वारा आयोजित असम के विभिन्न ब्लॉकों में निर्यात के लिए वैज्ञानिक शूकर उत्पादन और प्रसंस्करण पर जागरूकता निर्माण कार्यक्रम के साथ संबद्ध।
- 27 सितंबर, 2019 को 'पशु कॉन-2019: माननीय मुख्यमंत्री के लक्ष्य और पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग, असम के लक्ष्यों' में पिग्गरी विकास-वर्तमान गतिविधियों, चल रही योजनाओं और 5 साल की कार्ययोजना पर भाग लिया और प्रदान किया।
- एफडीएआई, एफएसएसएआई, नई दिल्ली में 26 अप्रैल, 2019 को आयोजित फूड एडिटिक्स, फ्लेवरिंग्स, प्रोसेसिंग एड्स और मटेरियल इन फूड के संपर्क में वैज्ञानिक पैनल की 40 वीं बैठक में भाग लिया और प्रदान किया।
- एफडीएआई, एफएसएसएआई, नई दिल्ली में 21 जून, 2019 को आयोजित फूड एडिटिक्स, फ्लेवरिंग्स, प्रोसेसिंग एड्स और मटेरियल इन कांटेक्ट्स इन कांटेक्ट्स के साथ वैज्ञानिक पैनल की 41 वीं बैठक में भाग लिया और प्रदान किया।
- एफडीएआई, एफएसएसएआई, नई दिल्ली में 13 सितंबर, 2019 को आयोजित फूड एडिटिक्स, फ्लेवरिंग्स, प्रोसेसिंग एड्स और मटेरियल इन कांटेक्ट्स इन कांटेक्ट्स के साथ वैज्ञानिक पैनल की 42 वीं बैठक में भाग लिया और प्रदान किया।

डॉ. सीमा आर. पेगू

- 25 जून -28 जून, 2018 के दौरान NITS, नोएडा में IS 17025: 2017 में एलक्यूएम प्रशिक्षण में भाग लिया।
- IASST, बोरगाँव, गुवाहाटी, असम में 'होस्ट माइक्रोब इंटरैक्शन' में सम्मेलन सह कार्यशाला में भाग लिया: पहली -2 फरवरी 2019।
- सी.वी.एस. एस., खानापारा, असम कृषि विश्वविद्यालय, गुवाहाटी -781022 में 27 से 28 फरवरी, 2019 तक अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

- टॉपिक पर भाग लिया और मौखिक पेपर प्रस्तुत किया: IASST, बोरगाँव, गुवाहाटी, असम में 'होस्ट माइक्रोब इंटरैक्शन' में कॉन्फ्रेंस कम वर्कशॉप में असम की स्वाइन आबादी में जापानी इंसेफेलाइटिस वायरस के सीरोलॉजिकल साक्ष्य और आणविक लक्षण।
- हेलिकोबैक्टर एसपीपी के आणविक जांच विषय पर मौखिक पेपर में भाग लिया और प्रस्तुत किया। सी। वी। एस। एस।, खानापारा, असम कृषि विश्वविद्यालय, गुवाहाटी -781022 में 27 से 28 फरवरी, 2019 तक अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में शूकर और शूकर संचालकों में।
- 26 से 29 नवंबर 2019 तक बायोइनफॉर्मेटिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर फैसिलिटी, C.V.Sc, A.A.U, खानापारा, गुवाहाटी द्वारा संचालित 'बायोइनफॉर्मेटिक एंड प्रोटीओमिक रिसर्च' के मूल सिद्धांतों पर प्रशिक्षण में भाग लिया।
- 6 से 9 नवंबर, 2019 तक सीएयू, सेलेश, आइजोल, मिजोरम, भारत में एक स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण के लिए पशु चिकित्सा पैथोलॉजी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
- डॉ. सुनील कुमार
- शूकर, रानी पर ICAR- NRC में 23 मार्च, 2019 को शूकर जैव सुरक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया
- 20-23 फरवरी, 2019 से IARI, नई दिल्ली में कृषि विज्ञान कांग्रेस में भाग लिया
- IASST, Ghy में 1-2 फरवरी, 2019 से होस्ट माइक्रोब इंटरैक्शन पर कार्यशाला सह सम्मेलन में भाग लिया।
- सीवीसी, एएयू, खानापारा में 27-28 फरवरी, 2019 से अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया
- गुवाहाटी, गुवाहाटी में आईसीएआर-एनआरसी में 23 मार्च, 2019 को आईपीआर और जैव विविधता कानूनों पर कार्यशाला में भाग लिया
- 18 जनवरी, 2019 को उत्तर पूर्व के लिए खूंटी विकास योजना पर राष्ट्रीय संचालन समिति की बैठक में भाग लिया, शूकर, रानी पर ICAR-NRC
- 1 अक्टूबर, 2019 को ABAR -Orientation वर्कशॉप में भाग लिया शूकर, रानी पर ढुङ्गुङ्गु हङ्गुङ्गु में
- Agriinnovate India Ltd. द्वारा प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण / लाइसेंसिंग पर एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यशाला, दिसम्बर 16, 2019 को शूकर, गुवाहाटी, असम में ICAR-NRC में भाग लिया।
- असम लाइव स्टॉक एंड पोल्ट्री कॉरपोरेशन, एचवीडी, सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पशुधन और पोल्ट्री शो 2019 में भाग लिया। असम के 07-10 / 11/2019 से C.V.Sc., A.A.U., खानापारा में।
- किसान की आय दोगुनी करने के लिए आधुनिक प्रजनन तकनीकों के माध्यम से पशुधन प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए ISSAR और अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के ISSAR और अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के 35 वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया VCRI, नमकल, TANANAS- 637 002 18-20 दिसंबर, 2019 से।
- 19 दिसंबर को, 2019, 2019 को NCRI, नमकल, TANUVAS- 637 002 में आय आय दोगुनी करने के लिए आधुनिक प्रजनन तकनीकों के माध्यम से पशुधन प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए ढुङ्गुङ्गु और अंतराष्ट्रीय संभावनाओं पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में आयोजित 'लेखन वैज्ञानिक लेख' पर कार्यशाला में भाग लिया।।
- 29 अप्रैल, 2019 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी में आयोजित 'NECBH-DBT वित्त पोषित परियोजनाओं' पर कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. जया

- 16-12-2019 को शूकर, गुवाहाटी, असम में आईसीएआर-एनआरसी पर एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण / लाइसेंसिंग पर एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. ए.आर. साहू

- 23 मार्च, 2019 को 'एनईआर में शूकरों के उभरते संक्रामक रोगों के प्रभावी प्रबंधन के लिए जैव-सुरक्षा' पर राष्ट्रीय कार्यशाला आईसीएआर-राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र गुवाहाटी, असम में आयोजित की गई।

- तटीय कृषि एक्सपो 2019 2-4 मार्च 2019 के दौरान आईसीएआर-केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोवा में आयोजित किया गया।
- व्यावसायिक लगाव प्रशिक्षण: ICAR-CCARI, गोवा 12-11-2018 से 11-02-2019 के दौरान।

डॉ. सतीश कुमार

- शूकर, गुवाहाटी, असम में ICAR-NRC पर 01-10-2019 को एग्रीबिजनेस ऊष्मायन की ओरिएंटेशन कार्यशाला में एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।
- कॉलेज ऑफ़ वेटेरनरी साइंस, खानापारा, असम कृषि विश्वविद्यालय, गुवाहाटी में 07-10, नवंबर, 2019 के दौरान आयोजित राष्ट्रीय पशुधन और पोल्ट्री शो में भाग लिया।
- 16-12-2019 को शूकर, गुवाहाटी, असम में आईसीएआर-एनआरसी में एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण / लाइसेंसिंग पर एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. मिशा माधवन एम

- शूकर, रानी पर आईसीएआर-एनआरसी में 01-10-2019 को एबीआई-ओरिएंटेशन कार्यशाला में भाग लिया
- पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग और असम पशुधन और कुक्कुट निगम के तत्वावधान में 7 से 10 नवंबर, 2019 को खानापारा के कॉलेज ऑफ़ वेटेरनरी साइंस में आयोजित राष्ट्रीय पशुधन और पोल्ट्री शो 2019 में भाग लिया।
- 28.06.2019 को ICAR- NRC पर शूकर, रानी पर 'अफ्रीकी शूकर बुखार: इसकी रोकथाम और नियंत्रण के लिए उपाय' पर मंथन सत्र में भाग लिया
- 16.12.2019 को ICAR- NRC पर शूकर, रानी पर प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण / लाइसेंसिंग ऑन सेंसिटाइजेशन वर्कशॉप ऑन एग्रीनोवेट इंडिया लि।
- 20.11.19 को शूकर, रानी पर आईसीएआर-एनआरसी, कामरूप जिले में सर्जनपारा गाँव में आयोजित 'साइलेज मेकिंग परब विधि प्रदर्शन' में भाग लिया।

डॉ. अजय कुमार

- कॉलेज ऑफ़ वेटेरनरी साइंस प्लेग्राउंड, खानापारा, गुवाहाटी में 7/11/2019 से 10/11/2019 तक आयोजित नेशनल लिवेस्टॉक एंड पॉलीट्री शो -2019 का आयोजन असम सरकार के सहयोग से कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय। पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग। शूकर, गुवाहाटी, असम में ICAR-NRC पर 01-10
- 2019 को एग्रीबिजनेस ऊष्मायन की ओरिएंटेशन कार्यशाला में एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया। 16-12-2019 को शूकर, गुवाहाटी, असम में आईसीएआर-एनआरसी में एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रौद्योगिकी
- व्यावसायीकरण / लाइसेंसिंग पर एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. यू.के. भट्टाचार्य

- नॉर्थ ईस्ट इंडिया में फॉल आर्मी वर्म (FAW) की प्रबंधन रणनीतियों के लिए ड्यूक्र- इंफाल, मणिपुर द्वारा आयोजित एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम और ICAR-National Bureau of Agriculture Insect Resources (ICAR-NBAIR) द्वारा वित्तपोषित। आईसीएआर में राष्ट्रीय कीट नियंत्रण संसाधन (आईसीएआर-एनबीआईआर) हेबबाल, बेंगलुरु, 56624, कर्नाटक में आयोजित और प्रशिक्षण से 'एनईएच क्षेत्र में प्रमुख कीटों के प्रबंधन के लिए जैविक नियंत्रण और संगत कीट प्रबंधन मॉड्यूल' प्रशिक्षण का हकदार था। 16.09.2019 से 20.09.2019 तक। अनुसंधान कार्यक्रम और परियोजनाएं

RESEARCH PROGRAMMES & PROJECTS

इंस्टीट्यूट ऑफ रिजल्ट परियोजनाओं की सूची

SN	परियोजना का शीर्षक	मुख्य जाँचकर्ता
फलैगशिप कार्यक्रम		
1	शूकरों में कृत्रिम गर्भाधान	डॉ. सुनील कुमार
कार्यक्रम - 1: स्वदेशी शूकरों का संरक्षण और आनुवंशिक सुधार		
2	उपयुक्त क्रॉसब्रेड शूकर का विकास (परियोजना कोड: IXX01640)	डॉ. एस.बानिक
3	उत्तर पूर्व भारत के देशी शूकरों के शूकर माइटोकॉन्ड्रियल जीनोम अनुक्रमों का फ्लोजेनेटिक विश्लेषण (परियोजना कोड: IXXXX503)	डॉ. पी. जे. दास
4	शूकर की उर्वरता के लिए शूकर MSY (Y गुणसूत्र के पुरुष-विशिष्ट क्षेत्र) जीन की विशेषता और अभिव्यक्ति प्रोफाइलिंग। (परियोजना कोड: IXX14211)	डॉ. पी. जे. दास
5	रानी पार की पीढ़ी-वार आनुवंशिक मूल्यांकन (परियोजना कोड: IXX14634)	डॉ. एस.बानिक
6	शूकरों में प्रजनन और उत्पादन लक्षणों के साथ विभिन्न उम्मीदवार जीनों और उनके सहयोग में आनुवंशिक भिन्नता की खोज करना	डॉ. सतीश कुमार
7	घोसरू और डूम शूकरों में उत्पादन और प्रजनन लक्षणों से जुड़े बहुरूपताओं का पता लगाने के लिए माइक्रोसैटेलाइटिंग रूपरेखा	डॉ. ए.आर. साहू / डॉ. सतीश कुमार
कार्यक्रम - 2: शारीरिक और प्रजनन दक्षता का अनुकूलन सहित प्रजनन क्षमता का शीघ्र पता लगाने के लिए मार्करों की पहचान करना		
8	शूकर में शूकर वीर्य क्रायोप्रेजर्वेशन के लिए प्रोटोकॉल का विकास	डॉ. सुनील कुमार
9	शूकरों में प्रारंभिक प्रजनन मार्करों का विकास (परियोजना कोड: IXX12418)	डॉ. एन. एच. मोहन
10	प्री-प्यूबर्टल गिल्ड्स और एनेस्थेस शूकरों (प्रोजेक्ट कोड: IXX12500) में चक्रीय डिम्बग्रंथि गतिविधि के प्रेरण के लिए हार्मोनल हस्तक्षेप	डॉ. सुनील कुमार
12	शूकरों में स्थानीय रूप से उत्पादित इम्युनोजेनिक और एंजियोजेनिक वृद्धि कारकों द्वारा डिम्बग्रंथि समारोह का विनियमन।	डॉ. जया
कार्यक्रम - 3: विशेष रूप से क्षेत्र की परिस्थितियों में, उत्पादन को बढ़ाने के लिए उत्पादन प्रणाली, खिला प्रथाओं और उनके अनुकूलन की विशेषता		
13	पिग फीडिंग सिस्टम में पोषक तत्वों को सीमित करने की पहचान और रणनीतिक पूरक (परियोजना कोड: IXX12839)	डॉ. के. बर्मन
14	सब्जी अपशिष्ट / फलों के अपशिष्ट पर आधारित शूकर का विकास (परियोजना कोड: IXX-14389)	डॉ. के. बर्मन

कार्यक्रम -4: निरंतर निगरानी, शूकर रोगों की रिकॉर्डिंग और रोग प्रबंधन प्रोटोकॉल का विकास

15	साल्मोनेला, कैम्पिलोबैक्टर और स्टैफिलोकोकस प्रजातियों (परियोजना कोड: IXX11238) के विशेष संदर्भ में पोरसीन मूल के जूनोटिक रोगजनकों पर अध्ययन	डॉ. एस राजखोवा
16	शूकरों के महत्वपूर्ण जीवाणुरोधी जीवाणु रोगजनकों के तेजी से पता लगाने के लिए लूप की मध्यस्थता वाले इज़ोटेर्मल प्रवर्धन (LAMP) परख का विकास	डॉ. एस राजखोवा
17	गैस्ट्रेटिस के लिए विशेष संदर्भ के साथ शूकरों में हेलिकोबैक्टर संक्रमण का प्रसार अध्ययन (परियोजना कोड: IXX12312)	डॉ. सीमा रानी पेगु
18	टाइफोनियम ट्राइबोबूटम स्कूटी ट्यूबर की रोगाणुरोधी प्रभावकारिता का मूल्यांकन, शूकरों में श्वसन पथ के संक्रमण से संक्रमित महत्वपूर्ण जीवाणु रोगजनकों के खिलाफ	डॉ. सीमा रानी पेगु
19	शूकरों की स्वास्थ्य स्थिति की जांच के लिए आईआरटी छवि आधारित प्रणाली का विकास।	डॉ. पी. जे. दास
20	पोर्सिन प्रजनन और श्वसन सिंड्रोम वायरस (PRRS) के न्यूक्लियोकैपिड / मैट्रिक्स / GPz / गैर-संरचनात्मक प्रोटीन 7 (nsp7) की नैदानिक क्षमता की अभिव्यक्ति, लक्षण वर्णन और मूल्यांकन	डॉ. अजय कुमार

कार्यक्रम -5: संहार के बाद के उत्पादों के प्रसंस्करण, प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन के प्रौद्योगिकी उन्नयन

21	ताजा और प्रसंस्कृत पोर्क उत्पादों की प्रजातियों के प्रमाणीकरण के लिए किट का विकास (परियोजना कोड: IXX12375)	डॉ. पी. जे. दास
22	कार्यात्मक उत्पादों की सेवा के लिए तैयार पोर्क का विकास (IXX13650)	डॉ. आर. थॉमस
23	घुंघरू और उसके पार के शवों के लिए ग्रेडिंग प्रणाली का विकास	डॉ. आर. थॉमस

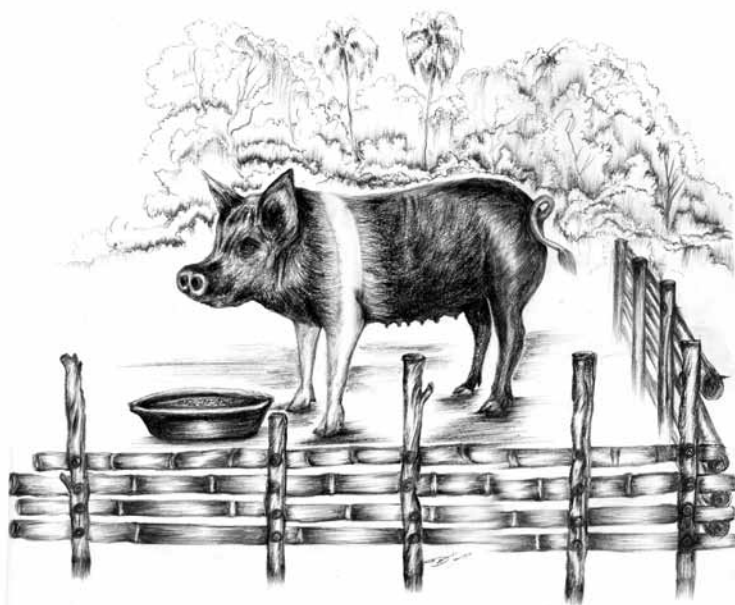
कार्यक्रम -6: संस्थान-हितधारक लिंकेज और कौशल विकास

24	टीएसपी के तहत आईवीएलपी कार्यक्रम	डॉ. के. बर्मन
25	असम में छोटे धारकों के बीच वैज्ञानिक शूकर उत्पादन प्रथाओं को अपनाने को बढ़ावा देना	डॉ. मिशा. माधवन एम.

पूरी तरह से सुरक्षित परिणाम परियोजनाओं की सूची

SN	परियोजना का नाम	मुख्य जाँचकर्ता	निधीयन एजेंसी
1.	गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला की स्थापना	डॉ. आर. थॉमस	MoFPI, सरकार। भारत की
2.	उन्नत पशु रोग निदान और प्रबंधन संघ (ADMaC)	डॉ. एस राजखोवा	डीबीटी, सरकार। भारत की
3.	कृषि पशुओं में नवजात मृत्यु दर पर अखिल भारतीय नेटवर्क कार्यक्रम (एआईएनपी-एनएम)	डॉ. एस राजखोवा	भा.कृ.अनु.प.
4.	अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना शूकर पर: केवीके, शूकर केंद्र पर आईसीएआर-एनआरसी	डॉ. एस.बानिक	भा.कृ.अनु.प.
5.	हिमालयन कृषि को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन	डॉ. के. बर्मन	एमओईएफ, सरकार भारत की
6.	शूकरों और बकरियों के व्यक्तियों, नस्लों और रोगों की पहचान के लिए छवि आधारित प्रणाली	डॉ. एस.बानिक	ITRA, भारत सरकार
7.	ई-वराह: उत्तर पूर्वी भारत में सुरक्षित पोर्क उत्पादन के लिए सूचना प्रणाली	डॉ. पी. जे. दास	ITRA, भारत सरकार
8.	असम में शूकर और मच्छरों में जापानी एन्सेफलाइटिस वायरस की आणविक महामारी विज्ञान	डॉ. सीमा रानी पेगु	डीबीटी, सरकार भारत की
9.	पोर्क के माइक्रोबायोलॉजिकल क्वालिटी असेसमेंट के लिए रैपिड लेबोरेटरी और फील्ड बेस्ड एसेस का विकास	डॉ. एस. राजखोवा	डीबीटी, सरकार भारत की
10.	शूकरों में गर्मी के तनाव के दौरान शरीरिक प्रतिक्रियाओं का नियमन करने वाला माइक्रोआरएनए	डॉ. एन. एच. मोहन	आईसीएआर-एलबीएस पुरस्कार परियोजना
11.	बायोमार्कर के माध्यम से थर्मो-सहिष्णु शूकर का विकास चयन में सहायता की	डॉ. एन. एच. मोहन	आईसीएआर-नेशनल फेलो प्रोजेक्ट
12.	भारत में पोर्क आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े खतरों के फार्म-टू-फोर्क जोखिम की रूपरेखा, खतरों पर एक डेटाबेस विकसित करना और अद्वितीय शूकर पालन / प्रसंस्करण प्रथाओं से जुड़ा हुआ है, जो उद्योग के लिए मार्गदर्शन के रूप में खतरों को कम करने और प्रभावी जोखिम संचार रणनीतियों के लिए खाद्य सुरक्षा हस्तक्षेप विकसित कर रहा है।	डॉ. आर. थॉमस	आईसीएआर-एलबीएस पुरस्कार परियोजना
13.	सतत पशुधन उत्पादन के लिए एनईएच क्षेत्र में मक्का उत्पादन	डॉ. के. बर्मन	भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान

14.	विश्व बैंक द्वारा असम एग्रीबिजनेस एंड रूरल ट्रांसफॉर्मेशन प्रॉजेक्ट (एपीसी) के तहत असम में पिग्गी मूल्य श्रृंखला सुधार के लिए तकनीकी सलाहकार सेवाएं	डॉ. आर. थॉमस	अपारट, सरकार असम का
15	किसान बायोटेक हब	डॉ. एस राजखोवा	डी बी टी
16	स्थायी पशुधन उत्पादन के लिए मक्का उत्पादन	डॉ. के. बर्मन	आई आई एम, आर, लुधियाना
17	शूकर वीर्य से जैव-रासायनिक लक्षण वर्णन और शूकरों में जैव-उत्तेजना के लिए इसका अनुप्रयोग	डॉ. सुनील कुमार	डी बी टी
18	आदिवासी महिलाओं (असम, मेघालय और नागालैंड) की स्थायी आजीविका के लिए उत्तर पूर्व भारत में पोर्क विपणन श्रृंखलाएं)	डॉ. मिशा माधवन एम	एन ए एस एफ



कार्मिक

कार्मिक

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र

अनुसंधान प्रबंधन

डा. स्वराज राजखोवा, पी एच डी, निदेशक (कार्यकारी) व परियोजना समन्वयक

वैज्ञानिक कर्मचारी

- डॉ. बीसी दास, पीएचडी, प्रमुख वैज्ञानिक (शारीरिक क्रिया)
डॉ. शान्तनु बनिक, पीएचडी, प्रमुख वैज्ञानिक (पशु आनुवंशिकी और प्रजनन)
डॉ. केशव बर्मन, पीएचडी, प्रधान वैज्ञानिक (पशु पोषण)
डॉ. मोहन एन. एच., पीएचडी, प्रधान वैज्ञानिक (शारीरिक क्रिया)
डॉ. रफीकुल इस्लाम, पीएचडी, प्रमुख वैज्ञानिक (पशु प्रजनन और स्त्री रोग)
डॉ. प्रणव ज्योति दास, पीएचडी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पशु आनुवंशिकी और प्रजनन)
डॉ. राजेंद्रन थॉमस, पीएचडी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी)
डॉ. सीमा रानी पेगु, पीएचडी, सीनियर साइंटिस्ट (पशु चिकित्सा पैथोलॉजी)
डॉ. सौविक पॉल, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु चिकित्सा परजीवी विज्ञान)
डॉ. जुवार डोले, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु जैव प्रौद्योगिकी)
डॉ. राजीव देब, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु जैव प्रौद्योगिकी)
डॉ. कल्याण डे, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशुधन उत्पादन और प्रबंधन)
डॉ. सुनील कुमार, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु प्रजनन और स्त्री रोग)
डॉ. अमिय रंजन साहू, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु आनुवंशिकी और प्रजनन)
डॉ. सतीश कुमार, एमवीएससी, वैज्ञानिक (पशु आनुवंशिकी और प्रजनन)
डॉ. जया, एमवीएससी, वैज्ञानिक (शारीरिक क्रिया)
डॉ. मिशा माधवन एम., पीएचडी, वैज्ञानिक (कृषि विस्तार)
डॉ. अजय कुमार यादव, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु चिकित्सा माइक्रोबायोलॉजी)

तकनीकी स्टाफ

- डॉ अनिल कुमार दास, वरिष्ठ तकनीकी सहायक
डॉ गगन भुइयां, वरिष्ठ तकनीकी सहायक
डॉ राजीव कुमार दास, वरिष्ठ तकनीकी सहायक
श्री सिबा चन्द्र डेका, वरिष्ठ तकनीशियन
श्री कैलाश चौधरी, वरिष्ठ तकनीशियन
श्री राणा प्रताप काकती, वरिष्ठ चिकित्सक

प्रशासनिक स्टाफ

श्री पी. के नायक, एसिस्ट. वित्त और लेखा अधिकारी
श्री. उत्तम प्रकाश, सहायक प्रशासनिक अधिकारी
श्रीमती जोनली नाथ, अपर डिवीजन क्लर्क
सुश्री हीरा मोनी ठाकुरिया, जूनियर आशुलिपिक सह कंप्यूटर ऑपरेटर
श्री रतुल बैश्य, लोअर डिवीजन क्लर्क

सहायक कर्मचारी

श्री नरेन चंद्र डेका (कुशल सहायक कर्मचारी)

कृषि विज्ञान केंद्र, दुधौनी

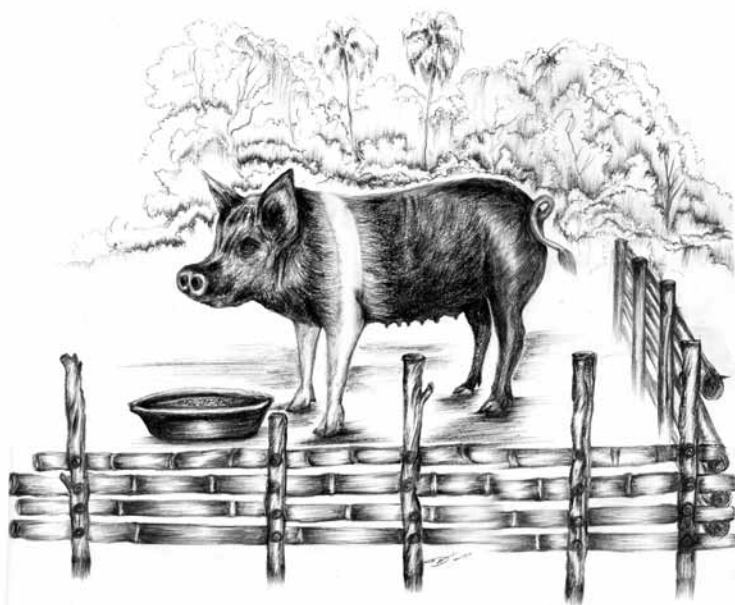
डॉ. हितू चौधरी, पीएचडी, एसीटीओ (पशु विज्ञान) और आई / सी कार्यक्रम समन्वयक
डॉ. बिस्वजीत डे, पीएचडी, एसीटीओ (बागवानी)
डॉ. उत्पल कुमार भट्टाचार्य, पीएचडी, एसीटीओ (पादप संरक्षण)
डॉ. हरि चरण कलिता, पीएचडी, एसीटीओ (एग्रोनॉमी)
श्रीमती पोली सैकिया, एसएमएस (गृह विज्ञान)
ए. बेंजामिन कामन, कार्यक्रम सहायक (मृदा और जल संरक्षण इंजीनियरिंग)
श्रीमती मिनाक्षी बराह कामन, कार्यक्रम सहायक (गृह विज्ञान)
श्रीमती मौसमी भुयान, कार्यक्रम सहायक (बागवानी)
सुश्री कबाती राभा (जूनियर आशुलिपिक)
श्री मृणाल बरुआ, वरिष्ठ तकनीशियन (ड्राइवर)
श्री जयंत चौधरी, तकनीशियन (ट्रेक्टर चालक सह मैकेनिक)
श्री धरूबा लखन राभा (कुशल सहायक कर्मचारी)
श्री जीतमणि कलिता (कुशल सहायक कर्मचारी)

नई जॉइनिंग

डॉ. बीसी दास, पीएचडी, प्रमुख वैज्ञानिक (शारीरिक क्रिया)
डॉ. रफीकुल इस्लाम, पीएचडी, प्रमुख वैज्ञानिक (पशु प्रजनन और स्त्री रोग)
डॉ. सौविक पॉल, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु चिकित्सा परजीवी विज्ञान)
डॉ. जुवार डौले, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु जैव प्रौद्योगिकी)
डॉ. राजीब देब, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु जैव प्रौद्योगिकी)
डॉ. कल्याण डे, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशुधन उत्पादन और प्रबंधन)

स्थानांतरण

डॉ. अमिया रंजन साहू, पीएचडी, वैज्ञानिक (पशु आनुवंशिकी और प्रजनन)



प्रकाशन

प्रकाशन

शोध पत्र

- बेली एम.पी., अविता एफ., दास पी. जे., कुत्ज़लर एम.ए. और राउडसेप टी. (2019)। एक ऑटोसोमल ट्रांसलोकेशन 73, XY, t (12; 20) (qvv; qvv) टेरेटोजोस्पर्मिया के साथ एक इनफर्टाइल मेल लामा (लामा ग्लामा) में। जेनेटिक्स में फ्रंटियर्स। doi: 10.3389 / fgene.2019.00344।
- भट्ट, एम।, रजक, के.के., चक्रवर्ती, एस., यादव, ए. के., कुमार, ए., गुप्ता, वी., चंदर, वी., मथेश, के., चंद्रमोहन, एस., शर्मा, ए.के. और महेंद्रन, के। (2019)। भारत में घरेलू कुत्तों के बीच घूम रहे कैनाइन डिस्टेम्पर वायरस के एक नए आनुवंशिक रूप से अलग वंश को डिकैफरिंग करते हुए हेमग्लुटिन जीन का फाइलोजेनेटिक विश्लेषण। ट्रांसबाउंड्री और उभरती हुई बीमारियाँ, 66 (3), पीपी .252-1267।
- बिस्वास, के. के., पालचौधरी, एस., चक्रवर्ती, पी., भट्टाचार्य, यू.के. साइट्स ट्रिस्टेजा वायरस के कोडन उपयोग पूर्वाग्रह विश्लेषण: साइट्स के मेजबान के लिए उच्च कोडन अनुकूलन। वायरस 11. 331-347। दोई: 10.3390 / 111040331।
- चक्रवर्ती, एस., कार्तिक, के. और बनिक, एस. (2020)। नस्ल की पहचान के लिए एक बायोमीट्रिक के रूप में एक शूकर के थूथन पर जांच। इंटेलेजेंट सिस्टम और कम्प्यूटिंग 1022 में प्रगति। कंप्यूटर विज्ञान एंड इमेज प्रोसेसिंग (CPIV 18), बेंगलोर, भारत, 2017, pp.71-83.doi: 10.1007 / 978-981-32-9088-4-7 पर 3 अंतराष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही। URL- <https://link.springer.com/chapter/10.1007%2F978-981-32-9088-4-7>
- दास बी., दास, ए., फुकन ए., ज़मान जी., अज़ीज़ ए., खोम्बा टी. सी., दास पी. जे. और भारती के. (2019)। उत्तर पूर्व भारत के चार स्वदेशी बत्ख आबादी के आनुवंशिक विश्लेषण ने माइक्रोसेटेलाइट मार्करों का उपयोग किया। इंडियन जर्नल ऑफ एनिमल साइंसेज 89 (2): 209-211।
- दास पी.पी., कृष्णन जी।, डेली जे।, बिस्वास टी.के., पॉल विजय।, चक्रवर्ती पी।, देब एस.एम. और दास पी। जे। (2019)। MSY की पहचान और अभिव्यक्ति प्रोफाइलिंग (वाई क्रोमोसोम का पुरुष-विशिष्ट क्षेत्र) बुल फर्टिलिटी के लिए याक का जीन। जर्नल ऑफ जेनेटिक्स। <https://222.ias.ac.in/public/Resources/General/jgen/JGEN-D-18-00529.pdf>।
- दास पी.पी., कृष्णन जी., डेली जे., भट्टाचार्य डी, देब एसएम, चक्रवर्ती पी और दास पी जे (2019)। जीनोमिक दृष्टिकोण से याक में सेक्स-विशिष्ट मार्कर के रूप में अमेलोजिन जीन की स्थापना। जर्नल ऑफ जेनेटिक्स। DOI: 10.1007 / s12041-019-1061-8- यदि: 0.672।
- मीटी पी., अविषेक पी, साई कुमार, बॉस्को जे. जया बी और मिहिर सरकार। (2019)। VEGF A और FGF 2 की सेल वाइबिलिटी और एपोप्टोसिस में संवर्धित बुबलिन ल्यूटल सेल में भूमिका Int.J.Curr.Microbiol.App.Sci- 8 (11): 1238-1244। doi-<https://doi.org/10.20546/ijcmas.2019.811.145>
- मोहन एन.एच., अंकित नाथ., आर. थॉमस., एस. कुमार., एस. बानिक., ए. के. डी. एस., आर.के.दास और डी. के. सरमा. (2019)। शूकरों में प्लाज्मा, लार, मूत्र और मल के कोर्टिसोल के स्तर के बीच संबंध। इंडियन जर्नल ऑफ एनिमल साइंसेज (प्रकाशन के लिए स्वीकृत, प्रेस में)।
- सुलभ, एस।, पाणिग्रही, एम। वार्ष्णेय, आर। गुप्ता, जे.पी., कुमार सतीश, वर्मा, ए।, कुमार, ए।, आसफ, वी। एम।, कुमार, पी। और भूषण, बी। (2019)। मास्टिटिस के जवाब में क्रॉसब्रेड मवेशी, थारपारकर मवेशी और मुरा भैंस की सेल संस्कृतियों में इंटरलेयुकिन -10 अभिव्यक्ति का इन-विट्रो विश्लेषण, स्टैफिलोकोकस ऑरियस और एस्केरिचो कोली से प्राप्त एंटीजन का कारण बनता है। जैविक ताल अनुसंधान, पीपी .1-10।
- थॉमस आर., बनिक एस., बर्मन, के., मोहन, एन.एच., सरमा डी.के. (2019)। घुंघरू शूकर के शव में द्विपक्षीय समरूपता और शव डेटा की सटीकता की स्थापना। इंडियन जर्नल ऑफ एनिमल रिसर्च। 53 (4) 2019: 496-499। DOI: 10.18,805 / ijar.B-3525।

यादव, एके, रजक, केके, भट्ट, एम., कुमार, ए., चक्रवर्ती, एस., संकर, एम., मुथुचेलवन, डी., कुमार, आर., खुल्लापे, एस., सिंह, आरपी और सिंह, आरके, 2019. होस्ट रेंज विस्तार में मोरबिलवायरस रिसेप्टर्स का तुलनात्मक अनुक्रम विश्लेषण और इसका निहितार्थ। माइक्रोबायोलॉजी की कनाडाई पत्रिका, 65 (11), पीपी.783-794।

तकनीकी / लोकप्रिय लेख

कुमार ए., सिंह ए. के., सरोज एस., माधवन एम. एम. और जोशी पी. के। (2019)। फार्म हाउसों के आर्थिक कल्याण पर भारत के कृषि विज्ञान केंद्रों (कृषि विज्ञान केंद्र) का प्रभाव: एक राष्ट्रीय सरकार के सर्वेक्षण से साक्ष्य। IFPRI चर्चा पत्र 1832। वाशिंगटन, डीसी: अंतराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (IFPRI)। <http://ebrary.ifpri.org/cdm/ref/collection/pvz|x}collw/id/133226>

राजखोवा, एस., पेगू एस.आर., बानिक, एस.एन. सरमा, डी.के. (2019)। किसानों की आय बढ़ाने के लिए खेती करें। में: किसानों की आय दोगुनी करने के लिए In पशु कृषि पर असम कृषि विश्वविद्यालय और अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन: सीवीएससी, एएयू, खानापारा में किसानों की आय, प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति विकल्प' (27-28 फरवरी, 2019)। पीपी-37।

पुस्तकें

बनिक, एस., बर्मन, के. दास, पी. जे., कुमार, एस. और राजखोवा, एस. (2019)। शूकर किसानों का मैनुअल। आईसीएआर-शूकर, रानी, गुवाहाटी, असम (77 पृष्ठ) पर राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र।

कुमार, एस., इस्लाम, आर, बनिक, दास, पी. जे., बर्मन, के., पेगू एस. आर., बनिक, एस. और राजखोवा, एस. (2019)। शूकर में कृत्रिम गर्भाधान। शूकर, रानी गुवाहाटी पर ICAR-NRC।

पुस्तक के अध्याय

Sahu.A.R. और दास पी. जे. (2019)। पोल्ट्री सेक्टर में आणविक तकनीकों और ऑटोमेशन में उन्नति। पोल्ट्री उत्पादन में हालिया रुझान तिवारी एस. पी. एस. दीनानी ओ.पी., IPSACON-2019 द्वारा संपादित। अध्याय 29. पीपी: 351-364।

तकनीकी मैनुअल / बुलेटिन / रिपोर्ट

बनिक, एस., बर्मन, के. और राजखोवा, एस. (2019)। खूंटी पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना- बारहवीं योजना परिप्रेक्ष्य और उपलब्धियां (पृष्ठ 25)।

बनिक, एस., मोहन, एन.एच. बर्मन, के. दास, पी. जे. और कुमार, एस. (2019)। वार्षिक रिपोर्ट ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट एंड मेगा सीड प्रोजेक्ट ऑन पिग (2018-19), आईसीएआर एनआरसी ऑन पिग, गुवाहाटी (पृष्ठ-120)।

बनिक, एस., के. बर्मन आर. थॉमस, सुनील कुमार और एस. राजखोवा (2019)। रानी- गुणक के लिए एक नया क्रॉसब्रेड शूकर। शूकर पर आईसीएआर-एनआरसी।

थॉमस, आर., एस. बनिक, के. बर्मन और एस. राजखोवा (2019)। मूल्य वर्धित पोर्क उत्पाद: मांस-इंग स्वाद और गुणवत्ता। शूकर पर आईसीएआर-एनआरसी।

पुस्तिकाएं

सुनील कुमार, रफीकुल इस्लाम, पी. जे. दास, के. बर्मन, एस. आर. पेगू एस. बनिक और एस. राजखोवा। (2019)। कृत्रिम गर्भाधान को अपनाने से शूकर उत्पादन में आदिवासी किसानों को मजबूत करने पर सफलता की कहानी।

सम्मेलन / संगोष्ठी / सेमिनार / अन्य मंचों में लीड पेपर / प्रस्तुतियाँ

- दास पी. जे. (2019)। ई-वराह: उत्तर पूर्वी भारत में सुरक्षित पोर्क उत्पादन के लिए सूचना प्रणाली। आईटीआरए-स्टार्टअप, कार्यशाला और प्रौद्योगिकी शोकेस आईटीआरए, नई दिल्ली। सूचना प्रौद्योगिकी अनुसंधान अकादमी (ITRA), सरकार द्वारा आयोजित। भारत के संग्रहालय में, सरोवर पोर्टिको, नई दिल्ली में 21 से 23 जुलाई।
- मोहन एन.एच., जुरीडेका, प्रज्वलिता पाठक, अंकित नाथ, बरनाली तालुकदार और डी.के.सर्मा। (2019)। microRNA मध्यस्थता संकेतन संकेत के दौरान गर्मी सदमे प्रतिक्रिया porcine fibroblasts में। सोसायटी की 88 वीं वार्षिक बैठक और 'जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति' पर एक सम्मेलन BARC, मुंबई No1.1-3।
- मोहन एन.एच., (2019)। शूकरों में थर्मल तनाव के प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ। 'किसानों की आय के लिए पशु कृषि पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी - प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति की राय' 27-28 फरवरी, 2019 को। पशु चिकित्सा विज्ञान, असम कृषि विश्वविद्यालय, खानापारा, गुवाहाटी, असम द्वारा आयोजित।
- सुनील कुमार, ए. कुमारसन, एम.के. तमूली, श्रीला एल, शिवानी चिल्लर, समिक्षा नायक, एस.आर. Pegu, टी. के. मोहंती, एस.एस. लठवाल, टी. के. दत्ता, के. बर्मन, एस. बनिक और एस.राजखोवा। (2019)। शुक्राणुजनित स्टेम सेल प्रत्यारोपण और एपॉस्टेफे बसफैन ने गोजातीय और शूकर पुरुषों में वृषण पुनर्नवीनीकरण प्रेरित किया। 18-20 दिसंबर, 2019 से VCRI, नमक्कल, TANUVAS- 637 002 में VCRI, नमक्कल, TANUVAS- 637 002 पर किसानों की आय को दोगुना करने के लिए आधुनिक प्रजनन तकनीकों के माध्यम से पशुधन प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के लिए ड्यूस्क और वैश्विक संभावनाओं पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के 35 वें सम्मेलन में।
- सुनील कुमार, एन.एच. मोहन और के.के. बरुआ। (2019)। पीएमएसजी और एचसीजी के संयोजन का उपयोग गिल्ट और बोन में प्रजनन क्षमता में सुधार के लिए। 18-20 दिसंबर, 2019 से VCRI, नमक्कल, TANUVAS- 637 002 पर किसान आय को दोगुना करने के लिए आधुनिक प्रजनन तकनीकों के माध्यम से पशुधन प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए ड्यूस्क और वैश्विक संभावनाओं पर ड्यूस्क और अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के 35 वें सम्मेलन का आयोजन। Pp25।

वैज्ञानिक सार

- बनिक, एस., बर्मन, के., कुमार, एस., दास, पी. जे., थॉमस, आर. और राजखोवा, एस. (2019)। रानी: किसानों की आय दोगुनी करने के लिए एक क्रॉसब्रेड शूकर किस्म। में: असम कृषि विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए द्विशह पशु कृषि पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी: सीवीएससी, एएयू, खानापारा में (27-28 फरवरी, 2019) प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति विकल्प। सार सं.: ओपी -27। पीपी-68।
- बर्मन, के., राजखो, एस., बनिक, एस., थॉमस, आर., पेगू, एस. आर., हजारिका, आर। और रहमान, जे.आई. (2019)। उत्पादक शूकरों की रानी नस्ल (हैम्पशायर एक्स घुंघरू) में उत्पादन प्रदर्शन पर आधारित वनस्पति अपशिष्ट को खिलाने का प्रभाव। पशु पोषण विभाग, पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय पशु एवं मत्स्य विज्ञान विभाग, कोलकाता में पशु पोषण सोसायटी के सहयोग से 'पशु लाभ और स्वच्छ पशु उत्पादन में सुधार के लिए पोषण संबंधी रणनीतियाँ' पर पशु पोषण 2019 पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन का संकलन। (1 (-19 दिसंबर, 2019)। पीपी-117।
- भाग्य विजयन और मीशा माधवन। (2019)। कृषि में नारीकरण पर केस स्टडी। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में 17-19 दिसंबर, 2019 से 'ग्रामीण भारत के बदलते लैंडस्केप' पर 27 वें वार्षिक कांफ्रेंस एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स रिसर्च एसोसिएशन (इंडिया) के व्याख्यान के संकलन में। पीपी। 202
- चौधरी, एम., परबीन, एस., पेगू, एस. आर., बर्मन, के. बी. एस. और दास, पी. जे. (2019)। फोटोगैमिक, जीवाणुरोधी और शूकर के लिए मुगा रेशम कीट के मेजबान पौधों के जीवाणुरोधी गुण। पशु पोषण 2019 पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन (INCAN 2019)। फार्म प्रॉफिटेबिलिटी और स्वच्छ पशु उत्पादन में सुधार के लिए पोषण संबंधी रणनीतियाँ, दिसंबर 17-19, 2019, पशु पोषण विभाग, पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, द्वारा आयोजित। सार की पुस्तक, INCAN-2019.Pp.243

कौशिक, पी., बनिक, एस., नस्कर, एस., बर्मन, के. और दास, ए. (2019)। प्री-वीनिंग कूड़े और शूकरों के विकास के प्रदर्शन पर विभिन्न आनुवंशिक और गैर-आनुवंशिक कारकों का प्रभाव। में: किसानों की आय दोगुनी करने के लिए ढुंढ पशु कृषि पर असम कृषि विश्वविद्यालय और अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन: सीवीएससी, एएयू, खानापारा में किसानों की आय, प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति विकल्प '(27-28 फरवरी, 2019)। सार सं.: ओपी -53। पीपी-301।

कुमार, एस., पेगू, एस. आर., बर्मन, के., बनिक, एस., राजखोवा, एस. और सरमा, डी.के. (2019)। पिगलेट्स में नवजात दस्त के उपचार में फाइटोबायोटिक्स और एंटीबायोटिक दवाओं की तुलनात्मक प्रभावकारिता: एक प्रारंभिक अध्ययन। में: असम कृषि विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए for पशु कृषि पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी: सीवीएससी, एएयू, खानापारा में (27-28 फरवरी, 2019) प्रौद्योगिकी, नीति और रणनीति विकल्प। सार सं.: ओपी -23। पीपी-156।

थॉमस, आर., सैकिया, एम., सिंघा, एस., बरुआ, जेड., कलिता, आर. और राजखोवा, एस (2020)। फूड साइंटिस्ट एंड टेक्नोलॉजिस्ट्स (ICFoST) के 27 वें भारतीय सम्मेलन राइजिंग एग्रो-प्रोसेसिंग एंड इंटीग्रेटिंग नॉवल टेक्नोलॉजिस्ट्स फॉर बूस्टिंग ऑर्गेनिक वेलनेस में 27 वें भारतीय सम्मेलन में पेश किए गए कच्चे, प्रसंस्कृत और मिश्रित मीटमिक्स की प्रजाति में शूकर का मांस मिला। तेजपुर विश्वविद्यालय में 30 जनवरी से 1 फरवरी 2020 तक, तेजपुर, असम, भारत। Pp.58।

थॉमस, आर., सैकिया, एम., सिंघा, एस., बरुआ, जेड., कलिता, आर. और राजखोवा, एस (2020)। खाद्य वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविदों (ICFoST) के 27 वें भारतीय सम्मेलन राइजिंग एग्रो-प्रोसेसिंग एंड इंटीग्रेटिंग नॉवल टेक्नोलॉजिस्ट्स ऑन बूस्टिंग ऑर्गेनिक वेलनेस में तेजपुर यूनिवर्सिटीफ्रॉम में आयोजित 30 वें भारतीय सम्मेलन में 'प्रजाति-विशिष्ट मार्करों का उपयोग करके मिलावट की पहचान के लिए एक तेज तरीका' पेश किया गया। जनवरी से 1 फरवरी 2020 तक, तेजपुर, असम, भारत। Pp.58।

थॉमस, आर., सैकिया, एम., सिंघा, एस., बरुआ, जेड., कलिता, आर. और राजखोवा, एस (2020)। खाद्य वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविदों (ICFoST) के 27 वें भारतीय अधिवेशन में ole ole अणु-प्रसंस्करण और समेकित उपन्यास प्रौद्योगिकीविदों के लिए बूस्ट ऑर्गेनिक वेलनेस '' का तेजपुर विश्वविद्यालय में 30 जनवरी से 1 फरवरी तक आयोजित 'आदमियों और मादा शूकरों के मांस को अलग करने' के लिए आणविक साधन है। 2020, तेजपुर, असम, भारत। पीपी। 58।



हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch